स्मृति-सन्दर्भः

श्रीमद्भिः महर्षिभिः प्रणीतः धर्मशास्त्र संग्रहः

THE SMṚTI-SANDARBHA

(A COLLECTION OF DHARMAŚĀSTRAS)

स्मृति-संदर्भ

सप्तम् भाग

विषयानुक्रमणी तथा श्लोकानुक्रमणी

नाग शरण सिंह



नाग प्रकाशक

११ए/यू. ए, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७

This publication has been brought out with the financial assistance from Rashtriya Sanskrit Sansthan New Delhi

If any diffect is found in this book glease return per V. P. P. for Postage expences for exchange of free of cost.

नाग पब्लिशर्स

(१) ११ए/यू. ए. जवाहरनगर, दिल्ली-७

(२) संस्कृत भवन १२, १५ संस्कृत नगर, प्लाट न ३, सेक्टर-१४ रोहिणी नई दिल्ली ८५

(३) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ० प्र०

ISBN 81-7081-263-1

प्रथम संस्करण १९९३

मूल्य :  Rs 25.00/-



श्री नागशरण सिह द्वारा नाग प्रकाशक, जवाहर नगर, दिल्ली के लिए प्रकाशित तथा अमर प्रिंटिंग प्रेस, विजय नगर, दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

मनुस्मृति

१. सृष्टि्युत्पत्ति वर्णनम्

३. स्नातकविवाहकर्म वर्णनम् : ३५

गृहस्थ पञ्चमहायज्ञा : ४१

बलिवैश्यवदेव: : ४३

अतिथि वर्णनम् : ४५

श्राद्धवर्णनम् : ४६

४. गृहस्थाश्रम वर्णनम् : ६१

५. अभक्ष्य वर्णनम् : ८५

भक्ष्याभक्ष्य वर्णनम् : ८९

योऽस्ति यस्य यदा मांसमुभयोः पश्यतान्तरम् ।
एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणैर्विमुच्यते ॥

प्रेत-शुद्धि वर्णनम् : ९०

द्रव्य-शुद्धि वर्णनम् : ९५

शरीर-शुद्धि वर्णनम् : ९७

स्त्री-धर्म वर्णनम् : ९९

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥

६. वानप्रस्थाश्रम वर्णनम् : १०१

पुत्र प्रत्युदितं सद्भिः पूर्वजैश्च महर्षिभिः।
विश्वजन्यमिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत ॥
भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुति द्वैधं तु भर्त्तरि।
आहुरुत्पादकं केचिदपरे क्षेत्रिणं विदुः ॥
क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान्।
क्षेत्रबीजसमागात्संभवः सर्वदेहिनाम् ॥

स्त्रीधर्मपालन वर्णनम् : १७३

दायभाग वर्णनम् : १७६

सम्पत्तिश्राद्धयोरधिकारित्व वर्णनम् : १८१

पुत्रार्थं सम्पत्ति विभाग वर्णनम् : १८३

ऐश्वर्याधिकारिपुत्र वर्णनम् : १८६

अनेक दण्ड वर्णनम् : १६०

राजधर्म दण्ड वर्णनम् : १६३

राज्ञः धर्मपालन वर्णनम् : १६७

प्रायश्चित्त वर्णनम् : २३१

तपमहत्त्वफल वर्णनम् : २३४

१२. कर्मणा शुभाशुभफल वर्णनम् : २३७

कृतकर्मफल वर्णनम् : २४२

धर्मनिर्णय कर्तृक पुरुष वर्णनम् : २४६

नारदीय मनुस्मृति

१. व्यवहार दर्शन विधिः : २५०

२. ऋणादानं प्रथमं विवादपदम् : २५८

१०. क्रीत्वानुशयो नवमं विवादपदम् : २६१

११. समयस्यानपाकर्म दशमं विवादपदम् : २६२

१२. क्षेत्रविवाद एकादश विवादपदम् : २६३

१३. स्त्रीपुंसयोगो द्वादशं विवादपदम् : २९७

१४. दायविभागस्त्रयोदशं विवादपदम् : ३०८

विशेष — नारदीय-स्मृति में अध्यायक्रम नहीं रहने से प्रकरण ही लिखा गया है ।

अत्रिस्मृति

१. आत्मशुद्धिवर्णनम् : ३३६

२. सर्वपाप विमुक्तिः, गायत्रीमन्त्रवर्णनम् : ३३८

३. पूर्वाध्यायरूपं, सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ३३९

४. रहस्यपाप प्रायश्चित्तमगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ३४२

५. विविध प्रकरण वर्णनम् : ३४४

स्वर्गसुख प्राप्ति फलवर्णनम् : ३५१

अत्रिसंहिता

धर्मशास्त्रोपदेश वर्णनम् : ३५२

शुद्धिप्रकरणम् : ३६७

शुद्धिस्पर्शादि प्रायश्चित्तम् : ३७१

प्रायश्चित्तम् : ३७३

दान फल वर्णनम् : ३८२

श्राद्धफलवर्णनम् : ३८४

निन्द्यब्राह्मण वर्जनवर्णनम् : ३८६

प्रथम विष्णुस्मृति

विष्णुस्मृति

१. सृष्ट्युत्पत्तिवर्णनम् : ४०१

ब्रह्मा की उत्पत्ति से सृष्टि रचना, वराह द्वारा पृथिवी उद्धार, देव सृजन, जब विष्णु अन्तर्धान हो गये तब कश्यप से पृथिवी ने पूछा मेरी गति क्या होगी ? पृथिवी द्वाराविष्णुस्तुति ।

२ सवर्णाश्रम वृत्तिधर्म वर्णनम : ४०७

वर्णाश्रम की रचना उनके मन्त्रों द्वारा श्मशान तक की क्रिया, वृत्ति, जाति पर विचार ।

३. राजधर्म वर्णनम् : ४०८

राजधर्म, ब्राह्मणों से कर नहीं लेने का वर्णन ।

४. राजधर्म वर्णनम् : ४१२

प्रजा के सुख से सुखी और दुःख से दुःखी रहने से राजा को स्वर्ग प्राप्ति ।

५. राजधर्मविधाने दण्डवर्णनम् : ४१३

महापातक और उनके दण्ड का वर्णन, पापियों के दण्ड का वर्णन, दूसरी योनि का वर्णन, विवाद का वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, तीन पुस्ततक भोगने पर जगह का वर्णन, चोर, परस्त्रीगामी, लम्पट जिसके राज्य में न हों उस राजा का इन्द्रत्व वर्णन ।

६. ऋणदान वर्णनम् : ४२१

ऋणी धनी का व्यवहार और उसकी व्यवस्था का वर्णन, स्वर्ण की द्विगुण की वृद्धि, अन्न की त्रिगुण की वृद्धि इनके निर्णय शास्त्र साक्षी । सम्पत्ति लेने वाले को ऋणदान आवश्यक ।

७. सलेखसाक्षिवर्णनम् : ४२३

लिखित का वर्णन, राज साक्षी, गवाही, असाक्षिक वर्णन, संदेहास्पद लेख का निर्णय।

८. वर्जितसाक्षिलक्षणवर्णनम् : ४२४

जो साक्षी में निषेध हैं उनका वर्णन, कूट साक्षियों का वर्णन, शुद्ध साक्षियों के कहने पर निर्णय करना। जिस विवाद में कूट साक्षी होना निश्चित हो जाय वह विवाद समाप्त कर देना।

९. समयक्रियावर्णनम् : ४२६

समयक्रिया राजद्रोहादि में शपथ कराने का विवरण, अभियुक्त को दिव्य कराने की प्रक्रिया, सचैल स्नान कराकर तब देवता और ब्राह्मण के आगे शपथ करावे।

१०. घट (तुला) धर्म वर्णनम् : ४२७

घट या तुला—इसमें पुरुष को बिठावे और उससे यह कहलावे कि ब्रह्म हत्यारे को झूठी गवाही देने में जो नरक होते हैं वह इस तुला में बढ़ें उसके प्रार्थना के मन्त्र बोले। यदि तुला में तौल बढ़ जावे तो उसको सच्चा समझे, यदि घट जावे तो उसे झूठा समझे।

११. अग्नपरीक्षा वर्णनम् : ४२८

अग्निपरीक्षा—सोलह अङ्गुल के सात मण्डल बनावे और उन मण्डलों को दो हाथ के सूत्रों से वेष्टित कर देवे। पचास पल लोहे को आग में गरम करके उसे हाथ में लेकर सात मण्डलों पर चले फिर लोहे को नीचे रख देवे। जिसका हाथ न जले वह अनपराधी यदि जल जावे तो अपराधी। इसके नीचे अग्नि के मन्त्र लिखे हैं।

१२. उदकपरीक्षा वर्णनम् : ४३०

उदक (जल में परीक्षा) वहां पर एक आदमी धनुष से एक तीर पानी में डाले। वह आदमी कूदकर उस तीर को लावे। जो पानी के नीचे न दिखलाई दे वह शुद्ध, जो दिखाई दे वह अशुद्ध और मन्त्र वहीं लिखे हैं।

१३. विषपरीक्षा वर्णनम् : ४३१

विष की परीक्षा—हिमालय के विष को सात जौं के बराबर घी में भिगोकर उसे दिखलावे। जिस पर जहर न चढ़े उसे शुद्ध। इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं।

१४. कोषप्रकरण वर्णनम् : ४३१

कोषमान – किसी उग्र देवता के स्नान का उदक तीन अञ्जुली वह पीवे। दो-तीन सप्ताह तक उसके घर में कोई रोग, मरण हो जाय तो उसे अशुद्ध समझे। इसके प्रकरण में प्रार्थना के मन्त्र लिखे हैं।

१५. द्वादश पुत्र वर्णनम् : ४३२

बारह प्रकार के पुत्र—सबसे पहले औरस, क्षेत्रज, पुत्रिकापुत्र, भाई और पिता के न होने पर लड़की, पुनर्भव, कानीन, गूढ़ोत्पन्न, सहोढ़, दत्तक, क्रीत, स्वयं उपागत, अपविद्ध, परित्यक्त ये बारह प्रकार के पुत्र बतलाये गये हैं। इस अध्याय के अन्तिम श्लोकों में बतलाया है कि पुन्नाम नरक से जो पिता को बचाता है उसे पुत्र कहते हैं।

१६. जातिवशात्पुत्रभेद वर्णनम् : ४३४

समान वर्णों से जो पुत्र उत्पन्न होते हैं वही पुत्र कहे जाते हैं। अब अनुलोम जो माता के वर्ण से प्रतिलोम ये अनार्य लड़के कहे जाते हैं। उनकी संज्ञा और संकर जाति का विवरण।

१७. पुत्राभावे सम्पत्ति विभाग(ग्राह्य)वर्णनम् : ४३४

विभाग—अगर पिता विभाग करे तो अपनी इच्छा से कर सकता है। सभी उपार्जित का विभाग करे और पति के विभाग में स्त्री का पूर्ण अधिकार है।

१८. ब्राह्मणस्य चातुवर्णेषु जातपुत्राणां दायविभाग वर्णनम् : ४३६

ब्राह्मण का चारों वर्णों में विवाह होता है और जो बटवारे का कहा गया है वह विभाग बतलाया गया है।

१९. शवस्पर्शो (दाहसंस्कारार्थ) पुत्रवर्णनम् : ४३८

ब्राह्मण के अग्निदाह का निर्णय किया है।

२०. दिनरात्रिकालवर्षादीनां वर्णनम् : ४३६

देवताओं का उत्तरायण दिन, दक्षिणायन रात्रि है। सम्वत्सर अहोरात्र है इस प्रकार काल का विभाग बताकर कर्म विपाक बताया गया है और पितृ-क्रिया बताई गई है।

२१. अशौचानन्तरं श्राद्धादि वर्णनम् : ४४३

अशौच पूरा होने पर पितृ और अग्निहोत्र वार्षिक श्राद्ध, कुम्भदान आदि का विवरण है।

२२. अशौच निर्णय वर्णनम् : ४४४

अशौच किस जाति का कितने दिन का होता है। किसी का दस दिन का किसी का बारह दिन का।

२३. अन्नद्रव्यादि शुद्धिवर्णनम् : ४४६

वर्तन और अन्नादि की शुद्धि के सम्बन्ध तथा कूप आदि के शुद्धि के विषय— इसमें गाय के सींग का जल और पञ्चगव्य से अन्न में शुद्धि बताई है।

२४. विवाह वर्णनम् : ४५३

ब्राह्मण को चार जाति से विवाह, क्षत्रिय को तीन, वैश्य को दो, शूद्र को एक जाति से विवाह बतलाया है। सगोत्र से विवाह का निषेध। माता से पंचम, पिता से सप्तम कुल में विवाहग्राह्य है। स्त्री के लक्षण और आठ प्रकार के विवाह। अन्तिम में ब्राह्म विवाह का माहात्म्य।

२५. स्त्रीणां संक्षिप्त धर्म वर्णनम् : ४५५

इसमें संक्षिप्त से स्त्रियों के धर्म बताए हैं।

२६. अनेक पत्नीत्वे सति स्वधर्माद्यस्त्री प्राधान्य वर्णनम् : ४५६

जिसकी सवर्णा बहु भार्या हो तो वह धर्म काम ज्येष्ठ पत्नी से करे। हीन जाति की स्त्री से विवाह करने पर उससे उत्पन्न लड़के से दैव कार्य और पितृकार्य नहीं हो सकता।

२७. निषेकादुपनयनपर्यन्तदशसंस्कार वर्णनम : ४५७

गर्भाधान, पुंसवन संस्कार आदि का वर्णन—उपनयन ब्राह्मण को आठवें, क्षत्रिय को ग्यारहवें और वैश्य को बारहवें वर्ष में करना चाहिए।

२८. गुरुकुले वसन् ब्रह्मचारिणां सदाचार वर्णनम् : ४५८

इसमें ब्रह्मचारी के नियम, गुरुकुल में रहना, गुरु की आज्ञा पर चलना, वेदों को पढ़ना इत्यादि वर्णन किया गया है ।

२९. आचार्य (गुरु) कर्तव्यता विधान वर्णनम् : ४६०

इसमें आचार्य, ऋत्विक् के कर्तव्यों का वर्णन है ।

३०. वेदाध्ययनेऽनध्यायादि वर्णनम् : ४६१

इसमें श्रावण महीने में उपाकर्म करने का विधान और अन्त में उपाकर्म करने का और शिष्य को उत्पन्न करने वाले पिता से दीक्षा देने वाले गुरु का विशेष महत्त्व और शिष्य के लिए आमरण गुरु सेवा का निर्देश है ।

३१. मातापितृ गुरूणाम् शुश्रूषा विधानवर्णनम् : ४६३

मनुष्य के तीन अति गुरु होते हैं—माता, पिता, आचार्य इनकी नित्य सेवा और उनकी आज्ञापालन का वर्णन है ।

३२. राजा-ऋत्विक-अधर्मप्रतिषेधी-उपाध्याय-पितृ-व्यादीना-माचार्यबद्व्यवहारवर्णनम्, तेषां पत्न्योऽपि मातृवत् माननीया-स्तच्छ्रुतिः : ४६४

राजा, ऋत्विक, उपाध्याय, चाचा, ताऊ, मामा, नाना, श्वशुर और ज्येष्ठ भ्राता इनका सम्मान करना चाहिए । अन्त में बतलाया है कि ये क्रम से विद्या, कर्म, अवस्था, बन्धुत्व, धन इनके मान के स्थान हैं ।

३३. पुंसां के ते शत्रव स्तद्विचार वर्णनम् : ४६६

काम, क्रोध, लोभ ये तीन मनुष्य के शत्रु हैं और नरक केद्वार बताये गये हैं ।

३४. मात्रादि गमन पातक परामर्श वर्णनम् : ४६६

मातृ गमन, दुहिता गमन, स्वसा गमन करने वाले अति पातकी होते हैं । उन्हें आग में जलाना चाहिए ।

३५. महापातक परामर्श वर्णनम् : ४६७

महापातक—ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्णचोरी और गुरुदार गमन और एक वर्ष तक इनके साथ रहता है इनका वर्णन है ।

३६. ब्रह्महत्या समाः पातकाः : ४६७

इसमें झूठी गवाही देने वाला, गर्भघाती आदि के पाप बतलाये हैं । जो महा-पातक के समान पाप होते हैं वे बतलाए हैं ।

३७. उपपातक वर्णनम् : ४६९

उपपातक—झूठ कहना, वेदों की और गुरु की निन्दा सुनना इत्यादि उपपात बतलाये हैं ।

३८. सकर्तव्यता जातिभ्रंशकरण प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४६९

जातिभ्रंशकरण—जैसे पशु में मैथुन करना इत्यादि ।

३९. जीवहिंसाकरणे (संकरीकरणे) दोषस्तत् प्रायश्चित्त वर्णनम् : ४७०

संकरीकरण—पशु आदि की हिंसा ।

४०. अपात्रीकरण (आदानपात्रं) तद्वर्णनम् : ४७०

अपात्रीकरण नीच आदमियों से धन, दान लेना और चक्रवृद्धि आदि से रुपया लेना ।

४१. मलिनीकरणं तत्प्रशमनवर्णनम् : ४७०

मलिनीकरण के पाप—पक्षी आदि को मारना ।

४२. अकर्तव्या विषये (प्रकीर्णप्रायश्चित्त वर्णनम् : ४७१

ब्राह्मण (ब्रह्म नैष्ठिक) के आज्ञा से प्रकीर्ण पातक बड़ा या छोटा जो हो सो प्रायश्चित्त करे ।

४३. नरकाणां संज्ञां तेषां वर्णनम् : ४७१

नरक, तामिस्र, अन्धतामिस्रादि—जो पाप करके प्रायश्चित्त नहीं करते उन्हें मरने के बाद इस नरक में जाना पड़ता है ।

४४. नरकस्थानां यमयातना निर्णय : ४७३

पापी आदमियों को नरक जाने के अनन्तर तिर्यग् योनि, अति पातकों को स्थावर, और महापातकी को कृमि, उपपातकी को जलज योनि और जातिभ्रंश को जलचर योनि इत्यादि ।

जो दूसरे के द्रव्य को हरण करता है उसे अवश्य सर्प की योनि प्राप्त होती है ।

४५. नरकोतीर्ण तिर्यग्योन्योर्मनुष्ययोनि वर्णनम्—पापकर्मणा कर्मविपाकेन मनुष्याणां लक्षणानि (चिह्न) वर्णनम् : ४७८

नरक भोगने के बाद और तिर्यग् योनि भोगने के बाद जब मनुष्य योनि में आता है तो उसके क्या निशान हैं । यथा—अतिपातकी कुष्ठी, ब्रह्म-हत्यारा यक्ष्मारोगी, गुरुपत्नीगामी दुष्कर रोग से ग्रसित रहते हैं ।

४६. कृच्छ्रादि व्रतविधान वर्णनम् : ४७६

कृच्छ्रव्रत—तीन दिन तक भोजन नहीं करना। सिरसे स्नान करना इसी तरह पर प्राजापत्य—तप्तकृच्छ्र, शीतकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, उदककृच्छ्र, मूलकृच्छ्र, श्रीफलकृच्छ्र, पराक, सान्तपन, महासान्तपन, अतिसान्तपन, पर्णकृच्छ्र—इनका विधान आया है।

४७. चान्द्रायण व्रतवर्णनम् ग्रासार्थान्न निर्णय वर्णनम् : ४७७

चान्द्रायण के विधान—इसमें यति चान्द्रायण और सामान्य चान्द्रायणादि का वर्णन आया है।

४८. अन्नदोषार्थ यवेन प्रायश्चित्तम् : ४७८

अपने लिए यव भिगोकर उसकी तीन अंजुली पीवे उससे वेश्या का अन्न, शूद्र के अन्न का दोष हट जाता है।

४९. मार्गशीर्षशुक्लैकादश्युपाख्यान वर्णन, सर्वपाप निवृत्यर्थं वासुदेवार्चन वर्णनम् : ४७९

मार्गशीर्ष शुक्ला ११ में उपवास कर १२ में भगवान् वासुदेव का पूजन पुष्प, धूप आदि से करे। एकादशी व्रत करने से बहुत पाप नष्ट हो जाते हैं। श्रवण नक्षत्र युक्त एकादशी वा पूर्णिमा को एक वर्ष तक व्रत करने से पाप नष्ट हो जाते हैं।

५०. ब्रह्म, गोवधादि प्रायश्चित्तार्थ वने पर्णकुटी विधान वर्णनम् : ४८०

व्रत का वर्णन—वन में झोपड़ी बनावे और तीन बार स्नान करे और ग्राम-ग्राम में भीख मांगे और घास पर सोवे तथा अपने पाप को कहता जावे। रजस्वला आदि गमन स्त्री आदि पाप नष्ट हो जाते हैं। फल के वृक्षादि, गुल्मादि काटने के पाप भी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

५१. सुरापः सर्वकर्मस्वनर्हः मद्यमांसादि निषेधं तच्च सर्व प्रायश्चित्तवर्णनम् : ४८२

सुरापान करने वाला किसी कार्य को या मातृ-पितृ श्राद्ध कर वह एक वर्ष तक कणों को खावे एवं चान्द्रायण व्रत करे। प्याज, लहसुन, वानर, खर, उष्ट्र, गोमांस के भक्षण करने पर भी वही व्रत है। द्विजातियोंको इस व्रत के पश्चात् फिर संस्कार करें। शुष्क मांस के खाने पर भी उपरोक्त

व्रत करे। अभक्ष्य भक्षण करने से जो पाप होते हैं वे सभी इस व्रत से नष्ट हो जाते हैं।

सुवर्णचोरी तथा अन्यान्य द्रव्यचोरी के प्रायश्चित्त का वर्णन है।

अगम्या-गम्य के विषय में प्रायश्चित्त

जो जिस पापी के साथ रहता है उसे भी वही प्रायश्चित्त बतलाया है।

रहस्य पापों का प्रायश्चित, प्रणव का जप, हविष्यांग और प्राणायामादि बतलाया है।

इसमें जप, होम, अघमर्षण, नारायणी सूक्त और पुरुषसूक्त इत्यादि का माहात्म्य बतलाया गया है।

इसमें त्याज्य मनुष्यों का निर्देश, त्याज्य पुरुषों से दान लेने से ब्राह्मणों का तेज नष्ट हो जाता है।

इसमें गृहस्थी के तीन प्रकार के अर्थ बतलाये हैं। शुल्क सबल और असित, जो अपनी वृत्ति से धनोपार्जन करते हैं उन्हें शुल्क, दूसरों को ठगकर अपना व्यापार करते हैं उन्हें सबल, तीसरे रिश्वत और सट्टाआदि से रोजगार करने वाले और ब्याज खाने वाले को असित कहते हैं। जिस तरह जो रुपया आता है उसकी गति वैसी ही होती है।

गृहस्थाश्रमी नित्य हवन करे इस तरह लिखे हुए आचार के अनुसार हवन करने वाले की प्रशंसा की गई है।

अध्याय ६० से ७१ तक गृहस्थाश्रमी के प्रत्येक दैनिक और पर्व के, घर के उत्सव के, जीवन यात्रा के, आचार, सदाचार, व्यवहार की शिक्षा दी गई है।

अध्याय ७२ से ८६ तक श्राद्ध का वर्णन है।

अध्याय ८७, ८८ में दान वर्णन—उर्ध्वमुखी गाय का दान।

इसमें कार्तिक मास में जितेन्द्रिय व्रत करता हुआ जो स्नान करता है वह मनुष्य सब पापों से छूट जाता है।

मागशीर्ष के चन्द्रमा के उदय में सुवर्ण दान करे उसे रूप और सौभाग्य का लाभ होता है। पौष की पूर्णमा में स्नान औरदान कर कपड़े देवे तो पुष्ट होता है। माघ इत्यादि मासों के पूर्णमासी का व्रत, दान करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

कुआं और तालाब के दान करने वाले सब योनियों में तृप्तरहता है। ब्राह्मण के घर या रास्ते में वृक्ष लगाने से वही फल उसके घर में पुत्र रूप से उत्पन्न होते हैं। जो उनकी छाया में बैठते हैं वे उनके मित्र और सहायक होते हैं। कूपतड़ाग और मन्दिर का जीर्णोद्धार करने वाले को नये बनाने का फल होता है।

सब दान से बड़ा अभय दान है। इसके साथ गोदान, सुवर्ण, लवण, धान्य, आदि दान का महत्व वर्णन आया है। दान केपात्र—गुरु, ब्राह्मण, दुहिता और जामाता हैं।

सम्बवर्त्तस्मृति

दक्षस्मृति

अङ्गिरसस्मृति

सवप्रायश्चित्तविधानं, अन्त्यजानां द्रव्यभाण्डेषु जलपानं, अज्ञानवशाज्जलपानं उच्छिष्ट भोजनं नीलवस्त्रधारणं कृत्वा दानादिकरणे प्रत्यवायः, भूमौ नीलवपनाद् द्वादशवर्ष पर्यन्त भूमेरशुद्धिः, गोवधप्रायश्चित्त स्त्रीशुद्धिवर्णनं, अन्नभक्षणेन भेदान्तर पापवर्णनम् द्विविवाहितायाः कन्यायाअन्नभक्षणेन प्रायश्चित्तम्, दोषयुक्त मनुष्यान्न वर्णनम् राजान्नं शूद्रान्नं च तेज वोर्यह्रासकत्वं, सूतकान्नंमलतुल्यं वर्णनं मिति : ५९१

शातातपस्मृति

१. अकृत प्रायश्चित्त वर्णनम् : ५९८

२. कुष्ठ निवारण प्रयोग वर्णनम् : ६०१

सामवेदेन सर्वपाप प्रायश्चित्तम् : ६०३

हन्तृक-फलानाशायोपापवर्णनम् : ६०५

३. प्रकीर्णरोगाणां प्रायश्चित्तम् : ६०७

४. कुलध्वंसकस्य, स्तेयस्य च प्रायश्चित्तम् : ६०९

५. अगम्यागमन प्रायश्चित्तम् : ६१३

६. अनुचित व्यवहारफलम् : ६१६

अगति प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६१८

॥ स्मृतिसन्दर्भ प्रथम भाग की विषय-सूची समाप्त ॥

स्मृति सन्दर्भ

द्वितीय भाग

पराशरस्मृति

पराशर संहिता दो उपलब्ध हैं पराशरस्मृति और बृहत्पराशर। पराशर स्मृति में और बृहत्पराशर दोनों में १२ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में दोनों स्मृतियों में एक जैसा वर्णन "कलौपाराशरीस्मृता" है दूसरे अध्याय से बृहत् पराशर में कुछ विशेष बातें और विचार वर्णन किया गया है। पराशरस्मृति किसी देश विशेष, संप्रदाय विशेष, जाति विशेष को लेकर धर्माख्या नहीं करती है, अपि तु मनुष्यमात्र का पथप्रदर्शित यह स्मृति करती है।

१. धर्मोपदेश तथा उनके लक्षण : ६२५

"मानुषाणां हितं धर्मं वर्तमाने कलौयुगे
शौचाचारं यथावच्च वद सत्यवतीसुत !"

[वर्तमान समय में मनुष्यमात्र का जिससे हित हो वह धर्म कहिए और ठीक-ठीक रीति से आचारादि की रीति भी बतला दीजिए—ऋषियों के प्रश्न करने पर व्यासजी ने उत्तर दिया कि कलियुग के सार्वभौम धर्म के विकास करने में अपने पिता पराशरजी की प्रतिभा शक्ति की सामर्थ्य कही। पराशरजी निरन्तर एकान्त बदरिकाश्रम की तपोभूमि में आसीन हैं। तपोमय भूमि में तपस्यारूपी साधन के बिना कलियुग के धर्म, व्यवहार, मर्यादा पद्धति का पर्षदीकरण अबैध सूचित किया ऋषियों ने इस बात पर विचार किया कि कलियुग के मनुष्य किसी धर्म मर्यादा की पर्षद बुलाने की क्षमता नहीं रख सकते हैं यावत् तपोमय जीवन से इन्द्रियों की उपरामता न हो जाए अतः इन्द्रिय भोग विलासिता के जीवन वाले वेद शास्त्रपारंगता प्राप्त करने पर भी धर्म, न्याय विधि को नहीं बना सकते हैं। अतः विधि, नियम रूपी धर्म व्यवहार के लिए तपस्या तथा वनस्थली में राग, द्वेष, आदि का विकास परमावश्यक है। पराशर जी के आश्रम पर व्यास प्रमुख सब ऋषि गए

पराशर जी ने मानवीय सदाचार द्वारा आश्रम में आए हुए सब का स्वागत किया। व्यासजी ने पितृभक्ति से पराशरजी को प्रणाम कर निवेदन किया— १-१५

'यदि जानासि मे भक्ति स्नेहाद्वा भक्तवत्सल ?
धर्मं कथय मे तात ! अनुग्राह्योह्ययं तव" ॥

(पुत्र पिता से सर्वोच्च वस्तु क्या चाहता है यह समुदाचार इस प्रश्न से सरलता से ज्ञात हो रहा है) व्यासजी कहते हैं कि भगवन् ! यदि मेरी भक्ति को आप जानते हैं या मेरे स्नेह को तो मुझे धर्म का उपदेश कीजिए जिससे मैं आपका अनुगृहीत होऊंगा। पुत्र पिता से सबसे बड़ा धन धर्म मांगता है यह भारत की संस्कृति है (एक ओर व्यासजी की पिता की धर्म जिज्ञासा, दूसरी ओर संसार में देखो पैतृक धन संपत्ति पर न्यायालयों में पुत्र पिता पर अभियोग चलाते हैं) इससे सांस्कृतिक जीवन, असांस्कृतिक जीवन का सरलता से ज्ञान हो जाएगा। संस्कृति उसे कहते हैं जिससे धर्म का ज्ञान माता, पिता, गुरु, बन्धुजनों को पूज्य मर्यादामय व्यवहार से कृति हो। व्यासजी ने विनम्र जिज्ञासा की—मनु, वसिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम, उशना, हारीत, याज्ञवल्क्य, कात्यायन, प्रचेता, आपस्तम्ब, शंख, लिखित आदि धर्मशास्त्र प्रणेताओं के धर्म निबन्ध सुनने पर भी वर्तमान कलियुग की धर्म-मर्यादा बनाने में अपने को समर्थ समझकर आपके पास इन ऋषियों के साथ आया हूं कलियुग में धर्म को नष्टप्राय देख रहा हूं। अतः आपका तपोमय जीवन ही इस युग धर्म की व्यवस्था दे सकता है। १६-२६

युग चतुष्टय की व्यवस्था धर्म मर्यादा का तारतम्य। २९

दान के प्रकरण में सेवा दान नहीं है वह सेवा का मूल्य है। सत्ययुग में अस्थि में प्राण रहते थे, त्रेता में मांस में, द्वापर से रुधिर में और कलियुग में अन्न में प्राण रहते हैं। ३०

दीर्घ समय तक तपस्या की क्षमता कलियुग के जीवन में नहीं है और अन्न की सावधानी पर ध्यान दिलाया जैसा अन्न खाएगा, उसी प्रकार उसके जीवन की सम्पूर्ण घटना होगी। कलियुग के जीवन की प्रवृत्ति बनाकर ध्यान दिलाया है। ३१-३७

आचार धर्मवर्णनम् : ६२६

"आचार भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्मः पराङ्मुख"।

मनुष्य आचार से च्युत है तो उसे धर्मपराङ्मुख समझना चाहिए। सदाचार विहित धर्म मर्यादा को नहीं जान सकता।

"सन्ध्यास्नानं जपो होम स्वाध्यायो देवतार्च्चनम्।
वैश्वदेवातिथेयञ्च षट्कर्माणि दिने दिने॥ (३६)
षट्कर्माभिरतो नित्यं देवताऽतिथिपूजकः।
हुतशेषन्तु भुञ्जानो ब्राह्मणो नावसीदति"॥ (३८)

षट् कर्म का निरूपण, अतिथि सत्कार वैश्वदेव कर्मादि का निरूपण और अतिथि का लक्षण ३८-५८

राजा को प्रजा से सर्वस्व शोषण का निषेध ५८-६५

२. गृहस्थाश्रमधर्मवर्णनम् : ६३१

गृहस्थी के धर्माचार का निर्देश १

"षट्कर्म निरतो विप्रः कृषिकर्माणि कारयेत्।
हलमष्टगवं धर्म्यं षड्गवं मध्यमं स्मृतम्॥
चतुर्गवं नृशंसानां द्विगवं वृषघातिनाम्। ३
क्षुधितं तृषितं श्रान्तं बलीवर्दं न योजयेत्॥
हीनाङ्गं व्याधितं क्लीबं वृषं विप्रो न वाहयेत्। ४
स्थिराङ्गं नीरुजं दृप्तं वृषभं षण्डवर्जितम्॥
वाहयेद्दिवसस्यार्धं पश्चात् स्नानं समाचरेत्"। ५

षट्कर्म सम्पन्न विप्र को कृषि कर्म में जुट जाने का आदेश है, किस प्रकार भूमि में हल से जुताई करे, कितने बैलों से हल जोते तथा बैलों को हृष्टपुष्ट बनाना उसका धर्मकार्य और कितने समय तक बैलों को खेती पर जोते जाए इसका

३. अशौच व्यवस्था वर्णनम् : ६३३

४. अनेकविधप्रकरण प्रायश्चित्तम् : ६३९

५. प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६४२

१०. अगम्यागमन प्रायश्चित्तवर्णनम् : ६६६

११. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त वर्णनम् : ६७०

शुद्धि-वर्णनम् : ६७३

१२ शुद्धिवर्णनम् : ६७५

पुनः संस्कारादि प्रायश्चित्त वर्णनम्।

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ६८०

वृहद पाराशर स्मृति

इसमें १२ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में पराशर संहिता के क्रमानुसार ही विभिन्न अध्यायों में वर्णित आचार प्रायश्चित्त आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

१. वर्णाश्रमधर्म वर्णनम् : ६८२

वर्णाश्रम धर्म कलियुग में किस प्रकार से होता है, इस प्रश्न को लेकर व्यास आदि ऋषियों का पराशरजी के पास जाना १-२०

पराशरजी ने कहा कि वेद और धर्मशास्त्र इन दोनों का कर्ता कोई नहीं है। ब्रह्माजी को जिस प्रकार वेदों का स्मरण हुआ था उसी प्रकार युग-प्रति-युग में मनुजी को धर्मस्मृतियों का स्मरण हुआ। पराशरजी ने कलियुग की विप्लव दशा में खेद प्रगट किया कि धर्म दम्भ के लिए, तपस्या पाखण्ड के लिए एवं बड़े-बड़े प्रवचन लोगों की प्रवंचना (ठगी) के लिए किए जाते हैं। गायों का दूध कम हो जाता है, कृषि में उर्वरा शक्ति कम हो जाती है, स्त्रियों के साथ केवलमात्र रति की कामना से सहवास करते हैं न कि पुत्रोत्पत्ति के लिए। पुरुष स्त्रियों के वशीभूत होते हैं। राजाओं को वंचक अपने वश में कर लेते हैं। धर्म का स्थान पाप ले लेता है। शूद्र ब्राह्मणों का तथा ब्राह्मण शूद्रवत् आचरण करने लगते हैं। धनी लोग अन्याय मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार कलियुग की विषमता पर अत्यन्त खेद प्रगट किया है २१-३५

धर्मविषयवर्णनम् : ७८६

इसमें आचार वर्णन दिखया और युगों का नाम बताया है। सतयुग को ब्राह्मण युग, त्रेता को क्षत्रिय युग, द्वापर को वैश्य युग तथा कलियुग को शूद्र युग बताया है। वर्णाश्रम धर्म की क्षमता उस भूमि में बताई है जिसमें

कृष्णसार मृग स्वभावतः स्वतंत्रता पूर्वक विचरण करते हैं। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य देश को पावन देश बताया है और अन्य देश जहां से नदियां साक्षात् समुद्रगामिनी हैं उन्हें भी तीर्थस्थान बताया है। इसमें पराशरजी ने अपने पुत्र व्यास को द्विज कर्म और षट्कर्म वर्ण धर्म की प्रशंसा और गो वृषभ का पालन पशुपालन विधि

षट्कर्म वर्णधर्माश्च प्रशंसा गोवृषस्य च।
अवोह्य-बाह्यौ यौ तत्र क्षीरं क्षीरप्रयोक्त्रिणा॥
अमावस्या निषिद्धानि ततश्च पशुपालनम्॥

विवाह संस्कार, व्रतचर्यादि, पुत्रजन्म, अखिल गृहस्थधर्म का उपदेश, भक्ष्याभक्ष्य की व्यवस्था, द्रव्य शुद्धि, अध्ययन अध्यापन का समय, श्राद्ध कर्म, नारायणवली, सूतक तथा अशौच, प्रायश्चित्त विधान, दानविधि तथा फल, भूमिदान की प्रशंसा, इष्टापूर्त कर्म, ग्रहों की शान्ति, वानप्रस्थ धर्म, चारों आश्रम, दो मार्ग-र्अचि तथा धूम मार्ग इन सबका वर्णन यथानुपूर्व बृहत् पराशर के द्वादश अध्याय में वताया है ३६-६४

२. आचारधर्मवर्णनम् : ६८८

चारों वर्णों का धर्मपालन १-३

कौन-कौन कर्म कलियुग में करने चाहिए तथा उनकी विधि ४

नित्यषट्कर्म, सन्ध्याकृत्य तथा सदाचार कृत्यवर्णनम् ६८९

"कर्मषट्कं प्रवक्ष्यामि, यत्कुर्वन्तो द्विजातयः।
गृहस्था अपि मुच्यन्ते संसारं बन्धहेतुभिः"॥

संध्या, स्नान, जप, देवताओं का पूजन, वैश्वदेव कर्म, आतिथ्य इन षट्कर्म आदि ५-८५

आचारवर्णनम् : ६८९

सात प्रकार के स्नान का वर्णन—मंत्रस्नान, पार्थिव स्नान, वायव्य स्नान, दिव्यस्नान, वारुणस्नान, मानसस्नान तथा आग्नेयस्नान इनके मन्त्र फल सहित बताकर प्रातःस्नान का माहात्म्य ८६-९३

उषाकाल स्नान ९४-९६

गङ्गा और कुयें के स्नान तथा स्नान का समय ९७-२०८

चित्तप्रसाव बलरूप तपांसिमेधा,
मायुष्यशोच सुभगत्व मरोगिता च ।
ओजस्वितां त्विषमदात् पुरुषस्यचीर्ण,
स्नानं यशो-विभव-सौख्यमलोलुपत्वम् ॥

३. ओंकार मन्त्र वर्णनम् : ७१०

४. गायत्रीमन्त्र पुरश्चरण वर्णनम् : ७१४

यस्याः शिरसि ब्रह्माऽऽस्ते स्कन्धदेशे शिवः स्थितः ।
पृष्ठे नारायणस्तस्थौ श्रुतयश्चरणेषु च ॥
या अन्या देवताः काश्चित्तस्या लोमसुताः स्थिताः ।
सर्वदेवमया गावस्तुष्येत्तद्भक्तितो हरिः ॥

स्पृष्टाश्च गावः शमयन्ति पापं,
संसेविताश्चोपनयन्ति वित्तम् ।
ता एव दत्तास्त्रिदिवं नयन्ति,
गोभिर्नतुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ॥

समहत्त्व वृषभ पूजन वर्णनम् : ७४०

हल (वेध) करण वर्णनम् : ७४१

कृषि महत्त्व धर्म वर्णनम् : ७४७

कृषिकृच्छुद्धिकरण तथा कृषिकर्मकरण स सीतायज्ञ वर्णनम् : ७५०

"कृषेरन्यतमोऽधर्मो न लभेत्कृषितोऽन्यतः ।
न सुखं कृषितोऽन्यत्र यदि धर्मेण कर्षति" ॥

कृषि के तुल्य दूसरा कोई धर्म नहीं कोई व्यवहार इतना लाभदायक नहीं। यदि धर्मानुकूल कृषि की जाए तो बड़ा सुख है। १५६-१६५

६. कन्या विवाह वर्णनम् : ७५५

कन्याओं के आठ प्रकार के विवाह होते हैं। अपनी जाति में वर के लक्षण देखकर वस्त्राभूषण से सुसज्जित कर जो कन्या दी जाती है उसको ब्राह्म विवाह कहते हैं। लड़के का लक्षण, तथा नपुंसक का पहचान। यज्ञ करते हुए यज्ञ करने वाले को वस्त्राभूषण से सुसज्जित जो कन्या दी जाती है इसे दैव विवाह कहते हैं। वर कन्या के समान हो और गुणवान, विद्वान हो ऐसे पुरुष को दो गाय के साथ जो कन्या दी जाती है वह आर्ष विवाह होता है। कन्या और वर स्वेच्छा से धर्मचारी हो वह मनुष्य विवाह होता है। जिस जगह पर वर से रुपए की संख्या लेकर कन्या दी जाती है उसे दैत्य विवाह कहते हैं। जहां वर कन्या दोनों अपनी इच्छा पूर्वक विवाह कर ले उसे गान्धर्व विवाह कहते हैं। जहां हरण करके कन्या ले जाई जावे उसे राक्षस विवाह कहते हैं। सोई हुई कन्या को जो मद्य इत्यादि के नशे में जबरदस्ती ले जाया जाए उसे पैशाच विवाह कहते हैं १-१७

1127०

विवाह के पहले जिन बातों का विचार करना चाहिए उनका निर्देश किया गया है। १ वर, २ कन्या की जाति, ३ वयस, ४ शक्ति, ५ आरोग्यता, ६ वित्त सम्पत्ति, ७ सम्बन्ध बहुपक्षता तथा अर्थित्व १८

विवाहे वरगुण वर्णनम्

वर के लक्षण १९-२१

सगोत्र की कन्या से विवाह २२

जहां कन्या नहीं देनी चाहिए २३-२७

उन लड़कियों के लक्षण लिखे हैं जिनके साथ विवाह नहीं करना है और कन्यादान करने का जिनका अधिकार है उनका वर्णन २८-३२

लक्ष्मीस्वरूपा स्त्री वर्णनम् : ७५८

गृहस्थधर्म वर्णनम्

वेदविद्विप्रस्य कलाज्ञस्य वर्णनम् : ७६३

षोडश संस्कार माह्निकवर्णनम्

ब्रह्मचर्य वर्णनम् : ८९८

गृहस्थाश्रमे पुत्र वर्णनम् : ७७१

आचार वर्णनम् : ७७३

शौच वर्णनम् : ७७४

प्रतिग्रह (दान) वर्णनम् : ७७५

शुद्धि वर्णनम् : ७८६

अनध्याय वर्णनम् : ७८८

"ये स्वाध्यायमधीयीरन्ननध्यायेषु लोभतः।
वज् रूपेण ते मन्त्रास्तेषां देहे व्यवस्थिताः" ॥

७. श्राद्ध वर्णनम् : ७९१

८. शुद्धि वर्णनम्: ८२९

प्रायश्चित्त वर्णनम् : ८३५

स्वर्ण और चांदी की तुला दान, गुड़ की तुला, लवण की तुला दान जो स्त्री करे तो पार्वती के समान सौभाग्यवती रहेगी तथा पुरुष करे तो प्रद्युम्न के समान तेजस्वी होगा।

दान विधि वर्णनम् : ८८७

ब्राह्मण को वस्त्राभूषण दान का माहात्म्य, बड़े-बड़े रत्नों के दान का माहात्म्य, स्वर्ण तुला दान करने में भगवान विष्णु की पूजन का विधान, चांदी दान का माहात्म्य, माणिक्य के तुला दान का माहात्म्य, घृत, भोजन की चीज, तेल, पान आदि वस्तुओं का पृथक्-पृथक् दान माहात्म्य। फल, गुड़, अन्न, मकान पलंग दान आदि का माहात्म्य २०१-२३३

विद्यादान वर्णनम् : ८८८

विद्यादान का माहात्म्य और विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र देने का माहात्म्य। सब दानों से अधिक विद्यादान बताया है २३४-२४१

औषधि दान और अस्पताल (औषधालय) खोलने का माहात्म्य और दया दान २४२-२४८

तिथिदान विधि वर्णनम् : ८९०

भगवान विष्णु का पूजन पौर्णमासी में करने का माहात्म्य २४९-२६०

चैत्र शुक्ला द्वादशी को वस्त्रदान का माहात्म्य और छाता, जूता दान करने का माहात्म्य। आषाढ़ में दीप दान; श्रावण में वस्त्र दान; भाद्रपद गोदान; आश्विन में घोड़ा दान, कार्तिक में वस्त्र दान, मार्गशीर्ष में लवण दान, पौष में धान का दान, फाल्गुन में इत्र दान, मास विशेष में अलग-अलग दान बताए हैं २६१-२७८

दान त्याज्यकाल वर्णनम् : ८९३

अशौच सूतक में दान देना लेना निषेध, रात्रि में दान निषेध, और रात्रि में विद्यादान, अभय दान; अतिथि सत्कार हो सकता है अभय दान हर समय हो सकता है, दूसरे का दान अशौच सूतक में लेना निषेध २७८-२८२

"अश्वत्थमेकं पिचुमन्वमेकं न्यग्रोधमेकं दश चिंचिणीश्च ।
षट् चम्पकं तालशतत्रयं च पञ्चाम्रवृक्षै नरकं न पश्येत्" ।।

सांसारिक ऐश्वर्य को विनाशवान समझकर उसमें आस्था न करें।

भाग्य और पुरुषार्थ के सम्बन्ध में विवेचना की गई है। दुष्टों को दण्ड से दमन करना, राजा को प्रसन्नमूर्ति रहना चाहिए क्योंकि राजा सब देवताओं के अंश से बना हुआ है ७२-९५

वानप्रस्थ भिक्षा धर्म वर्णनम् : ९४७

वानप्रस्थी के नियम तथा उसके कर्तव्यों का वर्णन आया है। वानप्रस्थ को अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राजा को कहना चाहिए वानप्रस्थी को यज्ञ आदि कर्म करने का विधान और उसको भिक्षा लाकर आठ ग्रास खाने का नियम ९६-१२०

वेदान्त शास्त्र को पढ़कर यज्ञविधि को समाप्त कर संन्यास में जाने का नियम एवं संन्यासी के धर्म, दिनचर्या आदि का वर्णन तथा उसको निर्भयता, निर्मोह, निरहंकार, निरीह होकर ब्रह्म में अपनी आत्मा को लीन करना १२१-१४४

चतुर्णामाश्रमाणां भेदवर्णनम् : ९५१

ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी और संन्यासी के भेद बताए हैं। ब्रह्मचारी के भेद प्राजापत्य, नैष्ठिक इत्यादि गृहस्थ के चार भेद–शालीन यायावर इत्यादि, वानप्रस्थ के भेद-वैखानस, उदुम्बर इत्यादि, संन्यासी के भेद – हंस, परमहंस, दण्डी इत्यादि तथा उनके धर्मों का निर्देश १४५-१७४

योग वर्णनम् : ९५४

गर्भ में देहरचना और उससे वैराग्य, यह बताया है कि आत्मा देह से भिन्न है। अनेक प्रकार के कर्मों का वर्णन दिखलाया है कि कर्म के अनुसार देह बनती है। शब्द ब्रह्म का वर्णन और प्राण, योग सिद्धि, दीर्घायु का वर्णन। प्राणायाम का वर्णन, पूरक, रेचक, कुम्भक और प्रत्याहार के अभ्यास का वर्णन, अग्नि, वायु जल के संयोग से शुद्धि १७५-२४२

प्रणवध्यान, ध्यानयोग, योगाभ्यास वर्णनम् : ९६१

ज्ञान योग और परम मुक्ति का वर्णन, भगवान का ध्यान एवं प्रणव का ध्यान जानना और उसमें भक्ति का वर्णन, ध्यान के

प्रकार—किस स्वरूप में तथा किस जन्म में किस देवता का ध्यान करना इत्यादि का वर्णन । मृत्यु के अनन्तर जीव की दो मार्ग की गति का वर्णन, एक धूम मार्ग दूसरा प्रकाश (अर्चि) मार्ग । एक से ब्रह्म की प्राप्ति और एक से स्वर्ग की प्राप्ति । ब्रह्मयोग की प्राप्ति के साधन का वर्णन ब्रह्म का अभ्यास, ध्यान और प्रत्याहार का वर्णन तथा यह बताया है कि '' मृत्युकाले मतिर्यास्यात्तां गतिंयाति मानवः''। इसलिए मुमुक्षु को नित्य ऐसा अभ्यास करना चाहिए जिससे अन्त समय ब्रह्म ज्ञान का अभ्यास बना रहे । २४३-३७८

लघुहारीत स्मृति

१. वर्णाश्रमधर्मवर्णनम् : ६७४

ऋषिगणों का हारीत ऋषि से सम्वाद—ऋषियों ने वर्णाश्रम धर्म तथा योगशास्त्र हारीत से पूछा जिसके जानने से मनुष्य जन्ममरण रूप बन्धन को तोड़कर संसार से मुक्त हो जाय। इस अध्याय के नवम् श्लोक से हारीत ने सृष्टि का वर्णन किया, भगवान शेषशायी समुद्र में शयन कर रहे थे उस समय ब्रह्मा की उत्पत्ति से प्रारम्भ कर जगत की उत्पत्ति तक वर्णन किया। श्लोक तेईस में लिखा है जो धर्मशास्त्र न जाने उसको दान न देना। संक्षेप में ब्राह्मण का धर्म इस अध्याय में कहा गया है १-२३

२. चतुर्वर्णानां धर्मवर्णनम् : ६७७

क्षत्रिय तथा वैश्य का धर्म बताया गया है। क्षत्रिय का धर्म प्रजापालन, दान देना, अपनी भार्या में ही रति रखना, नीतिशास्त्र में कुशलता और मेल करना तथा लड़ना इसके तत्त्व को जाने। वैश्य का धर्म है गोरक्षा, कृषि और वाणिज्य। मनुष्य को स्वदार निरत रहना चाहिये १-१५

३. ब्रह्मचर्याश्रम धर्मवर्णनम् : ६७९

उपनयन संस्कार के बाद विधिपूर्वक अध्ययन करना और अध्ययन विधि के विरुद्ध करना निष्फल बताया गया है १-४

ब्रह्मचारी के नियम एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारी को विवाह करना और संन्यास करने का निषेध बताया गया है। इस प्रकार ब्रह्मचारी के धर्म का वर्णन बताया गया है ५-१४

४. गृहस्थाश्रम धर्मवर्णनम् : ६८१

वृद्ध हारीत स्मृति

१. पञ्चसंस्कार प्रतिपादनवर्णनम् : ९९४

राजा अम्बरीष हारीत ऋषि के आश्रम में गए। वहां जाकर हारीत से परम धर्म, वर्णाश्रम धर्म, स्त्रियों का धर्म तथा राजाओं के लिए मोक्ष मार्ग पूछा १-६

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में हारीत ने कहा कि मुझे जो ब्रह्माजी ने बताया है वह मैं आपको कहता हूं। नारायण वासुदेव विष्णु-भगवान सृष्टि के विधाता हैं अतः उन भगवान का दास होना ही सबसे बड़ा धर्म है ७-१६

मैं विष्णु का दास हूं यही भावना चित्त में रखना। नारायण के जो दास नहीं होते हैं वे जीते जी चाण्डाल हो जाते हैं। इसलिए अपने को भगवान का दास समझकर जप पूजादि करे, नारायण का मन से ध्यान कर उनका संकीर्तन करे और शंख, चक्र, ऊर्ध्वपुंड्र धारण करे यह दास के चिह्न हैं। जो वैष्णव शंख, चक्र धारण करता है वही पूज्य है और वही धन्य है १७-३६

२. वैष्णवानाम् पुण्ड्र नाम, मंत्र तथा पञ्चसंस्कारवर्णनम् : ९९७

पंच संस्कार शंखचक्र चिह्न धारण ऊर्ध्वपुण्ड्रादि की विधि, वैष्णव सम्प्रदाय की दीक्षा, उसका माहात्म्य, वैष्णव सम्प्रदाय की बालक की पंच संस्कार विधि बताई गई है १-१५

३. भगवन् मंत्रविधान वर्णनम् : १०१२

अम्बरीष राजा ने हारीत ऋषि से वैष्णव मन्त्रों का माहात्म्य तथा विधि पूछी ; इसके उत्तर में हारीत ने बड़े विचार के साथ पंचविंशति अक्षर का मन्त्र, अष्टाक्षर मंत्र, द्वादशाक्षर

मंत्र, हयग्रीव मंत्र तथा षोड़शाक्षर मंत्र आदि अनेक वैष्णव मंत्रों का उद्धरण, उनके विनियोग, न्यास ध्यान, जप विधि, शंख, चक्र पूजन और भगवान विष्णु के पूजन आदि का सुन्दर वर्णन किया है १-३९२

४. प्राप्तकाल भगवत् समाराधन विधिवर्णनम् : १०५०

प्रातःकाल उठने का विधान, शौच से निवृत्त हो वैष्णव धर्म के अनुसार तुलसी और आंवले की मिट्टी को अपने बदन पर लगाकर मार्जन करने और स्नान करने का विधान तथा मंत्रों का विधान बताया है १-४६

विष्णु का पूजन और विष्णु को कौन-कौन पुष्प चढ़ाने चाहिए एवं षडक्षर मंत्र का विधान ४७-१४०

प्राप्तकाल भगवत् समाराधन विधौ कृषिवर्णनम् १०६५

पुराणों का पाठ, वैष्णव पूजा का विधान, तामस देवताओं का वर्णन और द्रव्य शुद्धि का वर्णन आया है। खेती करना, पशु का पालन करना सबके लिए समान धर्म बताया है। चोरी करना, परस्त्री हरण, हिंसा सबके लिए पाप है १४१-१७४

प्राप्तकाल भगवत समाराधनविधौ राजधर्मवर्णनम् : १०६७

राजधर्म का वर्णन, दण्डनीति विधान—प्रायः वही है जो याज्ञवक्य में हैं। इसमें विशेषता यह है कि धर्मच्युत को सहस्र दण्ड विधान बताया है। स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाले का अंगच्छेदन, सर्वस्वहरण और देश निष्कासन बताया है १७५-२१३

युद्ध का वर्णन और युद्ध में राज्य जीतकर उसे अपने आधीन कर राज्य समर्पित कर देना इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है एवं विजय की हुई भूमि सत्पात्र को देनी चाहिए। सत्पात्र के लक्षण-तपस्या और विद्या की सम्पन्नता है २१४-२२३

राज्यशासन का विधान, कर लगाना, याचित, अनाहित और ऋण-दान देने का विधान, पुत्र को पिता का ऋण देना, स्त्री धन की रक्षा, पतिव्रता स्त्री का पालन, व्यभिचारिणी को पति के धन का भाग न मिलने का वर्णन और बारह प्रकार के

६. भगवतः यात्रोत्सवर्णनम् : ११२७

महापातकादि प्रायश्चित्त वर्णनम् ११४३

रहस्य प्रायश्चित्तवर्णनम् ११५३

महापापादि प्रायश्चित्त प्रकरण वर्णनम् ११६०

७ नानाविधोत्सव विधानवर्णनम् : ११६६

८. विष्णु पूजा विधिवर्णनम् : १२०१

पौराणिक तथा स्मृति के मन्त्रों से भगवान् विष्णु का पूजन और नवधा भक्ति का वर्णन, ध्यान जप, मन्त्र जप का वर्णन, तप्तचक्रांक धारण का माहात्म्य और वैष्णव धर्म वालों की प्रशस्ति बताई है।

"दानं दमः तपः शौचं आर्जवं शान्तिरेव च
आनृशंसं सतां संग पारमैकान्त्य हेतवः।
वैष्णवः परमेकान्तो नेतरो वैष्णवःस्मृतः॥

पूजा का माहात्म्य और भिन्न-भिन्न प्रकार से जो भगवान् विष्णु की पूजा उत्सव यज्ञ दान बताये हैं, इन सबका तात्पर्य यह है कि भक्त पर विष्णु भगवान् की कृपा हो जाय जिस पर वैष्णव संस्कारों से विष्णु भगवान् की कृपा या आशीर्वाद हो जाता है उनका जीवन-चरित्र ऐसा होता है—दान करना, दम इन्द्रियों का दमन, तप तपस्या, शौच पतिव्रता, आर्जव सरलता, शान्ति क्षमा, आनृशंसं सत्य वचन सज्जनों का संग परमेकान्त में रहना से वैष्णव के चिह्न हैं ९१-३५१

बृहत् हारीत स्मृति में स्मृति-प्रतिपाद्य आचार;व्यवहार प्रायश्चित्त के समुचित निर्णय के अतिरिक्त वैष्णवाचार, वैष्णवोपासना विष्णु इष्टी, विष्णु पूजन सांग सावरण; वैष्णव पूजा उत्सव; रथयात्रा एकादश्यादि व्रतोद्यापन; मण्डप-रचना आदि का सुचारु विधान निरूपण किया है ।

स्मृति संदर्भ

तृतीय भाग

याज्ञवल्क्य स्मृति

याज्ञवल्क्य स्मृति में तीन अध्याय हैं। प्रथमाध्याय में संस्कार आश्रम, ग्रह शान्ति आदि, द्वितीयाध्याय में राजधर्म, व्रतधर्म राजसभा, वादिप्रतिवादि का निर्णय, व्यवहार के भेद, गृहस्थ धर्म, दण्दनीति, दायभाग आदि, तृतीयाध्याय में सूतक, अशौच, पाप, पापों का प्रायश्चित्त, वानप्रस्थ और संन्यास के धर्मों का वर्णन है।

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
दानं दया दमः शान्ति सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥

स्नातकधर्मप्रकरणवर्णनम् : १२४७

भक्ष्याभक्ष्यप्रकरणवर्णनम् : १२५०

द्रव्यशुद्धिप्रकरणवर्णनम् : १२५२

दानप्रकरणवर्णनम् : १२५३

२. व्यवहाराध्याय:

सामान्यन्याय प्रकरणम्···१२६९

हस्ताक्षर कर दे एवं अपना तथा अपने पिता का नाम लिख दे। लेख बिना साक्षी के भी हो सकता है जो अपने हाथ से लिखा हुआ हो किन्तु वह बलपूर्वक लिखाया हुआ न हो। रुपया जितना देता जाए उस कागज के पीछे लिखता जाय। धन चुक जाने पर उस कागज को फ़ाड़ देवे या साक्षी के सामने ऋणी को वापस दे दें ८६-९६

दिव्य प्रकरणम्…१२७९

जब कोई साक्षी आदि प्रमाण न मिले तब दिव्य कराया जाता है।

दिव्य कितने प्रकार के होते हैं—

१—तुला, २—अग्नि, ३—जल, ४—विष, ५—कोश। ये दिव्य बड़े मामलों में किये जाते हैं छोटे व्यवहार में नहीं। १ तुला—तराजू बनाकर तोला जाता है जो तोलने पर ऊपर या नीचे जाता है उसकी विधि पुस्तक में लिखी है। २ अग्नि—लोहे के गोले को गरम कर दोनों हाथों में लेकर चलना होता है जो शुद्ध हो उसके हाथ नहीं जलते हैं। ३ जल—नाभी मात्र गहरे जल में तीर डालकर धुलाना पड़ता है। ४ विष--शुद्ध को खिलाने पर उसे जहर नहीं लगता। ५ कोश—किसी देवता का जल पिलाने से उसको अगर चौदह दिनों तक अनिष्ट नहीं हुआ तो शुद्ध समझा जाता है। ९७-११५

दायविभाग प्रकरणम् १२८१

पिता को अपनी इच्छा से विभाजन करने का अधिकार है ११६-११८

पिता के बाद भाई अपने आप विभाग किस प्रकार से करे और जो धन अविभाज्य है उसका वर्णन ११९-१२१

भाईयों का बटवारा और भाईयों के लड़कों का विभाग उसके पिता के नाम से होगा। जिन-जिन भाईयों का संस्कार नहीं हुआ उनका पैतृक धन से संस्कार और निर्वाह—बहनों को अपने हिस्से से चौथाई देकर विवाह करे १२२-१२७

जाति विभाग से बटवारा १२८-१३०

बारह प्रकार के पुत्रों का वर्णन १३१-१३५

के धन को दूसरा आदमी बेच लेवे तो धनवाले को मिल जाय और खरीददार अपना मूल्य ले जावे। खोया हुआ या गिरा हुआ द्रव्य किसी को मिल जाय तो उस वस्तु को पुलिस में जमा न करने पर पाने वाला दोष का भागी होता है। एक मास तक कोई न लेवे तो वह धन राजा का हो जाता है १७१-१७७

दत्ताप्रदानिकप्रकरणवर्णनम्—१२८८

अपने घर में जिस वस्तु को देने से विरोध न हो तथा स्त्री और बच्चों को छोड़कर गृहपति सब दान में दे सकता है। सन्तान होने पर सब दान नहीं कर सकता है तथा दी हुई वस्तु फिर दान नहीं हो सकती। १७८-१७९

क्रीतानुशयप्रकरणवर्णनम् : १२८८

क्रीतानुशय अर्थात् मूल्य लेने पर वापस किया जा सकता है। दस दिन तक बीज (अन्न) लौटाया जा सकता है। लोहे की चीजें एक दिन, बैल लेने पर पांच दिन, रत्न की परीक्षा आठ दिन तक, गाय तथा अन्य जीव जन्तु तीन दिन तक, सोना आग में तपाने पर घटता नहीं है और चांदी दो पल कम हो जाएगी इस प्रकार खरीदी हुई वस्तु तीन दिन तक वापस की जा सकती है १८०-१८४

संवित् व्यतिक्रम (अपने निश्चय को तोड़ना) जैसे बल पूर्वक किसी को पकड़कर गुलाम बना लिया हो।

निजधर्माविरोधेन यस्तु सामयिको भवेत्।
सोऽपि यत्नेन संरक्ष्यो धर्मो राजकृतश्च यः॥

अपने धर्म से मिला हुआ जो समय का धर्म और राजा के धर्म को भी पालन करना चाहिए। जो समुदाय का धन ले और जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ दे उसका सब कुछ छीनकर देश से निकाल देवे १८५-१९५

वेतनदानप्रकरणवर्णनम् : १२९०

जो पहले वेतन ले ले और समय पर उस काम को छोड़ दे उस से दूना धन लेना चाहिए १९६-२०१

द्यूतसमाह्वयप्रकरणवर्णनम् : १२६१

चोरों को पहचानने के लिए जूआ किसी स्थान पर करवाया जाता है और उसमें जीतने वाले से राजा के लिए दस रुपया ले लेना चाहिए २०२-२०६

वाक्पारुष्यप्रकरणवर्णनम् : १२६१

वाक् पारुष्य (अपशब्द कहने का दण्ड) इसी प्रकार पातक तथा उपपातक को दण्ड के उपयोग हैं २०७-२१४

किसी पर लाठी चलाना या किसी चीज से पीड़ा पहुंचाना पशुओं के अंगच्छेदन करना, पशु की इन्द्रिय काटना, और पेड़ों की टहनियों को काटना २१५-२३२

साहस प्रकरण वर्णनम् : १२६४

बलपूर्वक किसी की वस्तु को छीनना इसको साहस कहते हैं। जो जितने मूल्य की वस्तु छीन कर ले जावे उसको उससे दूना दण्ड दिलवाना चाहिए तथा छिपाने पर चार गुना दण्ड। स्वच्छन्दता से किसी विधवा स्त्री के साथ गमन करने वाला या बिना किसी कारण किसी को गाली देने वाला और झूठी शपथ करने वाला तथा जिस काम के योग्य न हो उसको करने को तैयार हो जाना एवं दासी के गर्भ को नष्ट कर देना, पशु के लिङ्ग को काट देना, पिता पुत्र गुरु और स्त्री को छोड़ने वाले को सौ पल दण्ड का विधान बताया है। धोबी दूसरे के कपड़ों को अपने पास रखे तो उसको तीन पल दण्ड। पिता और पुत्र की लड़ाई में जो गवाही देवे उसे तीन पल दण्ड। तराजू और बाटों को जो छल कपट से बना कर व्यवहार करे तो उसे पूरा दण्ड। जो कपट को सत्य कहे और सत्य को कपट कहे उसे भी साहस प्रकरण का दण्ड। जो वैद्य झूठी दवा बनावे उसको भी दण्ड। जो कर्मचारी अपराधी को छोड़ देवे उसको दण्ड। जो मूल्य लेकर वस्तु को नहीं देता है उसको भी दण्ड २३३-२६१

सम्भूयसमुत्थानप्रकरणम् : १२६७

कई आदमी मिलकर जो व्यापार करते हैं उनको उस व्यापार में

लाभ और हानि बराबर उठानी पड़ेगी । या उन लोगों ने पहले जो प्रतिज्ञा कर ली हो २६२-२६८

स्तेयप्रकरणवर्णनम् : १२९८

चोर को पकड़ने वाले को पहले उसके पैरों के चिह्न से या पहले जो चोरी में पकड़े गए हों, जुआरी, वेश्यागामी तथा शराबी और बात में अटपट करे तो उनको पकड़ लेना चाहिए । चोरी में पूछने पर जो सफाई नहीं दे उसे चोरी का दण्ड दिया जाता है । चोर को भिन्न भिन्न प्रकार से ताड़ना देकर चोरी पूछ लेनी चाहिए ।

विषाग्निदां पतिगुरुनिजापत्यप्रमापिणीम् ।
विकर्णकरनासोष्ठीं कृत्वा गोभिः प्रमापयेत् ॥

विष देनेवाली, अग्नि लगानेवाली, पति, गुरु और अपने बच्चों को मारनेवाली स्त्री के नाक कान काटकर जल में बहा देना चाहिए ।

क्षेत्रवेश्मवनग्रामविवीतखलदाहकाः ।
राजपत्न्यभिगामी च दग्धव्यास्तु कटाग्निना ॥

खेत, मकान और ग्राम इनको जलाने वाले को और राजा की स्त्री के साथ गमन करने वाले को आग में जला देना चाहिए २६९-२८५

स्त्रीसंग्रहणप्रकरणवर्णनम् : १३००

किसी स्त्री के केशों को पकड़ने या करधनी या स्तन मरदन करना या अनुचित हंसी करना ये चिह्न व्यभिचार के समझे जायेंगे । स्त्री के ना करने पर जबरदस्ती हाथ लगावे तो सौ पल और पुरुष के ना करने पर दुगुना दण्ड । किसी अलंकृत कन्या को हरण करे उसको कड़ा दण्ड यदि लड़की की इच्छा हो तो दण्ड नहीं होता है । पशु के साथ व्यभिचार करने वाले को सौ पल दण्ड। नौकरानी के साथ व्यभिचार करने वाले को दण्ड । जो वेश्या पैसा लेकर बाद में रोके तो उसे दूना दण्ड । किसी लड़के से या किसी साधुनी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करने वाले को चौबीस पल दण्ड । राजा की आज्ञा में रहकर जो कम या विशेष लिखे उसको दण्ड । छल से खोटे सिक्के

सोने को बेचने वाले तथा मांस के बेचने वाले को अङ्ग हीन करना चाहिए जो स्त्री अपने जार को चोर कहकर भगा देवे उसे पांच सौ पल दण्ड देना चाहिए। राजा के अनिष्ट कहने वाले को या राजा के भेद को खोलने वाले की जिह्वा काट लेनी चाहिए २८६-३१०

३. आशौचप्रकरणवर्णनम् : १३०३

दो वर्ष से कम उम्र के बच्चे को भूमि में गाड़ देना चाहिए। बच्चे के मरने पर सातवें या दसवें दिन दूध देना चाहिए १-६

किसी के मरने पर यदि उसी दिन घर में दूसरे का जन्म हो जाए तो पहले के सूतक से वह शुद्ध हो जाएगा। राजाओं को और यज्ञ में बैठे हुए ऋषियों को सूतक नहीं लगता है। ७-३४

आपद्धर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०७

आपत्ति में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कर्म से निर्वाह कर सकता है। परन्तु मांस तिल आदि आपत्ति में भी न बेचे।

लाक्षालवणमांसानि पतनीयानि विक्रये।
पयोदधि च मद्यन्च हीनवर्णकराणि च॥

अर्थात् लाख, लवण और मांस बेचने से पतित हो जाता है। कृषि, शिल्प, नौकरी, चक्रवृद्धि, इक्का हांकना और भीख मांगना इनसे आपत्ति काल में जीवन निर्वाह कर सकता है ३५-४४

वानप्रस्थधर्मप्रकरणवर्णनम् : १३०८

वानप्रस्थ स्त्री को अपने साथ ले जाए या अपनी सन्तान के पास छोड़ दे। वानप्रस्थ इन्द्रियों को दमन करने वाला, प्रतिग्रह न लेने वाला, स्वाध्याय करने वाला होना चाहिए। चान्द्रायण आदि से समय व्यतीत करे, वर्षा में ठण्डी जगह रहे, हेमन्त में गीले कपड़ों से रहे अर्थात् जितनी शक्ति हो उसी हिसाब से वन में तपस्या करता रहे ४५-५५

यतिधर्मप्रकरणवर्णनम् १३०९

यति सम्पूर्ण प्राणीमात्र का हित करनेवाला, शान्त और दण्ड धारण करनेवाला हो। यति के सब पात्र बांस और मिट्टी के होते हैं इनकी शुद्धि जल से हो जाती है। यति को राग

द्वेष का त्याग कर अपने आप की शुद्धि जिससे आत्मज्ञान का विकास हो ऐसा करना चाहिये ।

सत्यमस्तेयमक्रोधो ह्रीः शौचं धीर्धृतिर्दमः ।
संयतेन्द्रियता विद्या धर्मः सार्व उदाहृतः ॥

सत्य, अस्तेय, अक्रोध, पवित्रादि में सब धर्म बतलाये हैं ४६-६६

अध्यात्म ज्ञान का प्रकरण आया है । जैसे तप्त लौह पिण्ड से चिनगारी निकलती है उसी प्रकार उस प्रकाश पुंज आत्मा से यह समष्टि व्यष्टि संसार रूपी चिनगारी निकलती है । आत्मा अजर अमर है शरीर में आने से इसे जन्म लेना कहते हैं । सूर्य्र की तपन से वृष्टि फिर औषधि तथा अन्न होकर शुक्र हो जाता है । स्त्री पुरुष के संयोग से यह पञ्च-धातुमय शरीर पैदा होता है । एक एक तत्त्व से शरीर की एक एक चीज का बनना लिखा है । चौथे महीने में पिण्डाकार बनता है तथा पाचवें में अंग बनने लग जाते हैं । छठे महीने में बाल, नख, रोम और सातवें आठवें में चमड़ा, मांस बनकर स्मृति पैदा हो जाती है । इस प्रकार जन्म मरण के दुःख को दिखाया गया है । मनुष्य शरीर में कितनी नस कितनी धमनीं तथा मर्मस्थान हैं इन सबका वर्णन कर शरीर को अस्थिर अनित्य नाशवान बतला कर मोक्ष मार्ग में लगने का उपदेश किया गया है । योगशास्त्र, उपनिषदों के पठन एवं वीणा वादन से मन की एकाग्रता बताई है ।

वीणवादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तत्त्वज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छति ॥

वीणा वादन के तत्त्व को जाननेवाला और ताल के ज्ञानवाला मोक्ष मार्ग पा लेता है । इस प्रकार मोक्ष मार्ग के साधन और संसार के अनित्य सुखों के वैराग्य का वर्णन तथा कुण्डलिनी योग, ध्यान, धारणा और सत्य की उपासना एवं वेद का अभ्यास वताकर जीवन यात्रा का श्रेय नीचे लिखे श्लोक में स्पष्ट किया है—

न्यायागतधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः ।
श्राद्धकृत् सत्यवादी च गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥

न्याय से आये हुए धन से जीवन बितानेवाला, तत्त्व ज्ञान में जिसकी निष्ठा हो, अतिथि सत्कार तथा श्राद्ध करनेवाला, सत्यवादी गृहस्थी भी इस जन्ममरण से छूट जाता है ६७-२०५

प्रायश्चितप्रकरणवर्णनम् १३२३

पापी महापापी कर्म के अनुसार नरक भोगने के अनन्तर जब मनुष्य योनि में आते हैं तब ब्रह्महत्यारा जन्म से ही क्षय रोगी होता है। परस्त्री को हरने वाला, ब्राह्मण के धन को हरने वाला ब्रह्मराक्षस होता है। जो पाप को समझने पर भी प्रायश्चित्त नहीं करते है वे रौरव नरक में जाते हैं। इस प्रकार महानरकों का वर्णन आया है। महापापी चार हैं— ब्रह्म हत्यारा, सोने को चुराने वाला, गुरु की स्त्री से गमन करने वाला और मद्य पीनेवाला तथा जो इनके साथ रहता है वह भी महापातकी होता है। इसके बाद आगे के श्लोकों में उपपातकों की गणना की है। महापातकी को आमरणान्त प्रायश्चित्त बतलाया है अन्य पापों की शुद्धि के लिये चान्द्रायण आदि व्रत बतलाये हैं। गर्भपात और भर्तृहिंसा स्त्री के लिए महापाप है। शरणागत को मारने वाले, बच्चों को मारनेवाले, स्त्री के हिंसक और कृतघ्न की कभी शुद्धि नहीं होती है। सान्तपन कृच्छ्र, पर्णकृच्छ्र, पादकृच्छ्र, तप्तकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, कृच्छ्रातिकृच्छ्र, तुला पुरुष, चान्द्रायण व्रत और कृच्छ्रचान्द्रायणादि व्रत बतलाये गये हैं। ऋषिणों ने याज्ञवल्क्य से धर्मों को सुनकर यह कहा कि जो इसको धारण करेगा वह इस लोक में यश को प्राप्त कर अन्त में स्वर्गलोक को प्राप्त होगा। जो जिस कामना से धारण करेगा उसकी कामनायें पूर्ण सफल होंगी। ब्राह्मण इसको जानने से सत्पात्र, क्षत्रिय विजयी, वैश्य धनधान्य सम्पन्न, विद्यार्थी विद्यावान् होता है। इसको जानने और मनन करने से अश्वमेध यश के फल को प्राप्त होता है २०६-३३४

कात्यायन स्मृति

आपस्तम्बस्मृति के प्रधान विषय

१. गोरोधनादिविषये गोहत्यायाञ्च प्रायश्चित्तवर्णनम् : १३८७

आपस्तम्ब ऋषि से जब मुनियों ने गृहस्थाश्रम में कृषि कर्म गो पालन में अनुचित व्यवहार से जो दोष हो जाय उसका प्रायश्चित पूछा। आपस्तम्व ने बड़े सत्कार के साथ ऋषियों को बताया—औषधि देने में, बालक को दूध पिलाने में सावधानी करने पर भी विपत्ति आ जाय तो उसका दोष नहीं होता है। किन्तु औषधि तथा भोजन भी मात्रा से अधिक देना पाप है।

द्वौमासौ पाययेद्वत्सं द्वौमासौ द्वौ स्तनौ दुहेत्,
द्वौमासावेकवेलायां शेषकाले यथारुचि।
दशरात्राद्धं मासेन गौस्तु यत्र विपद्यते,
स शिखं वपनं कृत्वा प्रजापत्यं समाचरेत्॥

गाय के बन्धन कैसी रस्सियों से कैसे कीले पर बांधना चाहिए १-३४

२. शुद्ध्यशुद्धिविवेकवर्णनम् : १३९०

शुद्धि और अशुद्धि का वर्णन, जैसे—काम करने वाले मनुष्यों को जल पानी की छूतपात नहीं होती है। वापी, कूप, तड़ाग जहां खारिया जल निकलता हो वह अशुद्ध नहीं होता है। पेशाब मल तथा थूकने से जल अशुद्ध हो जाता है १-१४

३. गृहेऽविज्ञातस्यान्त्यजातेर्निवेशने-बालादि विषये च प्रायश्चित्तम् : १३९२

अन्य जाति का परिचय न होने से अज्ञात दशा में घर में रह जाय तो उस द्विजाति को चान्द्रायण या पराक प्राजापत्य व्रत करने का विधान १-१२

४. चाण्डालकूपजलपानादौ संस्पर्शे च प्रायश्चित्तम् : १३९३

चाण्डाल के कूप से जल पान पर प्रायश्चित्त १-१३

—०—

लघुशङ्खस्मृति

१. इष्टापूर्तकर्मणोःफलाभिधानवर्णनम् : १४०८

इष्टापूर्त का माहात्म्य । गङ्गा में अस्थि प्रवाह का माहात्म्य । पितृ कर्म गया श्राद्ध का माहात्म्य । एकोद्दिष्ट श्राद्ध न कर पार्वण श्राद्ध करना व्यर्थ है । प्रति सम्वत्सर क्षयाह पर श्राद्ध करने का निर्णय सपिण्डी करने की विधि । पिता जीवित हो तो माता की सपिण्डी दादी के साथ, पिता हो तो पिता के साथ माता का सपिण्डीकरण श्राद्ध न करे । अपुत्र स्त्री पुरुष का पावण श्राद्ध न करे केवल एकोद्दिष्ट करे । संक्षिप्त प्रायश्चित्त का विधान वर्णन किया है १-७१

शङ्खस्मृति

१. ब्राह्मणादिनां कर्म : १४१५

चातुर्वर्ण्य के पृथक्-पृथक् कर्म, यथा ब्राह्मण का यजन-याजन, अध्ययन-अध्यापनादि, इस प्रकार चार वर्ण के पृथक्-पृथक् कर्मों का वर्णन १-८

२. ब्राह्मणादिनां संस्कार : १४१६

गर्भाधान से उपनयन पर्यन्त संस्कारों का विधान १-१२

३. ब्रह्मचर्याद्याचार : १४१८

ब्रह्मचर्य, विद्याध्ययन काल का आचरण तथा आचार्य, गुरु, उपाध्याय की व्याख्या । माता-पिता गुरु के पूजन का महत्त्व । ब्रह्मचारी के नियम व्रत तथा आचरण १-१२

४. विवाहसंस्कार : १४२०

आठ प्रकार के विवाहों की विधि का वर्णन १-१५

१७. क्षत्रियादिवधे-यवाद्यपहारे-व्रतवर्णनम् : १४४७

गोश्चक्षीरं विवत्सायाः संधिन्याश्च तथा पयः ।
संधिन्यमेध्यं भक्षित्वा पक्षन्तु व्रतमाचरेत् ॥ २९ ॥
क्षीराणि यान्यभक्ष्याणि तद्विकाराशने बुधः ।
सप्तरात्रं व्रतं कुर्याद्यदेतच्चपरिकीर्तितम् ॥ ३० ॥

१८. अघमर्षण, पराक, वारुणकृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, सान्तपनादिव्रत : १४५३

—०—

लिखितस्मृति

१. इष्टापूर्तकर्मवृषोत्सर्गगयापिण्डदानषोडश श्राद्धानांवर्णनम् : १४५५

शङ्खलिखित स्मृति

१. वैश्वदेवमकृत्वैवभुञ्जानस्यकाकयोनिवर्णनम् : १४६४

बलि वैश्वदेव, अतिथि पूजन का महत्व बताया है ।

परान्नं परवस्त्रं च परयानं परास्त्रियः ।
परवेश्मनि वासश्च शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥

वशिष्ठ स्मृति

२१. ब्राह्मणीगमने शूद्रवैश्यक्षत्रियाणां प्रायश्चित्त १५२४

प्रतिलोम विवाह में उग्र प्रायश्चित्त, यथा शूद्र पुरुष ब्राह्मणी के साथ सहवास करे उस शूद्र को अग्नि में जला देना। इस प्रायश्चित्त के देखने से विचार होता है शिष्ट शान्ति प्रधान धर्म प्रवक्ता होने पर भी प्रतिलोम विवाह पर अपने उग्र विचार को प्रकट करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि प्रतिलोम सन्तान से संस्कृति का नाश हो जाता है। संस्कृति के नाश से राष्ट्र का नाश अवश्यम्भावी है १-३६

२२. अयाज्ययाजनादि प्रायश्चित्त १५२७

यज्ञ करने में जिन असंस्कृत पुरुषों का अधिकार नहीं है और लोभवश जो ब्राह्मण उनसे यज्ञ करावें उस यज्ञ से सृष्टि में उत्पात होने के कारण उन ब्राह्मणों को प्रायश्चित्त करने को लिखा है १-१०

२३. ब्रह्मचारिण: स्त्रीगमने प्रायश्चित्त १५२८

ब्रह्मचारी को स्त्री समागम होने से पातित्य का प्रायश्चित। भ्रूण हत्या, कुत्ता के काटने पर, पतित चाण्डाल से सम्बन्ध करने पर कृच्छ्र व्रत, चान्द्रायणादि व्रतों की व्यवस्था बताई है १-४३

२४. कृच्छ्रातिकृच्छ्रविधिवर्णनम् : १५३२

कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्रायण की परिभाषा १-८

२५. रहस्यप्रायश्चित्तवर्णनम् : १५३२

अविख्यापितदोषाणां पापानां महतां तथा।
सर्वेषां चोपपापानां शुद्धिं वक्ष्याम्यशेषत:॥

गुप्त रखे हुए जो अपने पाप हैं उन रहस्य पापों का पृथक् पृथक् प्रायश्चित्त बताए हैं १-१२

२६. साधारणपापक्षयोपायविधान : १५३४

प्राणायाम, सन्ध्या, जप, सावित्री जप, पुरुष सूक्त आदि से पापों के क्षय होने का वर्णन किया है। धर्मशास्त्र के पढ़ने से पापक्षय होता है ऐसा बताया है १-२०

—०—

औशनस संहिता

औशनस स्मृति

१. ब्रह्मचारिणांक्रमागतकर्तव्यवर्णनम् : १५४९

इस अध्याय में शौनकादि ऋषियों ने भार्गव को विनम्र भाव से प्रणाम कर धर्मशास्त्र का निर्णय पूछा। उत्तर में औशनस ने सांस्कृतिक जीवन का स्तर विधिवत् उपनयन वेदाध्ययन से प्रारम्भ कर मनुष्य के आचरण का चित्रण वैज्ञानिक भित्ति पर किया जिस प्रकार के संस्कृत जीवन से मनुष्यता का सच्चा विकास हो जाए १-६४

२. ब्रह्मचारिप्रकरण शौचाचारवर्णनम् : १५५६

किस किस समय आचमन कर शुद्ध होना चाहिए यहां से प्रारम्भ कर ब्रह्मचारी के सम्पूर्ण कर्म शौचाचार ब्रह्मचारी की शिक्षा पद्धति का सुचारु निरूपण किया है।

३. ब्रह्मचारिप्रकरणे शौचाचारवर्णनम्

विद्या पढ़ने की विधि, गुरु के प्रति व्यवहार, ब्रह्मचारी के धर्म, वेदाध्ययन की आवश्यकता स्वाध्यायी ब्रह्मगति को प्राप्त करता है। भोजन की विधि, पञ्च प्राणाहुति की विधि, प्रातः कृत्य का विधान, पिण्डदान का माहात्म्य बताया है। अमावास्या अष्टका आदि श्राद्धकाल, पात्र ब्राह्मणश्राद्धकाल, अस्थि संचयन, गया श्राद्ध माहात्म्य किस अन्न से पितरों की कितने काल तक तृप्ति होती है। श्राद्ध में किस किस अन्न को वर्जित किया है। पिण्डोदक नवश्राद्ध आदि का विस्तृत वर्णन किया है १-१४७

४. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७४

श्राद्ध में कैसे ब्राह्मणों को आमन्त्रण करना तथा उनके लक्षण। मूर्ख ब्राह्मणों को भोजन कराने पर पितरों का पतन आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है १-३६

५. श्राद्धप्रकरणवर्णनम् : १५७८

पिण्डदान विधि और उसके मन्त्र विस्तार से बताए गए हैं १-९९

—०—

बृहस्पति स्मृति

—०—

लघुव्यास स्मृति

२. कर्तव्यकर्म, शरीरशुद्धि, नित्यकर्म, पञ्चमहायज्ञ तथा भोजन आदि अनेक प्रकरणवर्णनम् : १६२६

नित्यकम का विधान, देव यज्ञ, पितृ यज्ञादि, पञ्च यज्ञ, जप करने की विधि तथा जपमाला कैसी और किस वस्तु की होनी चाहिए यह बताया गया है। तीर्थस्नान एवं अघमर्षण सूक्त का माहात्म्य। शिवपूजन मन्त्र, वैश्वदेव कर्म भूतबलि, अतिथि का पूजन, भोजन करने का नियम,काल, ग्रहण काल में भोजन करने का निषेध, शयन का नियम, कैसी शय्या होनी चाहिए तथा किस ओर सिर करना इत्यादि मानवाचार का विशदीकरण किया गया है १-९२

—०—

वेदव्यास स्मृति

१. धर्माचरणदेशप्रयुक्त-वर्ण-षोडशसंस्कारवर्णनम् : १६३१

वण विभाग अनुलोम प्रतिलोमों की भिन्न-भिन्न जाति की संज्ञा उनके कर्म गर्भाधानादि संस्कार यज्ञोपवीत धारण काल जाति परत्व एवं ब्रह्मचारी के व्रत १-४१

२. विवाहविधि, गृहस्थधर्म, स्त्रीधर्माभिधान आदि

यदि स्नातक द्वितीयाश्रम (गृहस्थाश्रम) में जाना चाहे तो विधिवत् सवर्ण कन्या के साथ विवाह करे अन्य से नहीं। पुरुष विवाह करने पर ही पूर्ण शरीरधारी होता है १-१८

स्त्री के कर्तव्य का वर्णन आया है, यथा—

पत्युः पूर्वं समुत्थाय देहशुद्धि बिधाय च।
उत्थाप्य शयनाद्यानि कृत्वा वेश्मविशोधनम् ॥

पति के जागने से प्रथम शयन से उठकर घर की शुद्धि, वस्त्रादिकों को यथास्थान में रखे १९-४१

पुरुष का कर्तव्य स्त्री के प्रति "गच्छेद्युग्मासु रात्रिषु" इत्यादि। यह भारतीय संस्कृति का नियम प्रत्येक गृहस्थी को आदरणीय एवं आचरणीय है ४२-५७

३. सस्नानादि, तर्पण, पाकयज्ञादिविधि

गृहस्थी के नित्य नैमित्तिक काम्य कर्मों का निर्देश तथा उषाकाल में जागकर कर्म में प्रवृत्त होने की विधि। सन्ध्या कर्म, पितृ तर्पण, वेदाध्ययन, धर्मशास्त्र इतिहास को प्रातःकाल पढ़ने का विधान १-२०

पाकयज्ञ विधान, दान का माहात्म्य, गुणवान् को श्राद्ध में भोजन कराना, वेदादि शास्त्र के ज्ञाता को ही ब्राह्मणत्व में हेतु बताया है। एक पंक्ति में सबको समान भोजन देना, शूद्रान्न भक्षण का दोष २१-७१

४. गृहस्थाश्रमप्रशंसापूर्वकतीर्थधर्मवर्णनम् १६४८

सांस्कृतिक जीवनी का वर्णन, माता पिता ही परम तीर्थ है। दान के विषय में यथा –

यद्ददाति यदश्नाति तदेव धनिनां धनम्।
अन्ये मृतस्य क्रीडन्ति दारैरपि धनैरपि॥

दान देना तथा धन का भोग करना यही अपना धन समझो। धन होने पर दाता भोक्ता बनो यह धार्मिक नैतिक अनुशासन बताया है। पढ़े हुए पुरुष का जीवन सफल और अनपढ़ का जीवन निरर्थक है। आचार्य आदि की परिभाषा, सुपात्र को दान देने से ही वह सफल होता है १-७२

देवल स्मृति

प्रायश्चित्तवर्णनम् १६५५

समुद्र तट पर ध्यानावस्थित देवल से ऋषियों ने पूछा कि महाराज ! म्लेच्छों के साथ जिनका सम्पर्क हो गया है अर्थात् जो पुरुष बलात् या स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन कर चुका है उसको क्या करना चाहिये जिससे वह पुनः अपनी जाति में पावन हो जाय। इसके उत्तर में ऋषि देवल ने उन सबका प्रायश्चित्त विभिन्न प्रकार से बताया प्रारम्भ में अपेय पान अभक्ष्य भक्षण से सब प्रकार के सांसर्गादि पातित्य कर्मों में पृथक्-पृथक् प्रायश्चित्त कर सबकी शुद्धि बताई है। प्रायश्चित्तों के करने पर अन्त में गङ्गा स्नान से शुद्धि बताई है। इस स्मृति में जाति शुद्धि, देह शुद्धि और समाज शुद्धि पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है १-९०

—०—

प्रजापति स्मृति

इस स्मृति में एक ही श्राद्ध कर्म का पूर्णाङ्ग पूर्ण विधि से वर्णन किया गया है। शुक्राचार्य के कथन से श्राद्धकल्प में उथल पुथल हो गई थी। श्राद्ध कर्म के न करने से द्विजाति बलहीन और राक्षस बल हरण करने वाले हो गये थे। अतः श्राद्ध कल्प पर प्रजापति श्राद्ध के सम्बन्ध में श्राद्ध के भेद, श्राद्ध विधि, श्राद्ध के मन्त्र सम्पूर्ण कहे हैं। इस स्मृति के अध्ययन से श्राद्ध कर्म की आवश्यकता तथा सम्पूर्ण विधि मालूम हो जायगी। श्राद्ध के नियम, श्राद्ध काल, आभ्युदयिक श्राद्ध का माहात्म्य, श्राद्ध की सामग्री, श्राद्ध में पुण्य पाठ, श्राद्ध करने से पितरों की तृप्ति एवं श्राद्धकर्ता दीर्घायु, पुत्रवान्, धनवान, ऐश्वर्यवान् होता है। १-१९८

लाघ्वाश्वलायन स्मृति

१. आचारप्रकरणवर्णनम् १६८३

आश्वलायन गृह्यसूत्र के निर्माता भी हैं। इस स्मृति में शंख, औशनस, व्यास और प्राजापत्यादि स्मृतियों की रीति पर व्यवहार प्रकरण का स्थान नहीं है केवल धार्मिक और सांस्कृतिक आचार का ही विस्तृत वर्णन है। इससे इन स्मृतियों की प्राचीनता का अनुमान होता है। यथा— "धर्मैकताना पुरुषा यदासन् सत्यवादिनः" जब जनता धर्म परायण रही उस समय सब सत्यवादी होते थे। इस कारण व्यवहार अर्थात् दण्डदापन राजशासन विधि की आवश्यकता न होने से व्यवहार प्रकरण का विस्तार नहीं रखा गया है। इस अध्याय में मुनियों ने आश्वलायन आचार्य से द्विजातियों के धर्म कहकर मनुष्यों के सांस्कृतिक जीवन के आचार पर प्रश्न किया, साथ ही यह बताया कि इस प्रकार के आचरण करनेवाले मनुष्य स्वर्गगामी होते है। द्विज शब्द यहां पर मनुष्य शब्द का वाचक है। प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में उठना, शौचाचार एवं स्नान के मन्त्रों का वर्णन किया है (१-३९) सूर्यार्घ्य, सायं, प्रातः और मध्याह्न संध्या तथा सूर्योपस्थान की विधि ४०-६८

अग्निहोत्र की विधि तथा स्त्री के साथ ही अग्निहोत्र कर्म हो सकता है ६९-७२

वेदाध्ययन की विधि ७३-९०

तर्पण विधि ९१-११३

श्राद्ध कर्म, बलि वैश्वदेव, हन्तकार एवं श्राद्धकाल का वर्णन ११४-१४२

पञ्च महायज्ञ, मधुपर्क विधान, वैश्वदेव तथा काशी में शरीर त्याग से मुक्ति का होना बताया है १४३-१८९

२. स्थालीपाकप्रकरणम् : १७०३

इस सम्पूर्ण अध्याय में स्थालीपाक यज्ञ का सांगोपांग विधान है। जो सामयिक गृहस्थी होते हैं उनको स्थालीपाक यज्ञ के पूर्व दिन पूर्णमासी को प्रायश्चित्त कर संकल्प करना चाहिए कि मैं कल स्थालीपाक यज्ञ करूंगा। अन्वाधान कर स्थालीपाक यज्ञ की एक हाथ चौरस वेदी बनाकर गोबर से लेपन कर रेखोल्लेखन, प्रोक्षण कर्म, अग्निस्थापन, अग्निपूजन, ध्यान, परिस्तरण, प्रोक्षणी पात्र, स्रुक् चमस, आज्य पात्र, स्रुक स्रुव स्थापन, समिधाहरण आदि सम्पूर्ण विधि लिखी है १-८०

३. गर्भाधानप्रकरणम् : १७०८

गर्भाधान की विधि का वर्णन किया है १-१९

४. पुंसवनानवलोभनसीमन्तोन्नयनप्रकरण : १७१०

पुंसवन सीमन्त कर्म की विधि तथा समय का वर्णन है १-१९

५. जातकर्मप्रकरण : १७१२

जातकर्मसंस्कार की विधि १-५

६. नामकरणप्रकरण १७१३

नामकरण की विधि और नाम किस अक्षर से किस वालक का करना इसका निर्णय लिखा है। कुमार के कान में मन्त्र जप कर पिता उसके नाम को कहे १-७

७. निष्क्रमणप्रकरण : १७१४

चतुर्थ मास में निष्क्रमण कर्म लिखा है १-३

८. अन्नप्राशनप्रकरण : १७१५

छठे महीने में अन्नप्राशन की व्यवस्था बताई है १-५

९. चौल (चूड़ाकरण) कर्मप्रकरण १७१५

चूड़ाकर्म संस्कार तृतीय वर्ष में करने का विधान। चूड़ाकर्म से विवाह पर्यन्त लौकिकाग्नि में हवन करने का विधान बताया है १-२२

१०. उपनयनप्रकरण : १७१८

उपनयन संस्कार की विधि। ब्राह्मण कुमार का अष्टम वर्ष में उपनयन संस्कार, मौञ्जी कर्म, मेखला धारण, गायत्री उप-

१८. नान्दीश्राद्धेपितृप्रकरण : १७३८

आधान काल, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन; महाव्रत, गोदान, संस्कार समावर्तन और विवाहादि सम्पूर्ण मंगल कार्यों में नान्दी श्राद्ध करने का नियम बताया है १-६

१९. विवाहहोमेपरिवर्ज्यप्रकरण : १७३९

किसी शुभ कार्य में नान्दी श्राद्ध होने के अनन्तर जब तक मण्डप का विसर्जन न हो तब तक सपिण्डता होने पर भी कोई अशुभ कर्म प्रेत कृत्य मुण्डनादि करने का निषेध बताया है १-६

२०. प्रेतकर्मविधि : १७४०

पुत्र को पिता आदि का प्रेत कर्म, शव दाह आदि प्रेत कर्म करने का विचार। अशौच का निरूपण दिखाकर अन्त में आत्मनिष्ठ को किसी प्रकार का अशौच नहीं लगता है १-९२

२१. लोकनिन्दाप्रकरण : १७४९

सदाचार भ्रष्ट क्रियाहीन की निन्दा तथा निन्दित कर्म से उत्पन्न सन्तान असंस्कृत है जिनके यहां यजन करने वाले ब्राह्मणों को निन्दित बताया है १-१९

२२. वर्णधर्मप्रकरण : १७५१

वर्णधर्म—ब्राह्मण की श्रेष्ठता यदि वह वेदज्ञ हो, वेदों का उपदेश कर्ता हो। ब्राह्मण का अपमान करना एवं उससे सेवा कराने में पाप बताया है १-२४

२३. श्राद्धप्रकरण : १७५३

श्राद्ध कर्म की विधि एवं उसका माहात्म्य। इसे विधि पूर्वक करने वाले की सब कामना सफल होकर सायुज्य मुक्ति होती है तथा पितरों की प्रसन्नता से वह सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर ज्ञाननिष्ठ होता है १-११३

२४. श्राद्धोपयोगीप्रकरण १७६४

श्राद्ध करने का माहात्म्य। जो व्यक्ति क्षयाह में आलस्य या प्रमाद से माता पिता का श्राद्ध विधिवत् नहीं करता है उसके

पितर उस सन्तान से जैसे निराश होते हैं वैसे ही वह सन्तान भी अधोगति को प्राप्त होती है। जो माता पिता का विधिवत् अर्थात् श्राद्ध करने की विधि बताई है जैसे योग्य ब्राह्मण श्राद्ध में निमन्त्रित किए जाते हैं उस पूर्ण विधि से जो श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त होते हैं। वह पुरुष आत्मनिष्ठ होकर स्वयं इस संसार से तर जाता है एवं दूसरों को भी तार देता है १-३१

—०—

बौधायन स्मृति

१. सशिष्ट धर्म वर्णन

बौधायन स्मृति में धर्म की प्रधानता अर्थ की गौणता प्राचीन वैदिकाचार का वर्णन है। इसमें मुख्य तीन प्रश्नों का निर्णय है। प्रथम प्रश्न—"उपदिष्टो धर्मः प्रति वेदम्" "तस्यानुव्याख्यास्यामः" "स्मार्तो द्वितीयः" "तृतीयः शिष्टागमः"। "उपदिष्टो धर्मः प्रतिवेदम्" इसकी व्याख्या १२ अध्यायों में क्रमशः वर्णन की गई है। "शिष्टागम" की परिभाषा स्वयं बौधायन ने की है। "विगतमत्सरनिरहंकारकुम्भीधान्या अलोलुपदम्भदर्पलोभमोहक्रोधविवर्जिताः" धर्म का ज्ञान वेदों से होता है। वेद के अभाव में स्मृति ग्रन्थों से शिष्ट पुरुषों द्वारा परिषद् का निर्णय। परिषद् का निर्णय इस प्रकार बताया है—

चातुर्वैद्यं विकल्पी च अङ्गविद् धर्मपाठकः।
आश्रमस्थास्त्रयो विप्राः पर्षदेषा दशावरा॥

वेदस्मृत्यादिज्ञान से रहित परिषद् को प्रमाणित नहीं बताया है। यथा—

यथा दारुमयोहस्ती यथा चर्ममयोमृगः।
ब्राह्मणश्चानधीयानस्त्रयस्ते नामधारकाः॥

उत्तर तथा दक्षिण में जो आचार हैं उन पर विप्रतिपत्ति और आर्यावर्त की सीमा का वर्णन। यह धर्मशास्त्र यज्ञ संस्कारादि आर्यावर्त ब्रह्मावर्त के लिए ही है १-३७

२. ब्रह्मचारी धर्म

ब्रह्मचारी के नियम अष्टम वर्ष में ब्राह्मण का उपनयन तथा ऋतु परत्व उपनयन काल, वसन्त में ब्राह्मण, ग्रीष्म में क्षत्रिय एवं शरद् में वैश्य का उपनयन समय, मौञ्जी बन्धन, भैक्ष्यचर्या एवं ब्रह्मचारी को शिक्षा, अवकीर्णी का दोष, ब्रह्मचर्य का माहात्म्य। धर्म क्या है? १-५५

३. स्नातकधर्म

धर्म के निर्णय तथा स्नातक के नियम एवं व्रत १.१३

४. कमण्डलुचर्याभिधान : १७७५

स्नातक के शौचाचार, कमण्डलु से जल के प्रयोग का विधान एवं रीति बताई गई है १-२८

५. शुद्धिप्रकरण : १७७७

प्रथम प्रश्न के ही प्रसंग में इस अध्याय का वर्णन किया है। शुद्धि का विधान है। यथा—

अद्भिः शुध्यन्ति गात्राणि बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।
अहिंसया च भूतात्मा मनः सत्येन शुध्यति, इति॥

यहां से शरीर, बुद्धि, देह और मनकी शुद्धि बताकर यज्ञोपवीत धारण की रीति तथा उसकी शुद्धि पादप्रक्षालनादि, नदी में स्नान की रीति, वस्तु भाण्डादि की शुद्धि, अविज्ञात भौतिक जीवों की षट् प्रकार की शुद्धि, आसन, शय्या और वस्त्र की शुद्धि के सम्बन्ध में, शाक, फल, पुष्पों की प्रक्षालन से ही शुद्धि बताई है।

अशौच में सपिण्डता को लेकर दस दिन में शुद्धि होती है। कुत्ते के काटने पर प्राणायामादि से शुद्ध एवं अभक्ष्य का वर्णन। गाय का दूध गाय से सूतने पर दस दिन के अनन्तर शुद्ध होता है। इस प्रकार सब बातों की शुद्धि करनी धर्म का अङ्ग बताया है १-१६३

प्रायश्चित्तप्रकरण : १८००

दायविभागवर्णनम्

सन्ध्योपासनाविधि : १८१७

मध्याह्नस्नानविधि तथा ब्रह्मयज्ञाङ्गतर्पण : १८२०

पञ्चमहायज्ञविधि तथा आश्रमधर्मनिरूपण : १८२७

शालीनयायावराणामात्मयाजिनां प्राणहुति व्याख्यानं : १८३०

श्राद्धाङ्गाग्नौकरणादिविधिनिरूपणम् : १८३३

—०—

गौतम स्मृति

५-६ गृहस्थाश्रमवर्णनम् : १८८७

गृहस्थाश्रम में गृहस्थ के कर्तव्य और गृहस्थाश्रम का वर्णन ।

७. आपद्धर्मवर्णनम् : १८८९

आपतकाल में वर्णाश्रमी दूसरे वर्ण के कर्म को भी कर सकता है ।

८. संस्कारवर्णनम् : १८८९

संस्कृत जीवन की गरिमा—

द्वौलोके धृतव्रतौ राजा ब्राह्मणश्च बहुश्रुतस्तयो श्चतुर्विधस्य मनुष्य-जातस्यान्तः सञ्ज्ञानाञ्चलन पतनसर्पणामायत्तंजीवनं प्रसूतिरक्षणम-संकरोधर्मः ।

जिसका संस्कार होता है उसमें सभी उदात्तगुणों का आधान होने से ब्राह्मी तनु की प्राप्ति का अधिकार आ जाता है ।

९. कर्तव्याकर्तव्यवर्णनम् : १८९०

स्नातक गृहस्थ-जीवन का प्रवेशार्थी है वह विधि विहित विद्या का साङ्गोपांग अध्ययन कर भविष्य के गुरुतर उत्तरदायित्व को वहन कर आदर्श रूप से कर्तव्य पालन करता हुआ अपना, समाज का राष्ट्र का हित सम्पादन करता है—स्नातक की आदर्श दिनचर्या उसके नियम और आचार का वर्णन ।

सत्यधर्मा आर्यवृत शिष्टाध्यापक शौचशिष्टः
श्रुतिनिरतः स्यान्नित्यमहिंस्रो मृदुदृढकारी दमवान
शील एवमाचारो मातापितरौ पूर्वापरान्सम्बन्धान्
दुरितेभ्यो मोक्षयिष्यन् स्नातकः शश्वद्ब्रह्मलोकान्न च्यवते ।

१०. वर्णानांवृत्तिवर्णनम् : १८९३

ब्राह्मणक्षत्रियादि वर्णों की पृथक्-पृथक् आजीविका वृत्ति ।

११. राजधर्मवर्णनम् : १८९४

राजधर्म का निर्देश—

न्यायपूर्वक प्रजापालन राजा का परम धर्म है ।

१२. विविध पापकरणे दण्डविधानवर्णनम् : १८९६

भिन्न-भिन्न पापकर्म के दण्ड विधि का निरूपण ।

१३. साक्षीणां विधावर्णनम् : १८९७

साक्षियों का वर्णन ।

१४. आशौचवर्णनम् : १८९८

आशौच का प्रकरण ।

१५. श्राद्धविवेकवर्णनम् : १८९९

श्राद्ध का निर्णय तथा श्राद्ध कर्म में कौन ब्राह्मण पूज्य और कौन अपूज्य है ।

१६. अनध्यायवर्णनम् : १९०१

वेदादि शास्त्रों के अनध्याय काल का वर्णन ।

१७. भक्ष्याभक्ष्यप्रकरणम् : १९०२

भक्ष्य एवं अभक्ष्य पदार्थों का निरूपण ।

नित्यंमभोज्यं केशकीटावपन्नं रजस्वला कृष्ण शकुनिपदोपहतं भ्रूणघ्न प्रेक्षितं गवोपघ्रातं भावदुष्टं शुक्तं केवलमदधि पुनः सिद्धं पर्युषितम-शाक भक्ष्य स्नेह मांस मधून्युत्सृष्ट—तथाह मनुः गोश्चक्षीरमनिर्द-शायाः सूतके चा जामहिष्योश्च मेधातिथि भाष्यम् नित्यमाविकमपेय-मौष्ट्रमैकशफञ्चस्यन्दिनीयमसू सन्धिनीनांचयाश्चव्यपेतवत्सा··· आदि ।

नोट—पाराशर आदि प्रायः सभी शास्त्रों में इसका वर्णन है ।

१८. स्त्रीषु ऋतुकाले सहवास प्रकरणम् : १९०३

ऋतुकाल में भार्या के साथ सहगमन की विधि ।

१९. प्रतिषिद्धसेवनेप्रायश्चित्तमीमांसावर्णनम् १९०४

निषिद्ध वस्तुओं के व्यवहार करने में प्रायश्चित्त का वर्णन ।

२०. विविधपापानांकर्मविपाकवर्णनम् : १९०६

पृथक्-पृथक् पापों के कर्मफल का विपाक ।

२१. सर्वपातकेषुशान्तिवर्णनम् : १९०७

सब प्रकार के पातकों में शान्ति कर्म की आवश्यकता ।

२२. निषिद्धकर्मणांजन्मान्तरेविपाकवर्णनम् : १९०८

निषिद्ध काम करने वाले का जन्मान्तर में कर्म का विपाक दुःख भोग आदि का वर्णन है ।

—०—

वृद्धगौतम स्मृति

ते यान्तिनरशार्दूल ब्रह्मलोकमसंशयम् ।
सावित्रीमात्रसारोऽपि वरोविप्रः सुयन्त्रितः ।। २६ ।।
नायन्त्रितश्चतुर्वेदी सर्वाशीसर्वविक्रयी ।

विप्र प्रशंसा—

विप्रप्रसादाद्धरणीधरोऽहं
विप्रप्रसादादसुराञ्जयामि ।
विप्रप्रसादाच्चसदक्षिणोऽहं
विप्रप्रसादादजितोऽहमस्मि ।। ५७ ।।

५. जीवस्यशुभाशुभकर्मवर्णनम् : १९४६

६. सर्वदानफलवर्णनम् : १९५८

ऐसे ब्राह्मणों के लक्षण जिन्हें दान देने से मनुष्य दुःखों से छूट जात है। यथा—

ये क्षान्तदान्ताश्च तथाभिपूण
जितेन्द्रियाः प्राणिवधेनिवृत्ताः ।
प्रतिग्रहे सङ्कुचिता गृहस्था-
स्ते ब्राह्मणस्तारयितुं समर्थाः ।।

सत्पात्र और पूज्य ब्राह्मण के शुभलक्षण—

ब्राह्मणो यस्तु मद्‌भक्तो मद्याजीमत्परायणः।
मयि सन्न्यस्त कर्मा च स विप्रस्तारयिष्यति ॥

७. वृषदानमहत्त्ववर्णनम् : १९७५

वैशम्पायन से पूछा कि दान धर्म को सुनने पर मुझे जिज्ञासा हुई है कि आप और-और धर्मों को भी बतलाइये १-४

दश गौ के दान के समान एक बैल का दान पुष्ट बैल का दान हजार गोदान के समान कहा गया है।

दशधेनु समोऽनड्‌वानेकोऽपि कुरुपुंगव।
मेदोमांस विपुष्टांगो नीरोगः पापवर्जितः ॥

इसके दान करने से ब्राह्मण खेत को जोत सकते हैं और ज्ञानपूर्वक अन्नोत्पादन कर सुन्दर स्वथ्य दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न कर सृष्टि की उत्तरोत्तर उन्नति करते हैं।

अनेक प्रकार के दान जैसे मन्दिरों में भजन कीर्तन, प्याऊ लगाना, वृक्षारोपणवर्णन ५-१३३

८. पञ्चमहायज्ञवर्णनम् : १९८७

युधिष्ठिर के प्रश्न पञ्चयज्ञ विधान पर १-७

पञ्चमहायज्ञ करने की आवश्यकता ८-१८

युधिष्ठिर का स्नानविधि पर प्रश्न १९

स्नान करने की विधि और स्नान के साथ क्या-क्या करना चाहिए। सन्ध्या देवर्षि पितृतर्पण करके ही जल से निकलना चाहिए। बिना तर्पण किए वस्त्र निष्पीड़न करने से देवता, ऋषि और पितर शाप देते हुए निराश होकर लौट जाते हैं। २०-७२

अतर्पयित्वा तान्पूर्वं स्नानवस्त्रन्नपीडयेत्।
पीडयेद्यदितन्मोहाद्देवाः सर्षिगणास्तथा ॥
पितरश्च निराशास्तं शप्त्वा यान्तियथागमम् ॥

विभिन्न प्रकार के पुष्पों द्वारा पूजा करने के माहात्म्य पर प्रश्न ? ७३

चढ़ाने योग्य पुष्पों का वर्णन और वर्जित पुष्पों का निषेध ७४-८३

९. कपिलादानप्रशंसावर्णनम् : १९९९

कपिलाह्यग्निहोत्रार्थे विप्रार्थे च स्वयम्भुवा।
सर्वतेजः समुद्धृत्यः निर्मिता ब्रह्मणापुरा ॥ २३ ॥

गो सहस्त्रञ्चयोदद्यादेकाञ्चकपिलांनरः।
समन्तस्यफलम्प्राह ब्रह्मा लोकपितामहः ॥

१०. कपिलागोप्रशंसावर्णनम् : २००७

यस्यैताः कपिलाः सन्ति गृहे पापप्रणाशना।
तत्रश्रीविजयः कीर्तिः स्थिताः नित्यं युधिष्ठिर॥

दैवं पूर्वाह्हिकं कर्म पैत्रिकं चापराह्हिकम्।
कालहीनं च यद्दानं तद्दानं राक्षसं बिदुः॥

११. ब्रह्मघातकलक्षणवर्णनम् : २०१९

१२. धर्मशौचविधिवर्णनम् : २०२३

१३. भोजनविधिवर्णनम् : २०२८

१४. आपद्धर्मवर्णनम् :

—०—

यमस्मृतिः

—०—

लघुयम स्मृतिः

—०—

बृहद्यम स्मृतिः

—०—

अरुणस्मृतिः

१. प्रतिग्रह : २११९

—०—

पुलस्त्यस्मृतिः

१. वर्णाश्रमधर्म : २१३४

—०—

बुधस्मृतिः

—०—

वशिष्ठस्मृतिः (२)

७. विष्णुस्थापनविधि

—०—

बृहद्योगीयाज्ञवल्क्यस्मृतिः

१. मन्त्रयोगनिर्णय : २२४८

२. ओंकारनिर्णय : २२५१

३. व्याहृतिनिर्णय : २२६७

४. गायत्रीनिर्णय : २२७०

५. ओंकारगायत्रीन्यास : २२७८

६. सन्ध्योपासननिर्णय : २२७९

यावन्तोऽस्यां पृथिव्यान्तु विकर्मस्थाः द्विजातयः।
तेषां तु पावनार्थाय संन्ध्या सृष्टा स्वयम्भुवा ॥ ६ ॥

ज्ञानं प्रधानं न तु कर्महीनं कर्मप्रधानं न तु बुद्धिहीनम् ।
तस्माद्द्वयोरेव भवेतसिद्धिर्नह्येकपक्षो विहगः प्रयाति ॥ २९ ॥
गवां सर्पिः शरीरस्थं न करोत्यङ्गपोषणम् ।
निःसृतं कर्मचरितं पुनस्तस्यैवभेषजम् ॥ ३० ॥
एवं सति शरीरस्थः सर्पिर्वत् परमेश्वरः ।
बिना चोपासनादेव न करोति हितं नृषुः ॥ ३१ ॥

—०—

ब्रह्मोक्तयाज्ञवल्क्यसंहिता

२ नित्यनैमित्तिककर्म : २३४४

नित्यकर्म और पञ्चयज्ञों का विधान—

पञ्चसूना गृहस्थस्य वर्ततेऽहरहः सदा ।
कंडनी पेषणी चुल्ली जलकुम्भी च मार्ज्जनी ॥
एतांश्च वाहयन्विप्रो बाधते वै मुहुर्मुहुः ।
एतेषां पावनार्थाय पञ्चयज्ञाः प्रकीर्तिताः ॥
अध्ययनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तुतर्पणम् ।
होमोदैवोबलिर्भूतनृयज्ञोऽतिथिपूजकः ॥

तिलक के भेद । यथा—

भ्रूवोर्मण्डलमध्यस्थं तिलकं कुरुते द्विजः ।
तत्केवलं धनं कृत्वा लिंगभेदाः स उच्यते ॥
वेणुपत्रदलाकारं वैष्णवं तिलकं स्मृतम् ।
अर्द्धचन्द्रं तथा शैवं शाक्तेयन्तिर्यगुच्यते ॥ ३१ ॥
चतुः कोणमितिस्पष्टं विकरालमुदाहृतम् ।
पैशाचं बिन्दुसंयुक्तं तिलकं धर्मनाशनम् ॥ ३२ ॥

नैमित्तिक कर्म करने का प्रकार, प्राणायाम, त्रैकालिक सन्ध्याविधि वर्णन, तर्पण, देवपूजाविधान, बलिवैश्वदेव, भोजनविधि, श्वकाकोच्छिष्ट भक्षण प्रायश्चित्त १-२११

३ नैमित्तिकश्राद्धविधि : २३७५

नैमित्तिक श्राद्ध यथा पिता की मृत्यु की तिथि पर जो श्राद्ध किया जाय उसे एकोद्दिष्ट श्राद्ध कहते हैं । उनका वर्णन १-७६

४ श्राद्धवर्णन : २३९९

अमावस्या, संक्रान्ति, व्यतीपात, गजच्छाया, सूर्य और चन्द्रग्रहण में स्नान करने का विधान और महत्त्व बताया गया है १-१६४

५. श्राद्ध वर्णन

आमश्राद्ध अर्थात सत्तू, गुड़, पिण्याक, दूध इन द्रव्यों से जो श्राद्ध किये जाते हैं उनका विधान १-२९

६. श्राद्ध वर्णन

नान्दीमुख श्राद्ध जो विवाहादि शुभकर्मों पर किया जाता है उसका विधान और वर्णन १-१२५

१३. आशौच : २४८१

—०—

काश्यपस्मृतिः

प्रायश्चित्त : २४८५

—०—

व्याघ्रपादस्मृतिः

स्मृतिमहत्त्व : २४९१

कपिलस्मृति

—o—

वाधूलस्मृति

प्रातः सन्ध्या तारागण के प्रकाश से लेकर सूर्योदय तक है। अतः तारागण के रहते प्रातः सन्ध्या करे ६

सायंकाल में आधे सूर्य के अस्त होने के समय सन्ध्या करे ७

शौचादि विधि ८-२०

आचमन प्रकार २२-३०

स्नानविधि २६२७

निषिद्ध तिथियों में दन्तधावन नहीं करना चाहिए। पतित मनुष्य की छाया पड़ने से स्नान करना चाहिए अस्पृश्य के छू जाने से १३ बार जल में नहाने से शुद्धि हो। रजस्वला स्त्री को यदि ज्वर चढ़ जाए तो वह कैसे शुद्ध हो ३१-४८

भूमि पर गिरा हुआ जल गंगा के समान पवित्र है। चन्द्र और सूर्य ग्रहण के समय कुंआ, वापी, तड़ाग के जल शुद्ध हैं। जलाञ्जलि विधि ४९-५६

पूर्व की ओर मुख करके देवतागण को, उत्तराभिमुख होकर ऋषियों को और दक्षिण को ओर मुंह करके जल में पितरों को तर्पण करे। स्नान के लिए जाते हुए मनुष्य के पीछे पितरों के साथ देवगण प्यास से ब्याकुल जल के लिए लालायित हो कर जाते हैं अतः देवर्षिपितृतर्पण किए बिना वस्त्र को न निचोड़े यदि वस्त्र निचोड़ा जाता है तो वे निराश होकर चले जाते हैं। सम्पूर्ण कर्मों की सिद्धि के लिए नदी, तालाब पहाड़ी झरनों में प्रतिदिन स्नान करे ५७-६३

दूसरे के बनाए हुए सरोवर में स्नान करने से उस बनाने वाले के दुष्कृत (पाप) स्नानार्थी को लगते हैं अतः उसमें न नहावे ६४

सूर्योदय के पूर्व प्रातःकाल का स्नान प्राजापत्य यज्ञ के समान है और आलस्यादि को नष्ट कर मनुष्य को उन्नत विचार और कार्यशील बना देता है। ६५-६८

स्नान मूलाः क्रियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च।
स्नानाचारविहीनस्य सर्वाः स्युः निष्फलाः क्रियाः॥ ६७॥

सम्पूर्ण क्रियायें स्नान के अन्तर्गत ही हैं। रविवार को उषा काल में स्नान करने से हजार माघ स्नान का फल और जन्म दिन

के नक्षत्र में वैधृत पुण्यकाल, व्यतीपात और संक्रान्ति पर्वों में, अमावस्या को नदी में स्नान कोटि कुलों का उद्धार कर देता है। प्रातः स्नान करने वाले को नरक के दुःख कभी नहीं देखने पड़ते। स्नान किए बिना भोजन करने वाला मल का भोजन करता है ६९-७५

शिव सङ्कल्प सूक्त का पाठ, मार्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृ तर्पण ये स्नान के पांच अङ्ग हैं ७६-७७

जल के अवगाहन, जल में अपने शरीर का अभिषेक, जल को प्रणाम और जल में तीर्थों गङ्गादि नदियों का आवाहन फिर मज्जन, अघमर्षण, देवर्षि पितृतर्पण का विधान बतलाया गया है ७८-८९

प्रातः स्नान का महत्त्व। अपने शरीर को पोछने पर सूखे कपड़े पहनकर उत्तरीय धारण करे। वन्दन और तर्पण के समय इसे कटि प्रदेश में ही बांधे रखे। फिर तिलक करे। पर्वत की चोटी से, नदी के किनारे से, विशेष रूप से विष्णु क्षेत्र में मिली सिन्धु के तट पर तुलसी के मूल की मिट्टी से तिलक प्रशस्त बताया गया है ९०-१०८

श्यामतिलक शान्तिकर, लाल वश में करनेवाला, पीला लक्ष्मी देने वाला और सफेद मोक्षदाता बतलाया है १०९-११०

भगवान् पर चढ़ाए गए हरिद्रा के चूर्ण के तिलक का माहात्म्य १११

प्रातःकाल गायत्री का ध्यान, मध्याह्न में सावित्री और सायं काल सरस्वती का ध्यान करना चाहिए। प्रतिग्रह, अन्नदोष, पातक और उपपातकों से गायत्री मन्त्र के जपने वाले की गायत्री रक्षा करती है इसलिए इसका नाम गायत्री है।

प्रतिग्रहादन्नदोषात्पातकादुपपातकात्।
गायत्री प्रोच्यते यस्माद् गायन्तं त्रायते यतः ॥ ११५ ॥

सविता को प्रकाशित करने से इसका नाम सावित्री और संसार की प्रसवित्री वाणी रूप से होने से इसका नाम सरस्वती अन्वर्थ है (जैसा नाम वैसा गुण) ११२-११६

आपोहिष्ठेत्यादि मार्जन मन्त्रों में नौ ओङ्कार के साथ जो मार्जन क्रिया जाता है उससे वाणी, मन और शरीर के नवों दोषों का क्षय हो जाता है ११७-१२०

सायंकाल में अर्घ्य जल में न देवे जहां सन्ध्या की जाए वहीं जप भी हो। वेदोदित नित्यकर्मों का किसी कारण अतिक्रमण हो जाए तो एक दिन बिना अन्न खाए रहना चाहिए और १०८ गायत्री मन्त्र के जप दोनों सन्ध्या में विशेष रूप से करे १२१-१२६

सूतक और मृतक के आशौच में भी सन्ध्या कर्म न छोड़े प्राणायाम को छोड़ कर सारे मन्त्रों को मन से उच्चारण करे १३०-१३२

देवार्चन, जप, होम, स्वाध्याय, स्नान, दान तथा ध्यान में तीन-तीन प्राणायाम करे १३३-१३४

जप का विधान प्रातःकाल हाथ ऊँचे रखकर, सायंकाल नीचे हाथ कर एवं मध्याह्न में हाथ और कन्धे के बीच में रखकर जप करे नीचे हाथ कर जप करना पैशाच, हाथ बीच में रखकर करने से राक्षस, हाथ बांधकर करने से गान्धर्व और ऊपर हाथ करने से दैवत जप होता है १३५-१३९

प्रदक्षिणा, प्रणाम, पूजा, हवन, जप और गुरु तथा देवता के दर्शन में गले में वस्त्र न लगावे १४०

दर्भा के बिना सन्ध्या, जप के बिना दान और बिना संध्या किया हुआ जप सब निष्फल होता है। जप में तुलसी काष्ठ की माला पद्माक्ष तथा रुद्राक्ष की माला प्रशस्त है १४१-१४३

गृहस्थ एवं ब्रह्मचारी १०८ बार बार मन्त्र का जाप करे। वानप्रस्थ तथा यति १००८ बार करें। आहुति के लिए सामग्री का विधान १४४-४५

गृहस्थधर्म २६३७

गृहस्थ को सम्पूर्ण कार्य पत्नी सहित इष्ट है। जिस मनुष्य की स्त्री दूर हो, पतित हो गई हो, रजस्वला हो, अनिष्ट व प्रतिकूल हो उसकी अनुपस्थिति में कोई ऋषि कुशमयी धर्मपत्नी, कोई ऋषि काश की बनी पत्नी को प्रतिनिधि रूप में रखकर नित्य-कर्म क्रिया करने की सद्गृहस्थ को आज्ञा देते हैं १४७-४८

मैथुन में त्याज्य दिनों की गणना—षष्ठी, अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, चतुर्दशी, दोनों पर्व अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति कोई भी श्राद्ध दिन, जन्म नक्षत्र का दिन, श्रवण व्रत का समय और जो भी विशेष महत्त्वपूर्ण दिन हैं उनमें मैथुन (स्त्री गमन) निषिद्ध है १८२-१८३

शुभ समय में अर्थार्थी मनुष्य जिन कामों को अपने स्वार्थं के लिए करता है उन्हें ही यदि धर्म के लिए करे तो संसार में कोई दुःखी नहीं रह सकता

अर्थार्थी यानि कर्माणि करोति कृपणो जनः ।
तान्येव यदि धर्मार्थं कुर्वन् को दुःखभाग्भवेत् ॥ १८६ ॥

भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं पतितों के छू जाने से स्नान का विधान किसी वस्तु को बेचने पर स्नान का विधान आवश्यक है १८४-१८८

श्रुति स्मृति के आदेश प्रभु की आज्ञा है इनको न मानने वाले को भगवद्भक्त बनने का अधिकार नहीं १८९

सच्चे अन्धे का लक्षण—जो श्रुति स्मृति का अध्ययन मनन और अनुशीलन कर उनके मार्ग का अनुष्ठान नहीं करता वह अन्धा है १९०-१९१

पापी को धर्मशास्त्र अच्छे नहीं लगते १९२

सच्चा ब्राह्मण वही है जो ऋण करने से ऐसे डरता है जैसे सर्प को देखकर । सम्मान से ऐसे दूर रहता है जैसे लोग मरने से और स्त्रियों के सम्पर्क से जैसे मृतक से घृणा होती है वैसे दूर रहता है । ब्राह्मण वह है जो शान्त हो, दान्त हो, क्रोध को जीतने वाला हो, आत्मा पर पूरा अधिकार करने वाला हो, इन्द्रियों का निग्रह कर चुका हो । ब्राह्मण का यह शरीर उपभोग के लिए नहीं बल्कि क्लेश के साथ तपस्या करते हुए ऊद्ध्र्व लोक में अनन्त सुख की प्राप्ति के लिए है १९३-१९४

दर्श में सूखे कपड़े पहनकर तिलोदक जल के बाहर दे, गीले वस्त्रों से पितर निराश होकर चले जाते हैं । १९५-२०१

श्राद्ध के बाद ब्राह्मण भोजन का विधान २०२

विवाह में, श्राद्धादि में नान्दी श्राद्ध २०३

—०—

विश्वामित्रस्मृति

१. नित्यनैमित्तिककर्मणां वर्णनम् : २६४५

२. आचमनविधि : २६५७

विधिवदाचमनस्यैवफल : २६५९

मार्जनम् : २६६०

"आपोहिष्ठा मयो भुवः" से मार्जन करे फिर न्यास करे, ऐसा करने से द्विजमात्र शुद्ध होकर ध्यान, जप, पूजा में सब सिद्धियां प्राप्त करते हैं। २३-३९

पञ्चाचमनविधि : २६६१

ब्रह्मयज्ञ में तीन बार आचमन का विधान है। श्रौत, स्मार्त, आचमन को किन-किन स्थलों पर करना इसकी विधि ४०-५७

३. प्राणायाम विधि : २६६३

प्राण और अपान का समयुक्त होना ही प्राणायाम कहलाता है, इसे सन्ध्याकाल और प्रत्येक कर्म के आरम्भ में मन को एकाग्र करने के लिए अवश्य करे। नौ बार उत्तम प्राणायाम, छै बार मध्यम और तीन बार अधम कहा गया है १-३

गायत्री मन्त्र और व्याहृतियों के साथ प्राणायाम करना चाहिए ४-५

पहले कुम्भक फिर पूरक और फिर रेचक, इस क्रम से प्राणायाम करना इष्ट है। सन्ध्या होम काल और ब्रह्मयज्ञ में कुम्भक से आरम्भ कर प्राणायाम करे। प्राणायाम में करने योगाध्यान का वर्णन ६-१०

दश प्रणव एवं गायत्री मन्त्र के साथ इडा और पिङ्गला को छोड सुषुम्ना नाड़ी से कुम्भक करे साथ में मन्त्र का स्मरण बराबर होता रहे ११

रेचक और पूरक बिना प्रयास के होते हैं। कुम्भक में प्रयास करना होता है यह अभ्यास से शक्य है। अनभ्यास से शास्त्र विष का काम करते हैं, अभ्यास से वही अमृत बन जाते हैं। प्राणायाम में चारों अङ्गुली और अंगूठा काम में लेना चाहिए। लं, हं, यं, रं, वं इन बीज से पृथिव्यात्मा को गन्ध, आकाशात्मा को पुष्प, वाय्वात्मा को धूप, अग्न्यात्मा को दीप और अमृतात्मा को नैवेद्य प्रदान करे। इस पञ्चभूतात्मक मानसी पूजा से ही प्राणायाम की सिद्धि मिलती है १२-२९

प्राणायाम का अभ्यास सिद्धासन, कुम्भक के साथ और मन्द दृष्टि के रूप में आंखें बन्द करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। ३०-३६

४. मार्जनम् . २६७१

५. सार्घ्यदानगायत्रीमाहात्म्यवर्णनम् : २६७४

—०—

लोहितस्मृति

विवाहाग्नौ स्मार्तकर्मविधानवर्णनम् २७०१

अनेकाग्निसंसर्गः २७०४

ज्येष्ठादिपत्नीनांतत्सुतानांजेष्ठयकानिष्ठचविचारः २७०५

मुख्य गृह्याग्नि के कार्य धर्मपत्नी के अधीन हैं। अतः वह कार्य विशेष उपस्थित हुए बिना कोई भी रूप में सीमोल्लंघन न करे अन्यथा गृह्य अग्नि लौकिक अग्नि हो जायगी और अग्नि की स्थापना फिर से करनी होगी। १०५-१०९

किसी छोटी नदी को भी यदि मोह से पार कर लिया तो फिर नई प्रतिष्ठा अग्नि सन्धान के लिये करनी होगी। ११०-११४

यदि ज्येष्ठ पत्नी कारण-विशेष से उपस्थित न हो सके बाहर गई हो तो द्वितीयादि अग्नि से श्राद्धादि विधि सम्पादित हो सकती है, परन्तु उसमें कोई भी विधि अमन्त्रक नहीं हो सकती सभी अमन्त्रक करनी चाहिए ११५-१२९

पूर्व पत्नी के न रहने से गृह्याग्नि की स्थापना के लिए जब दूसरा विवाह किया जाय तो पहले के घड़े से नूतन विवाहित स्त्री के घट में अग्नि की स्थापना की जाय १३०-१३५

अग्नि उसी समय भ्रष्ट हो जाती है, जब पत्नी चरित्र से दूषित हो १३६-१४०

यदि द्वितीयाग्नि से वेद प्रतिपादित कर्म किए जाय तो ये फलदायक नहीं होते १४१-१५२

अतः पूर्व पत्नी के गृह्याग्नि को दूसरे विवाह के वर्तन में स्थापित कर धर्मपत्नीवत् सारे काम किए जाय १५३-१५५

यदि किसी दुश्चरित्र माता के दूषित होने से पूर्व पति से सन्तान हुई हो तो वह सारे वैदिक कार्यों के करने का अधिकार रखती है परन्तु दुश्चरित्र होने के बादवाली सन्तान किसी भी रूप में ग्राह्य नहीं १५६-१५७

कलियुग में पांच कर्मों का निषेध—अश्वालम्भ, गवालम्भ, एक के रहते हुए दूसरी भार्या का पाणिग्रहण, देवर से पुत्रोत्पत्ति एवं विधवा का गर्भ धारण १५८-१६९

द्वादशविधपुत्राः : २७१७

क्षेत्रज, गूढ़ज, व्यभिचारज, बन्धु, अबन्धु और कानीनज आदि १२ प्रकार के पुत्रों के भेद १७०-१८६

दत्तक पुत्र लेने और देने में माता-पिता ही एक मात्र अधिकार रखते हैं दूसरे नहीं १८७-२०८

परधनापहारकाणां दण्डविधानवर्णनम् : २७२३

पुत्रत्वस्याधिकारितावर्णनम् : २७२५ .

—०—

नारायणस्मृति

—०—

शाण्डिल्यस्मृति

धर्म के कार्य में निरन्तर लगना प्रिय बोलना, सत्य एवं परहितकारी वचनों का उच्चारण करना ऐसी बहुत-सी शुद्धियों का वर्णन। शिर, कण्ठ आंख और नासिका के मल को दूर करना यही सर्वाङ्गीण शुद्धि बतलाई है १८-३६

ज्ञानकर्मभ्यां हरिरेवोपास्य इतिवर्णनम् : २७९७

धर्म की हानि नहीं करनी चाहिये, संग्रह ही करे। धर्म एवं अधर्म का सुख व दु:ख के कारण हैं। यही सनातन धर्म शास्त्र है अन्य सब भ्रामक हैं तथा तामस व राजस हैं, यही सात्त्विक है। वेद, पुराण एवं उपनिषदों में "इदं हेयमिदं हेयमुपादेयमिदं परम्" यही बतलाया है। साक्षात्परब्रह्म देवकी पुत्र श्री कृष्ण की आराधना सर्वोत्तम है। देव, मनुष्य और पशु आदि का विस्तार उन्हीं से है।

साक्षाद्ब्रह्म परं धाम सर्वकारणमव्ययम्।
देवकीपुत्र एवान्ये सर्वे तत्कार्यकारिणः॥
देवा मनुष्याः पशवो मृगपक्षिसरीसृपाः।
सर्वमेतज्जगद्धातुर्वासुदेवस्य विस्तृतिः॥

ज्ञान एवं कर्म से भगवान की ही आराधना सर्वोत्तम है। वही ज्ञान है, वही सत्कर्म है एवं वही सच्छास्त्र है। जो भगवान् के चरणारविन्दों की सेवा नहीं करते हैं वे शोचनीय हैं ४०-५९

सात्त्विकराजसतामसगुणानां वर्णनम् : २७९९

प्रकृति त्रिगुणात्मिका है एवं जगत् की कारणभूता है। सम्पूर्ण संसार देव, असुर और मनुष्य इसी के विकार हैं। इस प्रकार सात्त्विक राजस और तामस गुणों का संक्षेप से वर्णन ६०-७०

देश शुद्धि का वर्णन—जहां म्लेच्छ पाषण्डी न हो धार्मिक तथा भगवद्भक्तिपरायण मनुष्य रहते हों और हिंसक जन्तुओं से शून्य हो वह स्थान शुद्ध है ७१-८२

भगवत्पूजनविधिवर्णनम् : २८०१

सात प्रकार की शुद्धि कर भगवत्पूजापरायण होना चाहिए। प्रथम शरीर को तपस्यादि से शुद्ध करे अशक्त हो तो दान करे और दोनों में ही असमर्थ हो तो नामसंकीर्तन करना चाहिए। ८३-९५

उपवास, दान, भगवद्भक्तों के सेवन, संकीर्त्तन, जप, तप और श्रद्धा द्वारा शुद्धि होती है ९६-१०१

--०--

कण्वस्मृति

धर्मसार धर्मकर्त्तव्य नित्यनैमित्तिककर्म : २८६०

—०—

दाल्भ्यस्मृति

षोडशश्राद्धवर्णनम् : २९३३

शस्त्रहतकानां श्राद्धवर्णनम् : २९४१

श्राद्धापाकानन्तरमाशौचे निर्णयः : २९५१

शिखानिर्णयवर्णनम् : २९५५

स्त्रीणां पुनर्विवाहे प्रायश्चित्तवर्णनम् : २९६९

पुनर्बिवाहिता मूढैः पितृभ्रातृमुखैः खलैः।
यदि सा तेऽखिलाः सर्वे स्युर्वै निरयगामिनः ॥१९३॥
पुनर्बिवाहिता सा तु महारौरवभागिनी।
तत्पतिः पितृभिः सार्धं कालसूत्रगगो भवेत्।
दाता चाङ्गारशयननामकं प्रविपद्यते ॥१९४॥

गृहस्थस्य रात्रावुष्णोदकस्नानवर्णनम् : २६७५

निमन्त्रणार्हविप्राणांवर्णन : ३०२५

परिवेषणपौर्वापर्य वर्णन : ३०३३

आङ्गिरस (२) उत्तराङ्गिरसम्

१ धर्प्रपर्षत्प्रायश्चित्तवर्णन : ३०६६

२ परिषद उपस्थानलक्षणम् : २०६७

प्रायश्चित्तविधानम् : ३०६८

४ परिषल्लक्षण : ३०६९

५ प्रायश्चित्तनियन्तृकथनम् : ३०७१

६ प्रायश्चित्ताचारकथनम् : ३०७२

७. पापपरिगणनम् : ३०७३

८. शूद्रान्नस्यगर्हितत्त्ववर्णनम् : ३०७५

९. अभक्ष्यभक्षणप्रायश्चित्त : ३०७७

१०. हिंसाप्रायश्चित्तकथनम् : ३०७९

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः ।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः ॥

—०—

भारद्वाजस्मृति

५. दन्तधावनविधिवर्णनम् : ३१०१

६. त्रिकालसंध्याविधानकथनम् : ३१०६

७. जपमाला विधानकथनम् : ३१२४

८. जपे निषिद्धकर्मवर्णनम् : ३१३६

—०—

स्मृति सन्दर्भ : भाग षष्ठ

मार्कण्डेयस्मृति

—०—

लौगाक्षिस्मृति

लौगाक्षिस्मृति १८६

॥समाप्तमिदं सूत्रीपत्रम् । शमस्तु ॥

—०—

स्मृति सन्दर्भ : श्लोकानुक्रमणी

संकेत सूची

१. मनुस्मृति	(मनु)	२९. प्रजापति स्मृति	(प्रजा)
२. नारदीय मनुस्मृति	(नारद)	३०. बौधायन स्मृति	(बौ)
३. अत्रिस्मृति	(अत्रि)	३१. लध्वाश्वयालयन	(आश्व)
४. अत्रिसंहिता	(अत्रिस)	३२. गौतम स्मृति	(गौ)
५. विष्णु स्मृति माहात्म्य	(विष्णु मं.)	३३. वृद्ध गौतम स्मृति	(वृ.गौ.)
६. विष्णु स्मृति	(विष्णु)	३४. यम स्मृति	(य)
७. सम्वर्त स्मृति	(सम्वर्त)	३५. लघुयम स्मृति	(ल. य.)
८. दक्ष स्मृति	(दक्ष)	३६. बृहद्यमस्मृति	(वृ.य.)
९. आंगिरस स्मृति	(आंगिरस)	३७. अरुण स्मृति	(अ)
१०. शातातप स्मृति	(शाता)	३८. पुलस्त्य स्मृति	(पु.)
११. पराशर स्मृति	(पराशर)	३९. बुध स्मृति	(बु य)
१२. वृहतपाराशर स्मृति	(वृ परा)	४०. वसिष्ठ स्मृति (२)	(व-२)
१३. लघु हारीत स्मृति	(ल हा)	४१. वृहदयोगी याज्ञवल्क्य	(बृ. या.)
१४. वृद्ध हारीत स्मृति	(व. हा.)	४२ ब्रह्मोक्त याज्ञवल्क्य	(ब्र. या.)
१५. याज्ञवल्क्य स्मृति	(या)	४३. काश्यप स्मृति	(का)
१६. कात्यायन स्मृति	(कात्या)	४४. व्याघ्रपादस्मृति	(व्या)
१७. आपस्तम्ब स्मृति	(वृ. हा)	४५. कपिल स्मृति	(क)
१८. लघुशंखस्मृति	(या)	४६. वाधूल स्मृति	(वा)
१९. शंख स्मृति	(शंख)	४७. विश्वामित्र स्मृति	(विश्वा)
२०. लिखित स्मृति	(लि.)	४८. लोहित स्मृति	(लो)
२१. शंख लिखित स्मृति	(शं. लि.)	४९. नारायण स्मृति	(नारा)
२२. वसिष्ठ स्मृति-१	(व-१)	५०. शाण्डिल्य स्मृति	(शाण्ड)
२३. औशनस संहिता	(औ. सं.)	५१. कण्व स्मृति	(कण्व)
२४. औशनस स्मृति	(औ. स्मृ.)	५२. दाल्भ्य स्मृति	(दा)
२५. वृहस्पति स्मृति	(वृह)	५३. आंगिरस स्मृति पूर्व	(आंपू)
२६. लघुव्यास संहिता	(ल. व्या)	५४. आंगिरस स्मृति उत्तरार्ध	(आंगि-उ)
२७. व्यास स्मृति	(औ. सं.)	५५. मार्कण्डेयस्मृति	(मा)
२८. देवल स्मृति	(देवल)	५६. लौगाक्षी स्मृति	(लौ)

स्मृति सन्दर्भ : : श्लोकानुक्रमणी

अ

अजातदन्ता ये बाला	पराशर ३.१६
अजातदन्ता ये बाला	वृ परा ८.४५
अजातपुत्रस्तैनैव पुत्र्ययं	लोहि २२५
अजातव्यंजना लोम्नी	कात्या २८.४
अजानन् यस्तु विब्रूया	आ ६.१३
अजानन् यो द्विजो नित्य	वृ परा ४.१९०
अजानन् यो नरो ब्रूयात्	वृ परा ८.८४
अजानन् सम्यग्	वृ परा ८.१९३
अजानन् हृदयानतःस्थं	शाण्डि १.६६
अजानानां च दात्रृणा	आं उ ६.१४
अंजाभिघातने चैव	शाता २.५२
अजां च महिषीञ्चैव	अ ३५
अजावयो गृहं च कनिष्ठस्य	व १.१७.४१
अजाविकं सैकशफं न	मनु ९.११९
अजाविकाश्वमहिषी	ब्र.या. १३.२०
अजाविके तथा रुद्धे	नारद ७.१६
अजाविके तु संरुद्धे वृकैः	मनु ८.२३५
अजाविको माहिष्श्च	बृ.य. ३.२६
अजाश्व मुखतो मेध्यं	या १.१९४
अजाश्वा मुखतो मेध्या	व १.२८.९
अजितोऽस्मीति वक्तारं	लोहि ७०६
अजिनमेकवस्त्र च योगे	शाण्डि ४.२०२
अजिनं दण्डकाष्ठञ्च	ल हा ३.५
अजिनं मेखला दण्डो	पराशर १२.३
अजिह्नो अशरणो	व १.१०.२१
अजीवंस्तु यथोक्तेन	मनु १०.८२
अजीगर्तः सुत हन्तुं	मनु १०.१०५
अजीर्णविमने स्नान	आंपू १७३
अजीर्णः स्यात्तदा	आंपू २९१
अजीवन्तः स्वधर्मेण	व १.२.२७
अजेतुलायां मिथुने	भार २.४०
अजैकवादहिवर्वुध्न्य	ब्र.या. १०.११३
अजैकपादहुर्बुध्नयो	वृ परा २.१९०
अज्ञ सभायां विदुषां	लोहि ७१४
अज्ञातग्रामतातादिर्ज्ञा	आंपू १०५०
अज्ञातदोषादुष्टा या	नारद १३.९८
अज्ञातपितृको यस्तु	नारद १४.१७
अज्ञातपूर्व गणिका	भार ७.११५
अज्ञाताख्यज्ञातिरंडाकृता	कपिल ५८८
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	पराशर ८.१४
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	बृ.य. ४.२९
अज्ञात्वा धर्मशास्त्राणि	वाधू १७६
अज्ञात्वाऽस्यविधि विप्रः	भार १५.३
अज्ञात्वैतानि होमानि	भार १९.३८
अज्ञानतमसाऽन्धानां	बृह १२.३३
अज्ञानतः स्नानमात्र	दा ९८
अज्ञानतिमिरान्धस्य	अत्रि १.१
अज्ञानतिमिरान्धस्य	आप ८.१७
अज्ञानाच्च कृतं	बृ.य ५.१२
अज्ञानाच्चरितो पापे दृष्टवा	शाण्डि २.५४
अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि	लोहि ६५०
अज्ञानात्तान्तु यो गच्छेत	पराशर १०.१२
अज्ञानस्तु द्विजश्रेष्ठ	यम ७८
अज्ञानात् पिवते तोयं	अत्रिस २५१
अज्ञानात् पिवते तोयं	अंगिरस ७
अज्ञानात् प्राप्य विण्मूत्र	पराशर १२.२
अज्ञानात् प्रास्य विण्मूलं	अत्रि स ७५
अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	औ ९.४२
अज्ञानात् प्राश्य विण्मूत्र	मनु ११.१५१
अज्ञानात्त सुरा पीत्वा	या ३.२५४
अज्ञानाद् भुक्ति शुद्ध्यर्थ	औ ९.५६
अज्ञानाद् भुंजते विप्राः	पराशर ११.१५
अज्ञानाद् ब्राह्मणो भुक्त्वा	लघुयम २६
अज्ञानाद् ब्राह्मणोऽश्नीयात्	अत्रिस १७४
अज्ञानाद्यादिवा ज्ञानात्कृत्वा	मनु ११.२३३
अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा	आश्व २४.२८
अज्ञानाद्वारुणी पीत्वा	मनु ११.१४७
अज्ञानाभिगतौ स्त्रीणां	वृ परा ८.२४८
अज्ञाना मिच्छया ज्ञानं	विष्णु म ९१
अज्ञानेन प्रमादेन	भार ६.१७६

अनेन विधिनाश्रांध मनु ३.२८१
अनेन विधिना श्रांद्धं व्या १८९
अनेन विधिना सर्वाः मनु ६.८१
अनेन विधिना स्नात्वा शंख ९.१४
अनेन विधिनोत्पन्नो आश्व १५.४९
अनेन विप्रो वृत्तेन मनु ४.२६०
अनेन भवति स्तेनः नारद १८.१०५
अनेनैव गृहोद्यान नारद १२.१२
अनेनैव विधानेन ब्र.या. ४.४१
अनेनोक्तप्रकारेण धारये भार १६.९
अनोकानामन्येषां सम भार १८.२१
अनेनियुद्धिरित्य वृ परा ११.३४१
अनौरसेषु पुत्रेषु या ३.२५
अनौरसेषु पुत्रेषु शंख १५.१३
अनौषधमभैषज्यं वृहस्पति ४६
अन्तः पूर्णमधः पूर्णमूर्ध्वं लोहि ५९१
अन्तप्रज्ञ बहिप्रज्ञ वृ परा ३.१४
अन्तः प्रज्ञो बहि प्रज्ञो बृ.या. २.२३
अन्तः प्रविष्टेषु तदा वृ हा ६.३९४
अन्ताभिगमने त्वंक्य या २.२९७
अन्तरं कुशविन्यस्य तूष्णीं ब्र.या. ८.२६०
अन्तरं शुद्ध्यते यस्मात् वृ परा १२.२४२
अन्तराच्छाद्य कौपीनं वाधू ९९
अन्तराच्छाद्य कौपीनं वाससी शाण्डि२.३९
अन्तरा जन्ममरणे या ३.२०
अन्तरा तु दशाहस्य पराशर ३.३५
अन्तरिक्षकरं विद्धि वृगौ १.५३
अन्तरिक्षमथो स्वाहा विश्वा ५.३७
अन्तरिक्षमधश्वचैव बृह ९.१६०
अंतरिक्ष नंखस्पृष्टं भार ४.२४
अन्तरिक्षे मृताये दा १५१
अन्तरेण चात्वालोत्कारो बौधा १.७.१४
अन्तरेऽस्मिन्निमे लोक बृह ९.१९
अन्तर्गत जलेमग्नो ल व्यास २.२१
अन्तर्गतशवे ग्रामे मनु ४.१०८

अन्तर्जलं च कतमै बृ.या.१.१५
अन्तर्जला खेयतोया आंपू ९३३
अन्तर्जलात् त्रिरावृता ल व्यास २.२३
अन्तर्जले जपेन्मग्नस्त्रि बृ.या. ७.२७
अन्तर्जानुः शुचौदेश या १.१८
अन्तर्जानुः शुचौ देश वाधू २१
अन्तर्जानुः शुचौ देशे शंख १०.५
अन्तर्दशाहे भुक्त्वान्नं आंउ ९.१
अन्तर्दशाहे चेत्स्यातां मनु ५.७९
अन्तर्दशाहे स्याचे ब्र.या. १३.१३
अन्तर्द्धानं स्मृति या ३.२०२
अन्तर्धाय कुशांस्तेषु आश्व २३.४२
अन्तर्धाय महीं काष्ठै औ २.३४
अन्तर्बहिश्च संशुद्धि शाण्डि ३.१३८
अंतर्भावद्विजेष्वेव प्राप्नोति कपिल ३२९
अन्तर्भीरून बहि शूरान् वृ परा १२.३६
अन्तर्वक्रो वहि सर्पन् वृ परा १२.२६५
अन्तर्वर्त्नी स्त्रियों गाश्च वृ हा ६.१७२
अन्तर्वर्त्न्यं तथाऽऽत्रेय्यां वृ हा ६.२३९
अन्तर्वास उत्तरीयम् बौधा १.३.२
अन्तवदन्तसलिल औ २.२७
अन्तः शरीरप्रभवमुदान बृ.या. २.४८
अन्तश्चरति भूतेषु शंख १०.१७
अन्तश्चरसीतितिर ब्र.या. २.७३
अन्तस्तेजो बहिश्चक्षुरथः विश्वा ३.३१
अन्तिमं मूर्ध्निं विन्यस्य बृ.या. ५.११
अन्ते चावभृथोष्टिश्च वृ हा ७.६६
अन्ते चावभृथेष्टिं च वृ हा ७.२६६
अन्ते वै दिवसेत ब्र.या. १३.१४
अन्ते स्वर्गसुखं भुक्त्वा नारा ५.२१
अन्त्यजातिमविज्ञातो आप ३.१
अन्त्यजातिश्वपाकेन आप ७.५
अंत्यजातु प्रतिगृह्या अ २३
अन्त्यजानां गृहेतोयं अंगिरस ४
अन्त्यजाभाजने भुक्त्वा संवर्त १९४

अन्नं पितृमनुषयेभ्यो	या १.१०४
अन्नं पूर्वं नमस्कुर्यात्	बृ.गौ. १३.६
अन्नं प्राणो जलं प्राणः	वृ परा १०.२४४
अन्नं प्राणो बलं चान्नं	वृ परा ५.१११
अन्नं रसमयं कृत्स्नं	बृह ९.१३६
अन्नं विभज्यभूतेभ्य	शंखलि ४
अन्नं विष्णू रसो ब्रह्मा	ब्र.या. २.१६३
अन्नं शूद्रस्य भोज्यं	यम २१
अन्नं सुसंस्कृतं वाणि	वृ परा ५.१६६
अन्नं सुसंस्कृतं हृद्यं	शाण्डि ४.५२
अन्नलाभे तु होतव्यं	वृहा ५.२५६
अन्नशुद्ध्यैव सत्कर्म	शाण्डि ४.१३६
अन्नहर्तामयावित्वं मौक्यं	मनु ११.५१
अन्नहीनं क्रियाहीनं	औ ३.१२८
अन्नाक्तभाजन स्थानि	आश्व १.१७२
अन्नात् तस्मात् प्रवर्तन्ते	वृ.गौ. ६.२५
अन्नत्तेजो मनः प्राण	शंखलि १६
अन्नात्प्राणाः	ब्र.या. ११.३९
अन्नात् भवन्ति राजेन्द्र	वृ.गौ. ६.२४
अन्नदेरपि भक्ष्यस्य	वृ परा ६.३३०
अन्नादेर्भ्रूणहा मार्ष्टे	मनु ८.३१७
अन्नादेर्भ्रूणहामार्ष्टि	व १.१९.२९
अन्नाद्यजानां सत्तवानां	मनु ११.१४४
अन्नाद्ये कीटसंयुक्ते	पराशर ६.६२
अन्नाभावे तु कर्तव्य	ब्र.या. ४.५४
अन्नाभिमर्शने प्रोक्तं	आंपू ८२९
अन्नार्थं मातरिश्वायं	वृ परा १०.१५
अन्नार्थमेतानुक्षाणाः	वृ परा ५.१०९
अन्नार्थी पवते वायु	बृह ९.१४७
अन्नार्थी वाप्यमं	ब्र.या. २.१८०
अन्नेन एव हि जीवन्ति	वृ गौ ६.१८
अन्नेन धार्यते सर्वं	वृ गौ. १२.२९
अन्नेन पूजनीयः स	वृगौ. १२.३४
अन्ने भोजनसम्पन्ने	आप ९.१४
अन्ने श्रितानि भूतानि	बौधा २.३.६८
अन्यत्र वा शुभे	वृ परा ५.७८
अन्यं हौताशनं मंत्र	वृ परा ४.१८८
अन्यकार्याय न भवे	कण्व ७६९
अन्यगेहे तथा चान्तः	व २.६.४६३
अन्यगोत्रप्रदत्तश्चेत्	आपू ९९९
अन्यगोत्रप्रदत्तो यः	कण्व ७०७
अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सुतो	कपिल ३५८
अन्यगोत्रप्रविष्टस्य सूनुश्चेद्य	कपिल १०२
अन्यजातिविवाहे च	औ ९.५१
अन्यतीर्थेन गृह्णीया	वाधू ५७
अन्यत्कुर्यान् मनस्वान्	वृ परा १२.३५०
अन्यत्तु ब्राह्मणात्	नारद १४.४९
अन्यत् प्राणि वधस्थाय	वृ परा ८.१६०
अन्यत्र कारादुचिताद्	नारद १८.४५
अन्यत्र तु जपं कुर्वन् पुनः	वाधू १२७
अन्यत्र देवायतना	व २.६.२३१
अन्यत्र पुष्पमूलेभ्य	शंख १४.१३
अन्यत्र फलमूलेभ्यः	औ ५.५५
अन्यत्र ब्राह्मणात्	व १.१.४४
अन्यत्र रजकव्याध	नारद २.१६
अन्यत्र मृणुयाज्ज्ञेयमनु	शाण्डि १.१०८
अन्यत्र संप्रहास्य	व १.१७.५३
अन्यत्राङ्कनलक्ष्मभ्यां	आउ १०.१२
अन्यत्रांकनलक्ष्मभ्यां	पराशर ९.२७
अन्यत्राजाविभ्यः	बौधा ५.१५१
अन्यत्राऽऽततायिनः	बौधा १.१०.१२
अन्यत्रोदकवर्मस्वधा	व १.२.१३
अन्यत्समाचेरत्सर्व	शाण्डि ४.२२९
अन्यत्सर्वं यथापूर्वं	भार ६.१३५
अन्यथा चैव स ज्योति	औ ६.४७
अन्यथा तस्य गोत्रस्य	कण्व ७१२
अन्यथा दापयेद्यस्तु	देवला ६७
अन्यथा दोषमाप्नोति	लोहि ३९
अन्यथा नरकं याति	वृ हा ७.२४
अन्यथा मन्दबुद्धीनां	विष्णुम १०२

आ

आकाशं पञ्चशतकं	विश्वा ६.११
आकाशल्लाघवं सौक्ष्मयं	या ३.७६
आकाशं वायुरग्निश्च	पराशर १०.४१
आकाशात्तु विकुर्वाणात्	मनु १.७६
आकाशे च क्षिपेद्वारि	लघुयम ९४
आकाशेशास्तु विज्ञेया	मनु ४.१८४
आकृष्णेन इमं देवा	या १.३००
आकृष्णेन च तीव्रांशो	वृ परा ११.६५
आकृष्णेन तु सायाह्ने	ब्र.या. २.७५
आकृष्णेन द्वितीयार्ध्य	आश्व १.४२
आकृष्णेनेति मंत्रे	वृ परा ११.३१५
आकृष्य दक्षिणे भागे	विश्वा १.६५
आकृष्य धारयेद्देवीं	विश्वा ६.२३
आकृष्य ब्राह्मणो	बृ.गौ. १४.४०
आक्रम्योत्तरस्यान्तु	व २.४.५५
आक्रान्ता दर्भ सूच्योऽपि	वृ परा १२.४२
आक्राशपरिवादाभ्याम्	वृ.गौ.४.४४
आक्रुष्य उससि पादेन	वृ.गौ.४.४५
आक्षिप्तमोघबीजौ च	नारद १३.१६
आक्षिप्यमाणा हि अवशा	वृ.गौ.५.३५
आखण्डलधनुश्चैव	ब्र.या. ८.१३६
आख्याता शुद्धिरेषाऽत्र	शाण्डि १.६०
आख्याय भूभृते वापि	वृ परा ८.२६९
आगच्छन्तिति तां	आंपू ७९९
आगच्छन्तु महाभागा	आश्व २३.२१
आगन्छन्त महाभागा	लिखित ५०
आगतं दूरतः शान्तं	व्यास ३.३७
आगातान् सर्वदेवांश्च	ब्र.या. १०.१३५
आगतायै भिक्षुकायै करमात्र	कपिल ९५३
आगतेषु च भक्तेषु	शाण्डि ३.१३२
आगत्य देवि तिष्ठं त्वं	विश्वा ५.४४
आगत्य न्यासकल्पे तुनैत	कपिल १५२
आगमः प्रथमः कार्यो	नारद १.३०
आगमं निर्गमं श्तानं	मनु ८.४०१
आगमस्तु कृतो येन	या २.२८
आगमेन विना पूर्व भुक्तं	नारद २.८९
आगमेन विशुद्धेन	या २.३०
आगमेनोपभोगेन नष्टं	या २.१७४
आगमेषु पुराणेषु	भार ७.१२.३
आगमोकतेन मंत्रेण	ब्र.या. २.११५
आआगमोऽभ्यधिको भोगाद्	या २.२७
आगर्भसम्भवाद् गच्छेत्	या १.६९
आगस्सु ब्राह्मणस्यैव	मनु ९.२४१
आगारदाही कुण्डाशी	औ ४.२९
आगारादभिनिष्क्रान्तः	मनु ६.४१
आग्नेयप्रवणे रेखां	आश्व २३.७३
आग्नेयं ब्राह्मभेदो	भार १८.८३
आग्नेयं भस्मना	पराशर १२.१०
आग्नेयं भस्मना	ल व्यास १.१२
आग्नेयाद्येऽथ सार्पाद्य	कात्या २५.१०
आग्रयणं चातुर्मास्यं	कण्व ३३०
आग्रहायण्यमावास्या	कात्या १६.६
आद्यारान्तं ततः कुर्याद्	आश्व ९.६
आघारान्तं ततः कुर्याद्	आश्व १५.३७
आघारावाज्यभागौ च तथा	ब्र.या.८.३३८
आघ्रातं शकुनाद्यैश्च	व.६.३२
आचक्षाणस्तु तद्धर्म	वृ परा ६.२६३
आचक्ष्व विश्वेरेण	व २.२.२
आचतुर्थाद्भवेत्स्रावः	दा १२८
आ चतुर्थाद् भवेत् स्रावः	पराशर ३.१८
आचतुर्थे तु सम्पूर्ण वि	ब्र.या.८.२४१
आ चतुर्विंशाद्वैश्यस्य	व १.११.५३
आचमेन मधुपर्कोऽयं	आश्व १५.९
आचम्य गृहमागत्य	आश्व २३.१५
आचम्य च ततः पश्चाद्	शंख १०.१८
आचम्य च पुराप्रोक्तं	शंख १०.१६
आचम्य तर्पयेदेवान्	वृ हा ४.३२
आचम्य तु ततः शुद्धः	ब्र.या. २.१९१
आचम्य देवतामिष्टां	ल हा ४.६७
आचम्य धारयेद्	वृ हा ८.८५

आचार्यत्वं श्रोत्रियश्च	या १.२७६
आचार्यत्समनु प्राप्तं	वृ हा ८.२५५
आचार्यपुत्रशिष्य	व १.२०.१७
आचार्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदो	मनु २.१०९
आचार्यः पूजयेद् विष्णु	वृ हा ८.२४२
आचार्यः प्राङ्मुख	आश्व १०.१४
आचार्य मातृपितृहंतारः	व १.१५.१५
आचार्य मृत्विजश्चपि	वृ हा ५.१५१
आचार्य गणनाथं च	भार १६.३
आचार्यं च प्रवक्तारं	मनु ४.१६२
आचार्यं देवभक्तं च	शाण्डि २.८७
आचार्यं स्वमुपाध्यायं	मनु ५.९१
आचार्यं शिक्षयेदेनं	नारद ६.१६
आचार्यश्च पिता चैव	मनु २.२२५
आचार्यश्छेदयेतान	आश्व ९.१२
आचार्यस्तत्रकर्तव्यः	वृ परा ११.२११
आचार्यस्तु वदेमंत्र	व २.३.६७
आचार्यस्त्वस्य या जातिं	मनु २.१४८
आचार्यं स्नातकादीनां	आश्व १५.४
आचार्यस्य पितुश्चैव	शाण्डि ४.६६
आचार्यस्याञ्जलौ	आश्व १०.१६
आचार्यादीन् समभ्यर्च्य	आश्व ३.१७
आचार्यानी मातुलानी	प्रजा ५८
आचार्यापित्रुपाध्यान्नि	या ३.१५
आचार्यश्च पितृंश्चैव	बृ.या.७.८२
आचार्यं च ते दद्याद्	आश्व १०.६०
आचार्या विष्णुं अभ्यर्च्य	वृ हा ८.२२६
आचार्याश्चैव गन्धर्वा	ब्र.या.२.९३
आचार्यस्तु पिता प्रोक्तः	शंख १.७
आचार्येणात्र मंत्रोऽयं	आश्व ६.५
आचार्ये तु खलु प्रेते	मनु २.२४७
आचार्ये प्रमीतेऽग्नि	व १.७.५
आचार्यैर्गुरुभि सद्भिः	आंपू १०८६
आचार्योपाध्याय तत्	बौधा १.५.१३३
आचार्योपासाग्नौ वा	वृ हा ७.२४८

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्ति	मनु २.२२६
आचार्यो ब्रह्मलोकेशो	मनु ४.१८२
आचार्य्यपत्नी स्वसुतां	या ३.२३३
आचार्य्येणाभ्यनुज्ञात	व २.३.७६
आचार्य्यो दीक्षितो नाम्ना	औ १.४४
आचार्य्योपासनं वेदशास्त्र	या ३.१५६
आचूडाकरणात् सद्यः	दा ११७
आचूडाकरणाद्बाल	दा १३०
अच्छादनं भक्तेस्यं	बृ.गौ.१६.३१
आच्छाद्य चार्चयित्वा	मनु ३.२७
आच्छाद्य धौतवसनं	व २.३.१०६
आच्छाद्य वस्त्रमन्यच्च	शाण्डि ३.१३६
अच्छिन्नेवातनिना	त २.४.५२
आजं वातदलाभे तु	वाधू १५०
आजानुतः स्नानमात्र	लिखित ८८
आजानुपादपर्यन्तं मन्त्र	विश्वा १.७३
आजानु स्नानमात्रं	लघुशंख ४८
आजीवन् स्वेच्छया	या २.६८
आज्यपाश्च तथा वत्स	वृ परा ७.१६८
आज्यं तेनैव होतव्य	व २.७.११०
आज्यं श्रीभूमि सुक्ताभ्यां	वृ हा ६.२२
आज्यं संस्कारपर्य्यन्तं	व २.४.२९
आज्यं हव्यमनोदेशे	कात्या ८.१६
आज्यं हुत्वा ततश्चक्र	वृ हा ८.२२८
आज्यसंस्कारणं कृत्वा	व २.६.३३१
आज्यसंस्कारपर्यन्तं	आश्व १०.९
आज्यसंस्कार पर्यन्त	आश्व १२.६
आज्यस्थाली च कर्तव्या	कात्या १५.१०
आज्यस्थाल्याः प्रमाणं	कात्या १५.११
आज्यस्यैकपलं दद्याद्	पराशर ११.३०
आज्यहोमश्चशलली	आश्व ४.१८
आज्यहोमी सहस्रन्तु	वृ हा ३.१९८
आज्याहुतिना संस्कृत्य	ब्र.या.८.३४६
आज्येन चरुणा वापि	वृ हा ३.१४९
आज्येन चरुमावाऽपि	वृ हा ४.१३४

आदित्यमुपतिष्ठेतु	ब्र.या. ८.११४
आदित्यं तत्र संस्थाप्य	ब्र.या. १०.५२
आदित्य रक्षणार्थं तु	ब्र.या. ६.६
आदित्य सदृशाकारैः	वृ.गौ. ५.९४
आदित्यस्य सदा पूजां	या १.२९४
आदित्याज्जायते वृष्टि	कण्व ३३२
आदित्यनलविप्राग्नि	भार ३.११
आदित्यान्तर्गतं भर्गः	बृह ९.५७
आदित्याय ततः स्नायादन्नं	बृ.गौ.१६.११
आदित्या वसवो रुद्रा	शाता २.११
आदित्ये चैव हृदये	बृह ९.१५७
आदित्येतन्महः साक्षात्	भार ६.८०
आदित्येन सह प्रातर्मन्देहा	ल हा ४.१३
आदित्येऽस्तमिते	आश्व १.१८३
आदित्येऽस्तमिते रात्रा	अत्रिस २४५
आदित्येऽस्तमिते रात्रौ	अत्रिस २४६
आदित्ये हृदये चैव	बृह ९.१५६
आदित्यो ब्रह्मा इत्येत	बृह ९.१५८
आदित्यो वरुणोविष्णुः	अत्रि स ३३५
आदिप्रयत्नं प्रथमं	बृ.या. ८.१६
आदिमध्य अवसानेषु	शंख २.१२
आदिमध्यावसानेषु	कपिल २४०
आदिमध्यावसानेषु	कपिल २४२
आदिमध्यावसानेषु	या १.३०
आदिशेत् प्रथमे पिण्डे	बौधा २.१९
आदिष्टी नोदकं कुर्यादा	मनु ५.८८
आदेहपातं वनगो	ल हा ५.९
आदेहपातात्तद्धित्त्वा	शाण्डि ४.५
आदौ कुम्भकमाश्रित्य	विश्वा ३.६
आदौ देवता ऋषिच्छन्दः	शंख १२.७
आदौ प्रतिवसन्तस्य वसन्ते	कपिल ९७३
आदौ यः सर्ववेदानां	भार ६.३७
आदौ वह्निमुखे दत्त	विश्वा ८.७३
आदौ श्रौतं तथा चामे	विश्वा २.५४
आदौ सांग्यं च कर्मोक्त	भार ६.६१
आद्यकाण्डाष्टमः प्रश्नः	कण्व ५३४
आद्यन्तयोर्व्या हृतीनां	भार १९.२६
आद्यन्त रक्षित्तांकुर्यादिति	वृ परा ४.४६
आद्यन्तौ प्रणवौ मंत्रौ	आश्व १.७९
आद्यन्त्यावेव संत्याज्यौ	कपिल ७५७
आद्य तं प्रणवं विद्वान्	वृ परा १२.२६४
आद्य तु सर्वदानानां	अ १०१
आद्ययत्त्यक्षरं ब्रह्म	बृह ११.२७
आद्य यत् त्र्यक्षरं ब्रह्म	मनु ११.२६६
आद्य यदक्षर ब्रह्मा	बृ.या. २.४१
आद्यसंगी समो दोषी	वृ परा ८.३०७
आद्यस्प्रष्टु र्भवेत्स्नानं	वृ परा ८.३०८
आ द्वाविंशात् क्षत्रियस्य	व १.११.५२
आद्या आद्यस्य षट्	वृ परा ६.१२
आदयाग्नौ वा द्वितोयाग्नौ	लोहि ६
आद्यादाद्यन्तयोरार्द्धौ	शाण्डि ४.१४९
आद्याद्यस्य गुणं त्वेषाम्	मनु १.२०
आद्यानुवाके रुद्राणां	वृ परा ११.१८५
आद्यान्त्यावेव संत्याज्यौ	लोहि २६६
आद्या परतरा सूक्ष्मा	वृ.या. २.३०
आद्यास्तिस्रो महाप्रोक्ता	वृ परा २.६३
आद्यास्तु व्याहृतीस्तिस्रो-	बृ.या. २.६५
आद्यास्त्रयो द्विजाः प्रोक्ता	वृ हा ४.१४१
आद्येनावाहयेद्देव	व २.६.१५७
आधत्तोऽथ धनं त्त्वा	नारद ६.३०
आधर्यं पूर्वपक्षस्य	नारद २.१४३
आधानकाला ये प्रोक्ता	कात्या ६.१
आधानतो द्वितीये तु	वृ परा ६.१४८
आधानादति शुद्धा	शाण्डि १.८९
आधानादष्टमे वर्षे	व २.३.३७
आधानादिकंसंस्कराः	वृ परा ६.२०२
आधाने पुंसि सीमन्ते	आश्व १८.१
आधाने होमयोश्चैव	कात्या ५.२
आधारकालचक्राय	वृ हा ३.११४
आधारवाज्य भागौ च	बृ.गौ. १६.७

ई

ईशो दण्डस्य वरुणो	मनु ९.२४५
ईश्वरं पुरुषाख्यं तु	बृह ९.२३
ईश्वरस्तु स एवान्ये	वृ ता १.९
ईश्वरस्यात्मनश्चापि	वृ ता ४.२२३
ईश्वर्या च समासीनं	वृ ता ७.१७४
ईषद्दानानि चान्यानि	दक्ष ३.६
ईषद्धौतं नवं श्वेतं	वृ ता ६.१०१
ईषायां तु रथो क्षे वा	वृ परा १०.३३०

उ

उक्तकाले तु यत्कर्म	विश्वा १.८
उक्तधर्मं परित्यज्य	वृ हा ५.२०
उक्तः पञ्च विधो धर्मं	पु २७
उक्तप्रायं विजानीयाद्या	आंपू ९३८
उक्तमुद्देशतो ह्येतद्	वृ परा ३.३३
उक्तलक्षणकन्यायाः	वृ परा ६.३९
उक्तः सन् कारयेद्	वृ परा ९२.१५६
उक्तस्तु संयमः पूर्वं	वृ परा १२.२५५
उक्तं कर्म याथाकाले	आश्व १.१३८
उक्तं प्रोक्तं प्रगीतं	कपिल ५०४
उक्तं शौचमशौचञ्च	दक्ष ५.१
उक्तं श्रुत्वावंचः पुण्य	वृ.गौ. १०.१
उक्तानि सर्वदानानि	वृ परा १०.३८६
उक्तालाभेषु सर्वेषां	वृ हा ५.४७
उक्ता नमा निष्कृतयः	वृ हा ८.३४२
उक्तामर्मगतं वाक्यं	शाण्डि २.५६
उक्तिरावश्यकी नेति संकल्पे	कण्व ६५
उक्तिरेव समाख्याता	कण्व ११३
उक्तेऽपि साक्षिभि साक्ष्ये	या २.८२
उक्तोऽधोर्ध्व विभागेन	वृ परा २.५७
उक्तो गृहस्थस्य	वृ परा ४.१५३
उक्त्वा चैवानृतं साक्ष्ये	मनु ११.८९
उक्त्वा पित्रादि संबंधं	आश्व १.१०१
उक्त्वेदं परिषिञ्चामि	आश्व १.५५
उक्षाणो वेधसा सृष्टा	वृ परा ५.४४
उख्यानुहरणं यत्त	कण्व ३४७

उग्रगन्धान्यगन्धानि	शंख १४.१५
उग्रः पारशवश्चैव	नारद १३.१०७
उग्राज्जातः क्षत्र्यां	बौधा १.९.१२
उग्राद् द्वितीयायां	बौधा १.८.१०
उचयोः शाखयोर्मुक्तं	व १.११.२२
उच्चरन्प्रणवं पूर्वं	भार १५.६९
उच्चारं घ्रंसनं कुर्वन्	शांण्डि १.३७
उच्चार्य्य ग्रामगोत्रे	व.२.४.३८
उच्चार्य नामगोत्रे	व २.६.३४०
उच्चार्य प्रणवं चाऽऽदौ	आश्व १०.३२
उच्चार्यमाणः सर्वत्र	बृ.या. २.११६
उच्चावचेषु भूतेषु	मनु ६.७३
उच्चिष्टमितस्त्रीणां	आप ५.८
उच्चैः संभाषणं हस्त	आंपू १०२७
उच्चैस्स्वरेण योगान्ते	शाण्डि २.३
उच्चोरस्कवऽनत्याश्च	वृ परा ६.१७१
उच्छिन्नशाखा याः काश्चित्	बृह १२.२६
उच्छिष्टजनसंस्पृष्टः	भार १८.३८
उच्छिष्टन्तु मदादद्या	ब्र.या. ४.११५
उच्छिष्टन्तु यदादद्या	ब्र.या. ४.११६
उच्छिष्टपात्रं तमभि	व २.३.१२७
उच्छिष्टपुरतो भूमौ	आश्व २३.७१
उच्छिष्ट भाजनं येनं	बृ.य. ३.४५
उच्छिष्टभोजनश्च	कण्व ४५७
उच्छिष्टमगुरोभोज्यं	व १.१४.१७
उच्छिष्टमन्नं दातव्यं	मनु १०.१२५
उच्छिष्टमशुचित्वंच	आप २.६
उच्छिष्ट माज्र्जनं	ब्र.या. ४.१४८
उच्छिष्टमार्जन चव	देवल १८
उच्छिष्टमिष्टोपहतामित्ये	बृह ९.१४०
उच्छिष्टं च पदास्पृष्टं	वृ परा ६.३१५
उच्छिष्टं तं द्विजं वस्तु	बृ.य. ३.४९
उच्छिष्टं वैश्यजातीनां	आप ५.६
उच्छिष्ट लेपो पहतानां	बौधा १.६.२८
उच्छिष्ट लेपो पहतानां	बौधा १.६.३५

उत्तरत उपचारो विहारः	बौधा १.१२.७
उत्तरत्र तदर्द्धञ्च	व २.६.१७
उत्तरं वासः कर्त्तव्यं	बौधा २.३.६६
उत्तराचमनं पीत्वा	आश्व १.१६०
उत्तराचमनं पीत्वा	आश्व १५.१४
उत्तराचमानात्पूर्वं	आश्व २३.७२
उत्तरारणिनिष्पन्नः	कात्या ७.१३
उत्तरां शेणिमुत्तरेण	बौधा १.७.२२
उत्तरीयं विना नैव	वृ परा ६.२७१
उत्तरीयं समाख्यातं	औ १.९
उत्तरीमाभावे च वस्त्र	व्या ११३
उत्तरेण चतुःकोटि रीशाने	ब्र.या. १०.१३९
उत्तरे वोर्द्धतस्चैव अवेक्ष्ये	ब्र.या.८.३२०
उत्तरेषामुत्तरोत्तरः	बौधा १.११.१२
उत्तरोत्तरदानेन	कात्या ४.१
उत्तानं किञ्चिदुन्नाम्य	बृह ९.१८९
उत्तानं वा विवर्त्त वा	औ ३.१२७
उत्तानौ तु यौश्चैव	ब्र.या.२.७७
उत्तारका व्याहृतयो	आंपू १५
उत्तरितास्सद्य एव	लोहि २२२
उत्तरेणार्द्धचैव कुर्य्यात्	व २.३.६३
उत्तार्य स्नानवस्त्रन्तु	व २.६.१४४
उत्तार्य्याचम्य उदकं	आंगिरस ६०
उत्तिष्ठ जननाथाऽग्ने	वृ परा ६.११५
उत्तीर्य च द्विराचम्य देव	वाधू ९१
उत्तीर्य्याचम्य उदकाद्	आप ९.१९
उत्तीर्याऽऽचम्याऽऽचान्तः	बौधा २.५.१५
उत्थाने तु पुनस्तस्याः	व २.५.५
उत्थाय नेत्रे प्रक्षाल्य	कात्या १०.३
उत्थाय पश्चिमे यामे	व २.३.१३९
उत्थाय पश्चिमे यामे	मनु ७.१४५
उत्थाय वामहस्तेन गृहीत्वा	वाधू ११
उत्थाय सम्यगाचामेत्	व २.६.२१७
उत्थाय हस्तौ प्रक्षाल्य	भार ११.११६
उत्थाय चम्य विधिवद्देवता	व २.३.१०५

उत्थायातान्द्रि शौचं	वृ हा ४.१५
उत्थायापररात्रमधीत्य	व .१.१२.४४
त्थायार्कं प्रतिप्रोहेत	कात्या ११.१०
उत्थायावश्यकं कृत्वा	मनु ४.९३
उत्थायोपासेत्संध्यां	वृ परा २.१६
उत्पत्ति प्रलयश्चैव	दक्ष १.२
उत्पत्तिरेव विप्रस्य	मनु १.९८
उत्पत्तिस्थितिसंहार	भार ६.४
उत्पद्येत गृहे यस्य	मनु ९.१७०
उत्पद्यते त्रिपादायाः	वृ परा ४.५
उत्पद्यन्ते विनश्यन्ति	मनु १२.९६
उत्पन्नमातुरे स्नानं	वृ परा ८.३०५
उत्पन्नमेतत्तु यतः	वृ परा ३.३१
उत्पन्नवैराग्यवलेन	ल हा ७.२१
उत्पादकब्रह्मदात्रो	मनु २.१४६
उत्पादनमपत्यस्य	मनु ९.२७
उत्पादयति यत्पुत्र शूद्रायां	बृ.गौ.१९.३८
उत्पादयन्ति सस्यानि	वृ परा ५.५०
उत्पादयन्नरक्तं च न	शाण्डि २.२०
उत्पाद्यन्ते व्ययन्ते	बृह १२.२३
उत्पाद्यपूर्वकमिमान	वृ परा ७.१८१
उत्पाद्य शोणितं गात्राम्	वृ.गौ.४.५२
उत्पाद्य सस्यानि तृणं	वृ परा ५.५४
उत्पूयाऽऽज्यं पवित्रे	आश्व २.४०
उत्प्रवेपितसर्वाङ्गो भय	नारा ४.७
उत्सर्गं च द्विजः कुर्यात्	आश्व १३.१
उत्सर्गेऽप्येवमेवं	आश्व १२९
उत्सवं वासुदेवस्य	व २.६ २७६
उत्सवे वासुदेवस्य	व २.६ २७७
उत्पादनं च गात्राणां	मनु २.२०९
उत्सादनं वै गात्राणां	औ ३.२६
उत्सादयन्ति विद्वासों	अत्रि स १४५
उत्साहाय्ययनंस्वान्त	वृ परा २.११६
उत्सृज्य मलमूत्रेच	व २.६.१३
उत्सृष्टा गृह्यते यद्यत्स्व	ब्र.या. ७.३४

ऋ

ए

ऐ

ओ

ओं पशुपते देवस्य	बौधा २.५.७६	ओं महासेनं तर्पयामि	बौधा २.५.१००
ओं पितरोऽर्यमा भगः	बौधा २.५.२६	ओं मातामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९१
ओं पितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८६	ओं मातामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९४
ओं पितामहीः स्वधा	बौधा २.५.१८९	ओं मातुः पितामहान्स्वधा	बौधा २.५.१९२
ओं पितृन् स्वधानामः	बौधा २.५.१८५	ओं मातुः पितामहीस्वधा	बौधा २.५.१९५
ओं पुष्टिं तर्पयामि	बौधा २.५.१२७	ओं मातुः प्रपितामहान्	बौधा २.५.१९३
ओं प्रजापतिं तर्पयामि	बौधा २.५.३२	ओं मातुः प्रपितामहीः	बौधा २.५.१९६
ओं प्रणवं तर्पयामि	बौधा २.५.१७१	ओं मातृःस्वधा नमस्त	बौधा २.५.१८८
ओं प्रतितामहान् स्वधा	बौधा २.५.१८७	ओं मात्यपत्नीः स्वधा	बौधा २.५.२०६
ओं प्रपितमामहीः स्वधा	बौधा २.५.१९०	ओं मात्यान् स्वधा	बौधा २.५.२०५
ओं प्राणोग्निपरात्मानं	वृह ९.१४३	ओं माधवं तर्पयामि	बौधा २.५.११५
ओं बुधं तर्पयामि	बोधा २.५.१०७	ओंमीशाय नमः परायेति	वृ हा ४.६६
ओं बैवस्वतं तर्पयामि	बौधा २.५.१४०	ओं मृत्युंजयं तर्पयामि	बौधा २.५.१३९
ओं ब्रह्मपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.३६	ओं यजुर्वेदं तर्पयामि	बौधा २.५.१७७
ओं ब्रह्मपार्षदीश्चतर्पयामि	बौधा २.५.३८	ओं यमं तर्पयामि	बौधा २.५.१३३
ओं ब्रह्मर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५६	ओं यमराजं तर्पयामि	बौधा २.५.१३४
ओं ब्रह्मणं तर्पयामि	बौधा २.५.३१	ओं राजर्षीस्तर्पयामि	बौधा २.५.१५८
ओं भवंदेवं तर्पयामि	बौधा २.५.५७	ओं रां नमः परायेति	वृ हा ४.६७
ओं भीमं देवं तर्पयामि	बोधा २.५.६३	ओं राहु तर्पयामि	बौधा २.५.१११
ओं भवस्य देवस्य	बौधा २.५.६५	ओं रुद्रपार्षदांस्तर्पयामि	बौधा २.५.८२
ओं ग्रवस्य देवस्य	बौधा २.५.७३	ओं रुद्र देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६१
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.४.७१	ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.६९
ओं भीमस्य देवस्य	बौधा २.५.७९	ओं रुद्रस्य देवस्य	बौधा २.५.७७
ओं भुवस्तर्पयामि	बौधा २.५.५१	ओं रुद्रांश्च तर्पयामि	बौधा २.५.८१
ओं भूमिदेवांस्तर्पयामि	बौधा २.५.१४५	ओं लम्बोदरं तर्पयामि	बौधा २.५.९१
ओं भूः पुरुष तर्पयामि	बौधा २.५.४८	ओं लां नमः परायेति	वृ हा ४.६८
ओं भूर्भुवः सुवीरिति	आंपू ७८७	ओं वक्रतुण्डं तर्पयामि	बौधा २.५.८९
ओं भूभुर्व स्वः पुरुषं	बौधा २.५.४९	ओं वरदं तर्पयामि	बौधा २.५.८७
ओं भूस्तर्पयामि	बौधा २.५.५०	ओं वरुणं तर्पयामि	बौधा २.५.४१
ओं मधुसूदनं तर्पयामि	बौधा २.५.११८	ओं वसवो वरुणोंऽज	बौधा २.५.२८
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.७२	ओं वसूंश्च तर्पयामि	बौधा २.५.२५
ओं महतो देवस्य	बौधा २.५.८०	ओं वाजसनेयियाज्ञवल्क्यं	बौधा २.५.१६८
ओं महर्षीं स्तर्पयामि	बौधा २.५.१५४	ओं वामनं तर्पयामि	बौधा २.५.१२०
ओं महस्तर्पयामि	बौध २.५.५३	ओं वायुं तर्पयामि	बौधा २.५.४०
ओं महान्तं देवं तर्पयामि	बौधा २.५.६४	ओं विघ्नपार्षदास्तर्पयामि	बौधा २.५.९२

औ

क

कन्याकुम्भलीरेषु	कण्व ३०६
कन्यागते सवितरि पितरो	अत्रिस ३५९
कन्यागते सवितरि	प्रजा १७३
कन्या च अक्षतयोनि	वृ.गौ. ४.८
कन्या चैव वरश्चोभौ	वृ परा ६.७
कन्यादाता ब्रह्मलोकं पुत्रदो	कपिल ४१३
कन्यादातृगृहात्तस्य	कण्व ५४२
कन्यादान विधिवत सर्वं	वृ परा १०.१७२
कन्यादानं च तत्कार्यं	बृ.य. ५.१०
कन्यादानं च तत्कार्यं	बृ.य.५.११
कन्यादानं पिंडदानं	व्या २०३
कन्यादानं पितृश्राद्ध	आं पू ७४२
कन्यादानं वृषोत्सर्गो	दक्ष ३.१४
कन्यादानात्परं ब्रूयुः	वृ परा १०.१७३
कन्यादाने च वृद्धौ	आश्व १८.६
कन्यादाने विवाहे च	व्या ८४
कन्यापुत्रविवाहेषु प्रवेशे	कपिल ७६
कन्याप्रतिगृहं कृत्वा	अ ६२
कन्याप्रतिगृहस्तेन	अ ६३
कन्याप्रदानसमये तेन	लोहि ३२६
कन्याप्रवेशे वस्त्राणां	वृ परा १०.२७५
कन्या भजन्तीमुत्कृष्टं	मनु ८.३६५
कन्यां कन्यावेदिनश्च	या १.२६२
कन्यां दातुं पिता योग्यः	ब्र.या. ८.१५५
कन्यां वरयमाणा नामेवंध	ल २.४.१६
कन्यायां दत्तशुल्कायां	मनु ९.९७
कन्याया दूषणं चैव	मनु ११.६२
कन्याया दूषणं चैव	वृ हा ६.१९४
कन्यायां तु गते भानौ	व्या १३१
कन्यायां प्राप्तशुल्कायां	नारद १३.३०
कन्यायामसकामायां	नारद १३.७१
कन्याया विक्रयश्चैव	वृ हा ६.१९२
कन्यायाश्च वरस्यापि	वृ परा ६.२४
कन्यायै वाससी दद्याद्	आश्व १५.३२
कन्यासंदूषणञ्चैव	या ३.२३८

कन्यैव कन्यां या	मनु ८.३६९
कन्यैवाक्षतयोनिर्या	नारद १३.४६
कपालनखकेशैश्च	भार ७.११३
कपालं वृक्षमूलानि	मनु ६.४४
कपालानि संहृत्याप्सु	बौधा १.४.१०
कपालिसांज्ञिजइत्येते	भार ११.५५
कपाली खट्वाङ्गी गर्दभ	बौधा २.१.३
कपालोच्छिष्टनिर्माल्य	भार १५.७२
कपित्थवा कुचीसर्ग	भार १४.२३
कपित्थ–विल्लामल की	वृ परा १०.३८०
कपित्थं पैलवं चैव	व २.५.५४
कपित्थैः श्रीफलैर्वापि	ब्र.या.४.११४
कपिलदीनि दानानि	वृ.गौ. ५.६७
कपिलश्चासुरिश्चैव	वृ.या. ७.६६
कपिलश्चासुरिश्चैव	ब्र.या. २.१००
कपिलक्षीरपानेन	ब्र.मा.२.१९५
कपिलक्षीरपानेन ब्राह्मणी	पराशर १.६५
कपिलक्षीरपानेन	वृ परा ४.२२५
कपिलापञ्चगव्येन	वृ.गौ. १०.२४
कपिलां गर्भिणीं गाञ्च	वृ हा ६.२४१
कपिलां प्रतिगृह्णीयाद्यो	अ ६६
कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. ९.१३
कपिलाया घृतं क्षीरं	वृ.गौ. १०.२१
कपिलाया घृतं ग्राह्यं	लघु यम ७२
कपिलाया घृतं ग्राह्य	पराशर ११.२९
कपिलाया घृतं तद्वन	वृ परा ९.२५
कपिलाया घृतेनापि	वृ.गौ. ९.२९
कपिन्नयान्तु दत्तायाम्	वृ गौ. ६.४९
कपिलायाश्च गोदुःलग्ध्वा	देवल ६८
कपिलाशतस्य मत्पुण्यं	बृ.गौ. १७४७
कपिला सर्वयज्ञेषु दक्षिणार्थं	वृ.गौ. ९.६३
कपिला ह्यग्निहोत्रार्थं	वृ.गौ. ९.२२
कपिलोपजीवी शूद्रस्तु	वृ.गौ. ९.१४
कपिलोजीविनः शूद्राद्यः	वृ.गौ. ९.२०
कपोलयोस्ताडायित्वा	लोहि ६३४

छ

ज

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याथ	विश्वा ४.७
जाग्रत् स्वप्नं सुषुप्तं	बृ. या. २.८८
जाग्रत् स्वप्नं च सुप्तं	बृ. या. २.१२४
जाग्रत्स्वप्नं सुप्तञ्च	ब्रा.या. २.१७९
जाग्रद्भि वा प्रसुप्तैः वा	वृ.गौ. ५.३४
जाघ्नयंमृद्वादशांहुत्वा	ब्र.या. ८.२२९
जांगलं सत्यसम्पन्नं	मनु ७.६९
जातकर्मणि वा चोले	वृ हा २.१३५
जातकर्मादिकं प्रोक्तं पुनः	अत्रिस २१४
जातकर्मादि कर्म्मणां	व्या ८६
जातवेदं सुवर्णञ्च	पराशर ७.१२
जातके नैव मृतकं क्षयं	बृ.य. ४.२०
जातके मरणे चापि सूतकं	कपिल १११
जातपुत्रे पिता स्नात्वा	वृ हा २.२५
जातमात्रः शिशुस्तावद्	दक्षत १.४
जातमात्रस्य तस्यैव	नारा ५.१४
जातमात्रस्य व तस्य	औ ६.१४
जातमात्रेण पुत्रेण पितृणां	अत्रिस ५४
जातये वाति सूक्तेन	वृता ५.३९६
जातरूपं न दद्याच्च सुगन्ध	कपिल ९५२
जातरूपं सुवर्णञ्च	यम १९
जातरूप्यं सुवर्णं तु दिवा	बृ.य. ३.९
जातवीर्य्यबलैश्वर्य्याः	वृ.गौ. १०.३६
जातवेदस इत्यत्र	वृ परा ११.३४०
जातवेदस इत्येषां प्रातः	विश्वा ७.५
जातः सुवर्ण इत्युक्त	औसं २४
जातः सूत्रौऽत्र निर्द्दिष्टः	औसं ३
जातस्य जातकर्म	वृ परा ६.१४९
जातस्य बालरोगाद्यैः	वृ परा १२.१८०
जातस्य लक्षणं कृत्वा	कात्या ८.९
जातस्यापि विधिर्द्दष्ट	संवर्त ४२
जातं जातेन शुद्धं स्यात्	दा १२५
जाता यदि तदा तस्या	लोहि १२८
जातायामपि तस्याः	कण्व ७०४
जाता ये त्वानियुक्तायामेकेन	नारद १४.१८
जाताः सुरक्षिताया	व्यास २.५५
जातिकेतककुन्दाद्यैः	वृ हा ७.७५
जातिजानपदान् धर्मान्	मनु ८.४१
जाति प्राधान्यकं नास्ति	बृह १२.१६
जातिभ्रंशकरं कर्म	नर ११.१२५
जातिभ्रंशकरं प्राहुस्तथा	नारा १.१६
जातिमात्रोपजीवी वा	मनु ८.२०
जातिरूपवयोवृत्ति	या ३.१५१
जातिं रूपं च शीलं च	वृ परा ६.२०
जातिर्विद्या च रूपं च	वृ परा ६.१९
जाति–विद्या–वय–शक्ति	वृ परा ६.१८
जाति विप्रो दशाहेन	दक्ष ६.९
जातिस्मरः च भवति	वृ.गौ.६.८८
जाती दर्शनमात्रेण	दा ५१
जातीपुष्पं तथार्क्कच	बृ.या. ३.६०
जातीफलञ्च कर्पूर	वृ हा ४.७३
जातीफलं धात्रीफल	व २ ६.११५
जातीर्यद्योगमात्मानं तदा	शाण्डि ३.६८
जाते कुमारे तदह आमं	औ ७.४
जाते तु सद्यः पतितस्त	कण्व १३५
जातेन शुध्यते जातं	लघुयम ७६
जातेन्द्रियाणां दौर्बल्ये	कपिल ७०७
जाते पुत्र पिता स्नात्वा	व २.२.३
जातेऽपि चौरसे भूयः	आंपू ३६३
जाते विप्रो दशाहेन	पराशर ३.४
जाते सुते पिता स्नायान्	आश्व ५.१
जातोऽधिकः प्रदत्तात्तु	आंपू १०११
जातोऽप्य नार्यादार्यायां	मनु १०.६७
जातो निषादाच्छूद्राया	मनु १०.१८
जात्यशुक्तिललाटा च	वृ परा १०.११३
जात्यादिगुणयुक्ताय	वृ परा ६.३
जात्युत्कर्षा युगे ज्ञेय	या १.९६
जानकी लक्ष्मणोपेतं	वृ हा ५.९८
जानीयादक्षरं देव्याः	वृ परा ४.१८
जानुद्वयेवरेण्यंत्तु	भार६.८३

झ

ट

ड

ण

त

ततः सम्पूजयेद्धरिम्	व २.६.२४७
ततसर्वप्रयत्नेन प्राणायामं	विश्वा ५.४०
ततः स वासुदेवेति	वृ हा ३.१७३
ततः सव्यं करंन्यस्य	वृ परा ७.१८३
ततः साक्षातपुष्पाणि	भार ११.७७
ततः सूतकनिवृत्यर्थं	व २.२.५
ततस्तज्वलमादाय पात्रेण	भार ११.२२
ततस्तथा स तेनोक्तो	मनु १.६०
ततस्तदूर्ध्वतस्योर्ध्वेरज	भार ११.४१
ततस्तदैव गायत्रिं	भार ७.९१
ततस्तद्वारिकूर्चेन समं	भार ११.२३
ततस्तन्मध्यस्थाने	भार ११.३९
ततस्तान् परुषोऽभ्येत्य	या ३.१९४
ततस्तीरं समासाद्य	ल हा ४.२९
ततस्तीर्थ समासाद्य	वृ.गौ. ८.२७
ततस्तुक्रमयोगेनपित्र्य	ब्र.या. ४.७४
ततस्तु तर्पयेदद्भिः	वृ.गौ. ८.५३
ततस्तु दक्षिणां दद्यात्	ब्र.या. ४.१३६
ततस्तु देवताःस्थाप्य	ब्र.या. १०.९९
ततस्तु दद्वहिर्देशे रुद्रा	भाग ११.५३
ततस्तु वाससी शुक्ले	वृ परा ११.२९
ततस्तु हव्यमानाग्नि	वृ .गौ. ८.५९
ततःस्तृप्तान् द्विजान्	वृ परा ७.२६२
ततस्ते ऋषयः सर्वे	पराशर १.५
ततस्ते प्रणिपातेन दृष्ट्वा	आंउ २.९
ततस्तैरभ्युनुज्ञातो	औ ५.४५
ततः स्नात्वा विधानेन	वृ हा २.१०७
ततः स्नानत्रयं कुर्यात्	विश्वा १.७८
ततः स्यन्दनमानीय	वृ हा ६.२५
ततः स्वगृहामागच्छे द्वाग्यतो	व २ ६.१४९
ततः स्वपेद्यथाकामं	आश्व १.१८५
ततः स्वमालयं गच्छेद्भार्य	व २. ४.७१
ततः स्वयं च नित्यं	आंपू २०९
ततः स्वयम्भूः भगवान	मनु १.६
ततः स्वर्गफलान् भुक्त्वा	भार १२.५९
ततः स्विष्टकृतं कृत्वा	आश्वा १४.८
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	आश्व ११.७
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	व २.४.८६
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा	व २.६.३८६
ततः स्विष्टकृतं हुत्वां	वृ हा ८.७२
ततः स्विष्टकृतादीनि	व २.६.४११
ततः स्विष्ट कृताहीति	व २.३ ७५
ततः स्विष्टकृदादि	आश्व ४.१५
ततः स्विष्टकृदादि	आश्व १५.४७
ततः स्विष्टकृदादि	आश्व ३.८
ततः स्वैर विहारी	या १.३२९
ततोऽर्कमंडले विष्णुं	व २.३.५
ततोऽग्निस्थाप्पनं	व २.६.४०६
ततोऽग्नौ करणं कुर्याद्	विश्वा ८.६०
ततोऽअतिथिं भोजयेत	व १.११.५
ततोऽधिको यज्ञदत्त	आंपू ३३२
ततोऽधीमीत एकाग्रं	औ ३.४९
ततोऽनुपहतैः रोतैः	भार १८.३३
ततोऽन्तर्मातृकान्यासं	विश्वा ६.४३
ततोऽन्नं बहुसंस्कारं	औ ५.१९
ततोऽन्नसाधनं कृत्वा	व्यास २.२८
ततोऽन्यथा राजामंत्रिभि	व १ १६.१८
ततोऽन्यदन्नमादाय	व्यास ३.३५
ततोऽन्युमुत्स्टजेद्	औ ५.६८
ततोऽपि कृतया मौञ्ज्या	कपिल ८९७
ततोऽपिद्विगुणस्तस्मात्	लोहि ५०६
ततोऽभिवादयेत्वृद्धा	ब्र.या.८.५८
ततोऽभिवादयेद् वृद्ध	या १.२६
ततोऽभिवाद्य स्थविरान्	व्यास १.२६
ततोऽभिषिञ्चेन्मन्त्रैस्तु	बृ.या. ७.१८
ततोऽभिषेचनं कुर्याद	ब्र.या.८.११२
ततोऽभिषेचनं कुर्यान्मन्त्र	ब्र.या. ८.११०
ततोऽभिषिञ्चेदाचार्य्यो	शाता ६.२६
ततोऽअम्भिस निमग्नः	शंख ९.१२
ततोऽम्भसि निमग्नस्तु	ब्र.या. २.२३

तद्वत्सूतकिनश्चापि	लोहि १९०
दद्वदन्धर्मतोऽर्थेषु	मनु ८.१०३
तद्वद्भर्त्तारमादाय दिवं	व २.५.७३
तद्वस्त्रं सहसाच्छित्त्वा	लोहि ६१०
तद्वहि पूर्वदिक्पत्रे प्रज्ञा	भार ११.४५
तद्वहि परितोभागे	भार २.४५
तदवाक्यतः पुनर्लोकेऽप्यल्प	कपिल २६
तद्वाक्यादेव देवस्य	वृ हा ८.१८६
तद्वाचकत्वकार्याय भवन्ति	कण्व ४८
तद्वाससोरसम्पत्तौ	वृ परा २.१६२
तद्वाहौ निक्षिपेच्छिष्य	वृ हा २.५६
तद्विच्छित्तिर्दशायां चेद्यने	कपिल ९७४
तद्विदः कोचिदिच्छन्ति	वृ परा ६.३४८
तद्विदस्तु दिवं यांति	वृ परा ६.८९
तद्विधानं च वक्ष्यामि	कण्व ६५०
तद्विधानं ममाचश्व	वृ हा २.२
तद् विधाना मिदं ये	वृ हा ५.७३
तद् विधिज्ञः शुचि शांतो	वृ परा ११.२१०
तद्विना किं शरीरेण	वृ हा ३.११०
तद्विना वर्त्तते मोहात्	वृ हा ५.३२
तद् विशिष्टमिति प्रोक्तं	वृ हा ५.३०
तद् विष्णो परमं धाम	वृ हा ७.३२४
तद् विष्णोरिति च द्वाभ्यां	वृ हा ८.२४४
तद् विष्णोरिति मंत्राभ्यां	वृ हा ७.१८५
तद विंष्णोरिति मंत्राभ्यां	वृ हा ७.१९०
तद् विष्णो रिति मंत्रेण	वृ परा ७.२४७
तद्विष्णोरिति मन्त्रेण	वाधू ८९
त द्विष्णोरिति मंत्रोयं	वृ परा ४.१०४
तद् विष्णोरिति वै विष्णु	वृ परा ११.२२२
तद्विष्णोश्चैव गायत्री	ब्र.या. २.२१
तद्वीथ्यां तेन तच्छ्राद्ध	आंपू २६
तद्वृच्युयारणं पाककाष्टा	कपिल २०३
तद्वैदिकेषु शास्त्रेषु सदकर्मसु	कपिल २७
तद्वै युगसहस्रान्तं ब्राह्म	मनु १.७३
तद्वरणं बहिर्लोम	वृ परा १०.१४३
तद्ब्रवीमि परंधर्मं	वृ हा १.८
तनयग्रहणे यो वा	कण्व ७४१
तनयं मम ते यूयं कृपया	कपिल ३९३
तनयाः शास्त्रमार्गेण	आंपू ४०९
तनयासु विभक्तानां प्रत्तासु	लोहि २९०
तनयोऽहमिति ज्ञात्वा	शाण्डि ४.१५६
तनूनपा अग्नेऽसि	ब्र.या. ८.३८
तंतुकर्म न कर्तव्य	बार १५.२३
तन्तुवाया भवन्त्येन	औ सं १३
तन्तुवायो दशपलं	मनु ८.३९७
तन्तूनि चोपवीतानां	वृ हा ५.४५
तन्त्र श्राद्धदिने यत्नाद्देवता	कपिल २४८
तंत्रमंत्रे प्रकुर्वीत कृत्सने	कपिल ३०८
तन्नार्यः कामतः प्राप्ताः	आंउ १०.२०
तन्निमित्तमिदं रूपं	आंपू १०१
तन्निमित्तस्य तृप्त्यर्थं	वृ परा ७.१५१
तन्निरोधे कथं त्वं वै	लोहि ५३७
तन्निर्माल्यं ततो गङ्गा	आंपू ९०८
तन्नृभि क्रियमाणानां	वृ परा ११.३
तन्नयूनमधिकं चैव	व्या ४८
तन्नयूना एव कथिता	आंपू ४१०
तन्मण्डलस्थं मां ध्यायेत्	वृ.गौ. ८.५०
तन्मध्यमंडले ह्यात्मा	वृ परा १२.२८७
तन्मध्याद्यः शिशुर्जातो	बृह ९.६९
तन्माध्ये कल्पवृक्षस्य	वृ हा ३.२५२
तन्मध्येऽग्निं प्रतिष्ठाप्य	व २.२.१५
तन्मध्ये चिन्तये	वृ परा १२:३१४
तन्मध्ये तु विधित्पद्म	भार ७.५५
तन्मध्ये पद्ममालिख्य	भार ७.६२
तन्मध्ये पृथुलैः कुम्भै	कण्व ६५३
तन्मनुष्यैः कथं प्राप्यं	वृ परा १२.३४७
तन्मंत्रकृत्प्रणत्वेवं दशाहं	कपिल ३३२
तन्मंत्र मूलमंत्र वा	वृ हा २.१००
तन्मंत्रमंत्ररत्नाभ्यां	वृ हा ५.४५५
तन्मनत्रविनियोगज्ञः	कपिल ३६

तं तस्य पितरः सर्वे	आंपू ५५२
तं त्यजेच्छक्तिमान्सोऽय	नारा ३.५
तं दण्डयेद् वर्ष शतं	वृ हा ४.२१४
तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्ष	विष्णु १.४४
तं देशकालौ शक्तिं च	मनु ७.१६
तं पूजयित वा अन्नेन	वृ.गौ. ६.४७
तं पृच्छन्ति महात्मान	बृ.या. १.४
तं प्रतीतं स्वधर्मेण	मनु ३.३
तं प्रत्तैवेति सूक्तेन	वृ हा ८.५
तं भोजयित्वोपासीता	व १.११.१३
तं मयूस्वकायायां	भार ६.३
तं यस्तुद्वेष्टि संमोहात्स	मनु ७.१२
तं योगं सुसमीक्ष्येत	आंपू १८४
तं राज्ञा चानुशिष्यात्	व १.१.४२
तं राजा प्रणयन्सम्यक्	मनु ७.२७
तं वनस्थमनाख्याय	वृ हा ४.२३७
तं श्रुत्वा वा अथवा दृष्ट्वा	वृ.गौ. ३.८३
तं सङ्गृह्य विधानेन	लोहि २०६
तं स्वीकुर्वन्ति विद्वांसः	वृ हा १.१६
तं हि स्वयम्भू स्वादास्यात्	मनु १.९४
तमग्रयं ब्राह्मणं मन्ये	वाधू १९४
तमजानन्नपि तदा शास्त्र	लोहि ३११
तमाभि प्रगायतेति	वृ हा ६.३८
तमसः परंगतस्या	व २. ६.२२२
तमसा बहुरूपेण वेष्टिताः	मनु १.४९
तमसा मूढचित्तस्तु जायते	नारा ५.२२
तमसो लक्षणं कामो	मनु १२.३८
तमात्मरूपं परमव्यंय	वृ परा १२.३७१
तमुत्तायणे कर्यादुत्तरा	आंपू ६५४
तमुद्दिश्यदिवारात्र प्रलपन्	लोहि २१०
तमुपनयेत्षष्ठं	बौधा १.८.१४
तमेव पूजयेद् रामं	वृ हा ३.२७३
तमेव प्रतिगृह्णानो नंरके	अ ४६
तमेवं विद्वांसमेवं	बौधा १.२.५५
तमेव मनसा ध्यायेद्	वृ हा १.२३

तमोनिविषृचित्तेन	वृ गौ.३.३३
तमो ऽयं तु समाश्रित्य	मनु १.५५
तया चेत्तेषु कृत्येषु	आंपू २१९
तयाधर्मार्थकामानां	दक्ष ४.२
तया न कुर्यात्पाकंचे	कपिल १९८
तया वा तेन वोक्ते वाडभ्य	लोहि ५०२
तयैवाक्षनृजानित्या	भार ७.११६
तयैवाभ्यच्चर्यगोविन्दं	वृ हा ५.१०५
तयोः प्रत्युपकारोऽपि	औ १.३७
तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं	नारद १३.३
तयोरन्नमदत्वा च भुक्त्वा	अत्रि ५.५
तयोरपि च कुर्वीत	विश्वा १.५८
तयोरपि पिता श्रेयान्	नारद २.३३
तयोरप्युभयो रत्नं	वृ .गौ. ११.२०
तयोरलाभे राजाहरेत	व १.१७.७४
तयोरेकान्तरं ज्येष्ठं	ब्र.या. ८.१८१
तयोरेवाधिकारोऽयं	आंपू ३०४
तयोरेवाधिकरोऽयं	कपिल ३८२
तयोर्दासो मकारेण	वृ हा ७.३८
तयोर्नित्यं प्रियं कुर्याद्	मनु २.२२८
तयोर्मध्ये अमा ह्येषा	बृह ९.९८
तयोर्विदूद्वयं मध्ये	भार २.२५
तयोस्तदेव पावनम्	बौधा १.२.४२
तयोस्तु देवताषिदि	वृ परा ३.६
तयोः स्वरीति जीवस्तु	वृ हा ३.८८
तरक्षु–गोमायु–मृगारि	वृ परा ११.८७
तरत् समन्दीधावति	वृ परा २.१३९
तरत्समाः शुद्धवत्यः	बृ.या. ७.२४
तरन्ते मानवाः देवाः	वृगौ ५.३
तरुणादित्य संकाश	वृ हा ३.२५८
तरुणां स्थापने गोप कृष्णं	वृ हा ६.४३१
तरुणारूप संपन्ना	ब्र.या. ११.१९
तरुणी सुकुमारांगी	वृ हा ३.२५
तरुणौ सुविषाणौ च	वृ परा १०.२९
तरुणादित्यवर्णानि	बृ.गौ. १२.४८

त्यक्त्वा पितामहं	आंपू १००२	त्रयोदर्भाश्च पित्रञ्जुल्यां	ब्र.या. ८.३१०
त्यक्त्वा सम्यग्विचार्यै	आंपू १००३	त्रयोदश तृतीये स्याद्	आंपू ६०९
त्यक्त्वा विषयभोगांश्च	दक्ष ७.२१	त्रयोदश दक्षिणं बाहुं	ब्र.या. २.१२०
त्यक्त्वोन्द्रियसुखं	आश्व १.१८८	त्रयोदशीं दक्षिणे तु	वृ हा ५.१९९
त्यजन्तोऽपतितान्	लघुयम १९	त्रयोदशी मघा कृष्णा	औ ३.११३
त्यजेत्पितामहं यत्ना	आंपू १००५	त्रयोदशेऽह्नि सम्प्राप्ते	व २.६.३७९
त्यजेन्नग नदीनाम्नी	वृ परा ६.३२	त्रयोदशेऽह्नि वा कुर्यात्	व २.६.३६३
त्यजेन्दुष्टां दण्ड्य	व्यास २.९	त्रयोदश्यां तथा रात्रौ	औ ९.१०८
त्यजेत्पर्षितं पुष्पं	प्रजा १०८	त्रयो धर्मो निवर्तन्ते	मनु १०.७७
त्यजेदाश्वयुजे मासि	मनु ६.१५	त्रयोऽपि नियता यस्य	वृ परा १२.१२६
त्यजेद्देशं कृतयुगे	पराशर १.२५	त्रयोलक्षास्तु विज्ञेया	या ३.१०२
त्यागं कृत्वा चित्तमपि	कपिल ९७६	त्रयोलोकास्त्रयो	अत्रिंस २५
त्रपु–सीसक– ताम्रादि	वृ परा १०.११	त्रयो वर्णा द्विजातयो	व १.२.२
त्रपुसीसकताम्राणां	या १.१९०	त्रयो वर्णा ब्राह्मणस्य	व १.१.४०
त्रपुहारी च पुरुषो जायते	शाता ४.६	त्रसरेणवोष्टौ विज्ञेया	मनु ८.१३३
त्रय एव पुरा रोग	व १.२१.२६	त्रातारमिन्द्र इत्यृचा	वृ हा ८.३८
त्रयणामपि वह्नीनामग्नि	बृ.गौ. १५.४१	त्रातारमिन्द्र त्वन्नोऽग्ने	वृ परा ११.१२३
त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति	मनु ८.१६९	त्रातारमिन्द्रमितीन्द्र	वृ परा ११.२२१
त्रयस्तु वैष्णवा दण्डा	वृ हा ४८	त्रायते दानम् अपि एकम्	वृ.गौ. ३.८०
त्रयस्तु स्नातका	वृ परा ६.१६५	त्रासाख्यः स्पटिकप्रख्यः	भार ७.३३
त्रयस्त्रिंशंच विप्राणां	वृ परा ५.१९१	त्रासितोऽपि यथा मूर्खै	शाण्डि ४.२३७
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	आंपू ६०२	त्राहि त्राहीहि लोकेश	वृ हा ८.१८७
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	कण्व ६५१	त्रिंशत् कोट्यस्तु विख्याता	वृ परा २.७४
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसंख्य	कण्व ३५३	त्रिंशत्कोट्यस्तु विख्याता	बृ.या. ६.१२
त्रयस्त्रिंशद्भि अमरैः सेंद्रैः	भार १२.३२	त्रिंशद्युगसहस्राणि	ब्र.या. ११.६०
त्रयस्त्वंज त्नयःश्रीकाःशङ्ख	कपिल ७२०	त्रिंशद्वर्ष त्यक्तपितृ	आंपू १८२
त्रयः स्वतन्त्रता लोकेऽस्मिन्	नारद २.२८	त्रिंशद्वहेत्कन्या	मनु ९.९४
त्रयाणां चैव देवानां	वृ.या. ६.१९	त्रिंशाशो रोमविद्धस्य	नारद १०.१५
त्रयाणामपि चैतेषां	मनु १२.३०	त्रिंशाहं कन्यकामाता	ब्र.या. १३.२२
त्रयाणामपि चैतेषां	मनु १२.३४	त्रिसद्वर्षकृतात्पापात्पूयते	वृ.गौ. ९.३८
त्रयाणापि यज्ञानां श्रेष्ठ	लता ४.४१	त्रिकालं च त्रिलिङ्गं	बृ.या. २.८३
त्रयाणामप्युपायानां	मनु ७.२००	त्रिकालमर्चयेन्नित्यं	व २.५.८१
त्रयाणामुदकं कार्यं	मनु ९.१८६	त्रिकालस्नानयुक्तस्तु	लहा ५.५
त्रयीमय त्रयीनाथ त्रयीलम्भ	बृ.गौ. १८.३९	त्रिकालस्नानयुक्तस्य	बृ.गौ. १७.२२
त्रयोऽग्नयस्त्रयोवर्णा	भार १५.८८	त्रि कृत्वोऽभ्युपेयादपो	व १.७.१२

द

द्यूतं च जनवादं च	मनु २.१७९
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२१
द्यूतं समाह्वयं चैव	मनु ९.२२४
द्योतयन् प्रथमं व्योम	वृ .गौ. ७.१०३
द्यौः पुमान्धरणी नारी	वृ परा ५.११३
द्यौर्नय इन्द्रेति दद्यात्	वृ हा ८.४३
द्यौर्भूमिरापो हृदयं	मनु ८.८६
द्रवद्रव्याणि शुद्धचंति	वृ परा ६.३३८
द्रवाणां चैव सर्वेषां	मनु ५.११५
द्रव्यपाणिश्च शूद्रेण	आप ८.२१
द्रव्य ब्राह्मणसम्पत्तौ	औ ३.११७
द्रव्यमन्त्रे च मन्त्रेषु	शाण्डि १.८४
द्रव्यमन्नं जलं शाकं	कण्व ७८७
द्रव्यमात्रन्तु सर्वत्र	व २.६..५०७
द्रव्यस्य नाम गृह्णीयाद्	वृ परा १०.२८५
द्रव्यस्य भूमिमुख्यादेर	कपिल ५८२
द्रव्यस्य संपत्सु	प्रजा १८
द्रव्य हर्तृणां प्रायश्चित	विष्णु ५२
द्रव्याणाञ्च तथा शुद्धि	वृ परा १.५५
द्रव्याणामप्यलाभे तु	व २.६.९२
द्रव्याणामल्पसाराणां	मनु ११.१६५
द्रव्याणि धर्मकृत्येषु	लोहि ६९२
द्रव्याणि निक्षिपेत्	वृ हा ४.७१
द्रव्याणि हिंस्याद्यो	मनु ८.२८८
द्रव्याण्यमूनिपद्राहुः	भार १४.३०
द्रव्याण्यमूनिपात्रेषु	भार ११.८४
द्रव्याण्यन्यानि चादाय	वृ परा १०.३३३
द्रव्यान्तरयुतं तैलं न	वाधू ४१
द्रष्टारो व्यवहाराणां	या २.२०५
द्रंष्ट्राभिर्भक्षिता ये च ये	बृ.य. ४.३१
द्रहिणेन तदा प्रोक्तं	ब्र.या. १२.११
द्राक्षोत्थैश्चैव खर्जूरैः	वृ परा १०.७७
द्रुपदाघमर्षणं सूक्तं	वृ परा २.५६
द्रुपदा नाम सावित्री	बृ.या.७.१८१
द्रुपदां नाम गायत्रीं	आंपू २०१
द्रुपदां वा जपेद्देवीमजपां	वृ परा ४.५२
द्रुपदां वा तिजो जप्त्वा	वृ परा ८.२२०
द्रुमशाकं महाशाकं	व २.६.१७२
द्रुमेण राजदन्तिहृदती	शाता ६.१४
द्रुमैः नाना विधैरन्येः	वृ परा १०.३७६
द्रोणाढकं तदर्धं वा	वृ परा ८.२२२
द्रोण्यम्बूशीर कुम्भाभः	वृ परा ८.२१४
द्रोण्यान्दोलायामपि	वृ हा ५.३०९
द्वदर्भे प्रोक्षणी स्थाप्य	ब्र.या. ८.२५६
द्वन्द्वान्येतानि बहु	कात्या २५.११
द्वयंशं ज्येष्ठो	व १.१७.४०
द्वयंगुलस्तत्र विस्तारः	वृ परा ११.२७६
द्वयन्तरः प्रतिलोम्येन	नारद १३.११७
द्वयभियोगस्तु विज्ञेयः	नारद १.२२
द्वयमु वै ह पुरुषस्य	व १.२.७
द्वयमेतत्प्रकथितं स्त्रिय	आंपू १८०
द्वयं निष्ठं द्वयार्थज्ञ	व २.७.१४
द्वयंमुह्वै सुश्रवसो	गौधा १.१.३३
द्वयं समाप्य यः स्नायात्त	वृ परा ६.१६७
द्वयुनर्विश्रामसंस्थाप्य	ब्र.या. ८.२४६
द्वयेन मूलमंत्रेण	वृ हा ७.१३५
द्वयेन वृत्तियाथात्म्यं	वृ हा २.१३९
द्वयेनैव प्रकुर्व्वीत	वृ हा ५.१३८
द्वयोरप्यनयोः श्रीशं	वृ हा ५.४२०
द्वयोरप्येतयोर्मूलं यं	मनु ७.४९
द्वयोरापन्नयोस्तुल्यं	नारद १६.११
द्वयोर्विवदतोरर्थे द्वयोः	नारद २.१४२
द्वयोर्विवदमानयो	व १.१६.३
द्वयोश्चापि हविःशेषं	आश्व २.६०
द्वयोस्त्रयाणां पंचानां	मनु ७.११४
द्वात्रिंशन्निष्कसंयुक्तं	वृ.गौ. ६.१६५
द्वादश इत्येव पुत्राः	व १.१७.१२
द्वादशपुत्र वर्णनम्	विष्णु १५
द्वादश प्रतिमास्यानि	कात्या २४.८
द्वादश मासान् द्वादशाधि	व १.४.२७

ध

न

न दानं दीयते तस्य	वृ परा १०.७०	न दृश्यते तथा देवैः	वृ गौ. १.४६
न दानं यशसे दयान्न	वृ परा १०.२९०	न देयमेतदध्याय	भार १२.६१
न दानात् परमो धर्म	वृ परा १०.३	न देवायतनात् कुड्याद्	औ २.४४
न दानार्हो ज्येष्ठपुत्रः	लोहि २८८	नद्यां तडागे खाते वा	वृ हा ४.२७
न दाप्योऽपह्नुतन्यक्ता	वृ हा ४.२३८	नद्यां तु विद्यमानायां	ल हा ४.२५
न दाप्योऽपह्नुतं तत्तु	या २.६७	नद्यां सत्यां न च स्यायादन्	वृ.गौ. ८.२२
न दास्यमीशस्य	वृ हा ७.१६९	न नद्यांमेहनं कार्यं	व १.६.१२
न दिवापि स्त्रियं गच्छेद्	वृ परा ६.६६	न नद्यां मेहनं कुर्यान्	व २.६.९
न दिवा स्वप्नशीलेन	बौधा २.२.८७	नद्यां स्नात्वाऽथ गायत्रीं	भार १६.४६
न दिव्य पुरुषो धीमान्	विष्णु म १०६	नद्या श्च पुष्करिण्या	वृ हा ७.२४०
नदीकक्षवनदाह	व १.१९.१७	न द्रव्याणामविज्ञाय विधिं	मनु ४.१८७
नदीकूलं यथा वृक्षो	मनु ६.७८	न द्वयोर्विप्रपिण्डानां	वृ परा ६.२६८
नदीगाः सिन्धुगा वापि	आंपू ९३५	न धर्मस्यापदेशेन	मनु ४.१९८
नदी ज्योतीषि वीक्षित्वा	औ २.४१	न धावेदुदपानार्थ	ब्र.या. ८.१२७
नदीतटाककूपेषु स्नान	कण्व १५९	न ध्यातव्यं न वक्तव्यं	दक्ष ७.३३
नदीतीरेऽब्धितीरे	भार १८.७	न नक्तं स्नायात्	बौधा २.३.५२
नदीतीरेषु तीर्थेषु	औ ५.१५	न नग्नः स्नायात्	बौधा २.३.५१
नदीतीरे सरित्कोष्ठे	विश्वा ६.२	न नदीं बाहुकस्तरेत	बौधा २.३.५३
नदीनां संगमे तीर्थेष्वा	नारा १३.६३	न नहं ग्रुहमित्याहुः	प्रजा ५५
नदीपर्वतसंरोधे मृते	अत्रिस २२०	न नामापि हि दुःखस्य	वृ परा १२.३१९
नदीं तर्तुमानां पारं	प्रजा १२	न नारिकेल बालाभ्यां	आप १.२५
नदीवेगेनशुद्धिस्यात्	व २.६.४९७	न नारिकेलेन न फालकेन	आंउ १८५
नदी वैतरणीनाम यममार्गे	ब्र.या. ११.२६	न नारिकेलैर्नच शाणबालैर्न	पराशर ९.३३
नदीषु देवखातेषु	मनु ४.२०३	न निरीक्षेत देवानाम्	वृ हा ८.१४३
नदीषु देवखातेषु	ल व्यास २.१०	न नासाचपलः कर्मी न	शाण्डि ५.४०
नदीषु देवखातेषु	वाधू ६३	न निधायकरं भूमौ	व २.६.२०६
नदीष्वपि समुद्रेषु	पराशर ९.६	न निर्व्वपति यः श्राद्ध	अत्रिस ३५७
नदीष्ववैतनस्तारः	नारद १८.३६	न निर्हारं स्त्रियं कुर्युः	मनु ९.१९९
नदीसङ्गतीर्थेषु शुचौ	बृ.गौ. १६.६	न निषेध्योऽल्पबाधस्तु	या २.१५९
नदीसन्तारकान्तार	१.४३	न निष्क्रयविसर्गाभ्यां	मनु ९.४६
नदीसानामं गृह्णाति ततो	ब्र.या. ८.३१३	न निष्ठीवेत्	व १.१२.९
नदीस्नानानि सर्वत्र	आंपू १५३	ननु भूताण्डपिण्डस्य	वृ.या. ७.१७४
नदुष्येच्छक्तिजः प्राह	वृ परा ६.३४३	न नृत्येन्नैव गायेच्च	मनु ४.६४
न दुष्येत् सन्तता धारा	आप २.३	नन्दुं कुञ्जजल्पंश्च	शाण्डि ४.२८
न दूरे तास्तु नेतव्या	वृ परा ५.७	नन्दं च वसुदेवञ्च	वृ हा ७.२१४

नारायणाय नमः ओ	विष्णु म ९८
नारायणी वासुदेवी	वृ हा ७.४
नारायणो घनश्यामः	वृ हा २.८०
नारायणोऽच्युत श्रीमान्	वृ हा ३.१०
नारायणो महाशब्दो	वृ हा ३.१४
नारिकेलोदकैः पूर्णं तथा	कपिल ९१३
नारी च शुभभर्तारं	वृ परा १०.२५९
नारीणां च नदीनां च	वृ परा ६.५६
नारीरपुरुषहन्ता च कन्यां	आंउ ७.९
नारी प्रसूयते पुत्रं	ब्र.या. ५.१९
नारीणामपि कर्तव्या	वृ हा ८.८३
नारीणां चैव वत्सानां	शंख १६.१६
नारी वाऽपि कुमारो वा	बृ.या. ४.५
नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि	मनु २.१६१
नार्चयेन्न प्रणमेच्च	वृ हा ८.१४६
नार्तो न मत्तो नोन्मत्तो	मनु ८.६७
नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता	नारद २.१५६
नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता	मनु ८.६४
नार्द्रवासाः स्थलस्थस्तु	वृ परा २.२०३
नार्य्यश्च रमणैः सार्द्धं	वृ हा ५.४९८
नार्वाकं संवत्सराद्विंशात	नारद २.११
नालंकृतेषु विधिषु	वृ हा ६.४१३
नालपेद् विष्णवभक्तै	व २.१९९
नालिकेर्याख्यशाकञ्च	वृ हा ८.१००
नावज्ञेयाः कदापि स्युर्नृप	वृ परा ६.३७४
नावबुध्यन्ति ये	बृ.गौ. १५.७९
नावं च सांशयिकी	व १.१२.४२
नावगाहः प्रकर्तव्य	आंपू १७४
नावमन्याश्चनायत्ना	कण्व ६०६
नावमन्येत पूजयित्वा	कपिल ८१८
नावराद्धर्यावलयो भवन्ति	कात्या १३.१४
नावश्यं भोजने मौनं	शाण्डि ४.१२८
नावाह्नं सविरेन्न	ब्र.या. ३.३८
नाविनीतैर्व्रजेद्धुर्यैन च	मनु ४.६७
नाविस्पष्टमधीयीत	मनु ४.९९
नावृतो यज्ञं गच्छेत्	व १.१२.३९
नावेक्ष्या एव चैते	आंपू ७६७
नावैष्णवान्नं भुंजीत	वृ हा ८.३०७
नाशंकरोत्येकवर्षे स्यादे	व्या ३७७
नाशयन्त्याशु पापानि	ल व्यास २.६५
नाशये जनित पापं	भार ६.१६२
नाशुचिर्मालिनो वाऽपि	वृ हा ५.३०२
नाशौचं सूतके पुंसः	व १.४.२१
नाऽऽशौच सूतके स्यातां	वृ परा ८.१६
नाश्नन्ति पितरस्तस्य	मनु ४.२४९
नाश्नान्चि श्ववतो	व १.१४.६
नाश्नीयाच्छयनारूढो	शाण्डि ४.११९
नाश्नीयात् संधिवेलायां	मनु ४.५५
नाश्नीयाद्भार्यया सार्धं	मनु ४.४३
नाश्रम कारणं धर्मे	या ३.६५
नाश्रेत्रियतते यज्ञे	मनु ४.२०५
नाष्टमी सप्तमीयु सप्तमी	ब्र.या. ९.४
नाष्टकासु भवेच्छ्राद्ध	कात्या ५.४
नासदासीति सूक्तानि	आश्व २३.६६
नासनस्तु स्वधाकारै	बृ.या. ७.७०
नासन्दिष्टः प्रतिष्ठेत	नारद ६.१०
नासहस्राद्धरेत फालं	या २.१०१
नासान्ते भूपदं न्यस्य	विश्वा २.३५
नासापुटे (ह्य) अक्षकर्णी	विश्वा २.३१
नासावेधनकीलं तु	वृ परा ५.५६
नासिकाकृष्टं उच्छ्वासो	बृ.या. ८.२२
नासिका कृष्ण सोध्यानं	ब्र.या. २.५३
नासिका मूलमारभ्य	व २.६.४९
नासिकामूलमारभ्य	वृ हा २.७१
नासिकायां तथाक्ष्णाश्च	वृ हा ३.१२२
नासिकौष्ठान्तरं पश्चात्	वृ हा ४.२०
नाऽऽसीनोनाऽऽसीनाय	बौधा १.२.२८
नासृक्षद्यदि राजानं नापिं	वृ परा १२.५
नासोदकं नेत्रवारि स्वे	शाण्डि ३.१०३
नासौ तत्पदमाप्नोति	बृ.गौ. २२.२२

पितृव्यपत्नीभगिनी तादृश्यो	कपिल ६०६
पितृव्यपत्न्यादीनां	आंपू ४२५
पितृव्यपत्न्यादीनां	आंपू ११८
पितृव्य–भ्रातृजायां च	वृ परा ८.२४९
पितृव्यभ्रातृजार्यां	प्रजा ६०
पितृव्यमातृभ्रातृभार्यां च	बृ.या. ३.४
पितृव्यं पुत्रः सापत्न्य	पराशर ४.२३
पितृव्यमातुलादीनामपि	कण्व ६८०
पितृव्यापुत्राः सापत्ना	दा १५९
पितृव्येणाविभक्तेन भ्रात्रा	नारद २.३
पितृशेषं तथोच्छिष्टं	व्या २९७
पितृश्चमनसाध्यात्वा	ब्र.या. ४.१२८
पितुश्चेत् सूतकं पूर्णं तथा	कपिल ४०८
पितृश्राद्धेषु यो दद्याद्	वृ परा ७.८८
पितृष्वस्रभिगमनाद	शाता ५.२९
पितृसंयुक्तानि चेत्येकेषां	बौधा २.५.२१२
पितृस्नुषा सा स्वस्नुषा	कपिल १९१
पितृस्वसा च भगिनी	ब्र.या. ८.१४६
पितृस्थानस्य विप्रस्य	आंपू ९६७
पितृहा चेतानाहीनो	शाता २.२०
पितेव पालयेत्पुत्रान्	मनु ९.१०८
पितेव पालयेद् भृत्यान्	वृ हा ४.२१५
पितैव वा स्वयं पुत्रान्	नारद १४.४
पित्तात्तु दर्शनं पक्ति	या ३.७७
पित्रर्थं अर्घ्य पात्राणि	वृ परा ७.१९२
पित्रात्यन्तैककलहे	आंपू १०४७
पित्रादयस्त्रयश्चाऽऽदौ	आश्व १.९७
पित्रादयस्त्रयो यस्य	वृ परा ७.३३९
पित्रादीनां त्रयाणां च विप्र	कपिल ७३
पित्रादीनां त्रयाणाश्च क्रमोक्ते	कपिल ४०३
पित्रादीनां सगोत्रा ये	वृ प्रा ७.७६
पित्राद्याः पिण्डभाजः	शाता ६.४
पित्रापुत्रेणयन्मुखैराप्तैः	कपिल ६५२
पित्राप्रमात्रादाध	ब्र.या. ८.२२३
पित्राभर्त्रा सुतैर्वाऽपि	मनु ५.१४९
पित्रा यत्र सगोत्रत्वं	वृ परा ६.२३
पित्रार्जितेन वा कुर्यात्	व २.६.१२४
पित्राविवदमानश्च	मनु ३.१५९
पित्रे न दद्याच्छुल्कं	मनु ९.९३
पित्रे पितामहाय	शंख १३.१०
पित्रैव तु विभक्ता ये	नारद १४.१५
पित्रोः क्षयाहे संप्राप्ते	व्या २४७
पित्रोः प्रत्याद्भि	कपिल १७८
पित्रोर्दशाहमध्ये तु	व २.६.४५१
पित्रोर्मृताहः कथितो	आंपू ६०८
पित्रोर्मृताहं सततमपि	आंपू २७७
पित्रोः श्वसुरयोर्भर्तुरनुज्ञा	लोहि ५२८
पित्रोस्तु दशारात्रं स्यात्	व २.६.४४७
पित्रोस्तु सूतकं मातु	या ३.१९
पित्रोः स्वदितमित्येवं	औ ५.७१
पित्र्य प्रतिग्रह भोजनयोश्च	बौधा १.११.२७
पित्र्यं वा भजते शीलं	मनु १०.५९
पित्र्यमान्त्रानु द्रवण	कात्या २.१३
पित्र्यर्थ देवतार्थं च	व २.६.२९०
पित्र्यर्थे पायसं कुर्यान्न	ब्र.या. ४.१५७
पित्र्य यः पंक्तिमूर्द्धन्य	कात्या १७.१५
पित्र्य रात्र्यहनो मासः	मनु १.६६
पित्र्य स्वदितमित्येवं	मनु ३.२५४
पिप्पलस्य प्रबालानि	वृ हा ४.५४
पिप्पलीक्रमुकं चैव	औ ३.१४५
पिप्पली मरिचं चैव	शंख १४.२०
पिबत्यनेकतरसा पितृ	आंसू ५६३
पिबन्ति देहनिश्रावं	ब्र.या. २.१०५
पिबन्ति देहनिःश्रावं	बृ.या. ७.८९
पिबन्ति सर्वसत्वानि	वृ परा १०.३७१
पिबन्निवमहाह्लादमध्य	शाण्डि ४.२५
पिनेत्पात्रात्तरोद्विधो	व २.६.२१३
पिबेद्भोजनपात्रेण	शाण्डि ४.१४७
पिवत पतितं तोयं	पराशर ११.३७
पिवन्ति कपिलां यावताव	वृ.गौ. ९.१२

भ

भक्तानां पातकान्याशु शाण्डि ४.२१७
भक्तानां यद्धितं देव विष्णु म ६५
भक्तावकाशदातारः नारद १५.१८
भक्तावकाशाग्न्युदक या २.२७९
भक्तिगद्‌गदया वाचा स्तु बृ.गौ. १८.४२
भक्तिज्ञानक्रियावृद्धि शाण्डि ५.७
भक्ति सा सात्त्विकी वृ हा ५.८१
भक्तैस्सहाश्नतां तुष्टिर्न शाण्डि ४.२२८
भक्त्या चैताः प्रदातव्याः वृ परा ११.२३०
भक्त्या नीराजनं वृ हा ७.२९४
भक्त्या परमया युक्त इमां नारा ५.५३
भक्त्या पुलकितस्वाङ्ग शाण्डि ४.१७०
भक्त्या योऽभ्यर्चयेद्देवं वृ हा ५.७६
भक्त्या वै देवदेवेश वृ हा ७.३१६
भक्त्या सम्पूजयेद्देवं व २.६.२६३
भक्त्या सर्वं प्रदत्तं वृ परा ५.१७५
भक्त्यैकादशवस्त्राद्यैः वृ परा ११.१६८
भक्त्योपकल्पयेदेकं व्यास ३.४१
भक्षणीयं च यद्वस्तु वृ परा १०.१०२
भक्षणे चापि भक्ष्याणां कण्व ९८
भक्षणे प्रमादतोनीली आंगिरस १८
भक्षयन्नरके तिष्ठेत् वृ परा ६.३२६
भक्षयित्वा तु तद्‌ग्रास लघुयम ८
भक्षयित्वोपविष्टानां या २.१६३
भक्षयेद् यस्य नीलीन्तु आप ६.९
भक्षितं भगवत्पाद शाण्डि ४.१६५
भक्षिते मानुषे मांसे अ ७५
भक्ष्यं भक्ष्यविधौ प्रजा १५४
भक्ष्य भोज्यं च विविधं मनु ३.२२७
भक्ष्य भोज्यं तथा पेयं ब्र.या. ४.९०
भक्ष्यंभोज्यमया शैला बृ.गौ. १२.५२
भक्ष्यभोज्यादिकांश्चापि कण्व ६९०
भक्ष्यभोज्यापहरणे मनु ११.१६६
भक्ष्यभोज्यैः फलै कण्व ६६९
भक्ष्यभोज्योपदेशैश्च मनु ९.२६८
भक्ष्याः पंचनखाः शंख १७.२२
भक्ष्याः पंचनखाः या १.१७७
भक्ष्याभक्ष्ये तथा पेये दक्ष १.५
भक्ष्याः श्वाविड्गोधाश बौधा १.५.१५२
भक्ष्यास्तिलमयाः कार्या आंपू १०९८
भक्ष्यैर्वा यदि वा भोज्यैः नारद १३.६६
भगं ते वरुणो राजा या १.२८२
भगमिन्द्रश्च वायुश्च ब्र.या. १०.१४
भगर्क्षसंयुक्ता चैते वृ परा १०.२६९
भगवज्जन्मदिवसे वृ हा ९.१३९
भगवते श्रीमते चेत्येकार्थे वृ हा ३.१६७
भगवत्कर्मसिद्ध्यर्थं शाण्डि १.५५
भगवत्पादतोयेन मोक्ष शाण्डि ४.१२९
भगवत्पादपूजायां चरन् शाण्डि १.२९
भगवत्प्रापकैश्शुद्धै शाण्डि ४.३३
भगवत्सन्निधौ वापि वृ हा ३.२३०
भगवद्‌भक्तियुक्तेभ्यो दद्यात् शाण्डि ३.४१
भगवद्‌भुक्तमन्नाद्यम् शाण्डि ४.६२
भगवद्‌भुक्तशेषं यद्‌भुक्तं शाण्डि ४.१५१
भगवद्यागयोग्यं यत्त शाण्डि ४.१४४
भगवद्‌भक्ति दीप्ताग्नि वृ हा ८.२८१
भगवद्वाचक्रः प्रोक्तः बृ.या. २.१०३
भगवद्वासुदेवस्य पादा शाण्डि ५.५८
भगवन् केन दानेन अत्रिस १.३
भगवन् केन दानेन अत्रिस ६.२
भगवन् केन दानेन वृहस्पति २
भगवन् तव गायत्री बृ.गौ. १९.२४
भगवन तव भक्तस्य बृ.गौ. १५.१
भगवन् ! त्वत्प्रसादं तु बृ.गौ. १८.४५
भगवन्तं प्रपन्नोऽस्मि विष्णु म २८
भगवन्त मनुद्दिश्य वृ हा ५.१८
भगवन्! देवदेवश! पंचमी बृ.गौ. १८.१५
भगवन् ! ब्रह्मणा यत् वृ हा ५.१
भगवन् ब्राह्मणादीनामाचार वाधू २
भगवन्ब्रूहि तत्वेन व २.६.१

म

यन्विदं कारकं कुर्यात्	वृ परा ६.२५४
यं इदं धारयेद्विप्र	बृह १२.४८
यं कट्यां तारकावर्णी	वृ परा ४.८२
यं तु कर्मणि यस्मिन्	मनु १.२८
यं तु पश्येन्निधिं राजा	मनु ८.३८
यं दक्षिणस्थितं पिण्डं	आंपू ९८३
यः पठेत् स्वरहीनं	वृ परा ६.३७१
यः पठेद् विधिवत	वृ परा ६.३६९
यः पठेन्मामकं धर्म	बृ.गौ. २२.३२
यः परार्थेपहरति स्वां	नारद २.२०४
यः पश्येत् श्रृणु	वृ परा १२.१९१
यः पापात्मा येन सह प्रायश्चित	विष्णु ५४
यः पिता स च वै	वृ परा ६.२००
यः पिता स तु पुत्रः	वृ परा ६.१९१
यः प्रत्यवसितोविप्रः	यम ४८
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ६.८९
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३३
यः प्रयच्छति विप्राय	वृ.गौ. ७.३८
यः प्रवृत्ता श्रुतिं सम्यक्	वृ.गौ. ११.४
यः प्रहारं द्विजेन्द्राय	वृ.गौ. ४.४८
यं प्राप्य विन वर्तन्ते	बृ.या. २.१३५
यं ब्राह्मणस्तु शूद्रायां	मनु ९.१७८
यं मातापितरौ क्लेशं	मनु २.२२७
यं यज्ञसंघैस्तपसा	पराशर ३.४४
यं यं कामयते च्त्ति	वृ हा ३.२०१
यं यं कामयते च्त्ति	वृ हा ३.३६३
यं यं पश्यति चक्षुर्म्यां	वृ परा ४.९८
यं वदन्ति तमोभूता	मनु १२.११५
यं वाय्वात्मने गन्धान्	विश्वा ३.१८
यं हि व्रतानां वेदानां	बृ.या. ७.३२
यं हे त्वाहतिसूक्तेन	वृ हा ७.१३०
यमगीतं चात्र श्लोकं	व १.१९.३३
यमदीपं त्रयोदश्यां देतावित्र्य	ब्र.या. ९.५५
यम द्वारे पथे क्षेत्रे	ब्र.या. ११.२७
यमर्थी प्रतिभूर्दद्याद्	नारद २.१०४
यमर्थमभियुंजीत न तं	नारद १.४९
यमश्च धर्मराजश्च	वृ परा २.१९६
यमसूक्तं यमीं गाथां	या ३.२
यमसूक्तेन कुर्वीत	शाता ६.२२
यमः स्कन्दो नैर्ऋतश्च	वृ हा ४.१७१
यमान् सेवेत सततं	अत्रिस ४७
यमान्सेवेत सततं न	मनु ४.२०४
यमायः सानुगायाथ	वृ परा ७.३१५
यमाय सोमेति यमनैर्ऋतं	वृ हा ८.६७
यमायाथ च चित्राय	आश्व १.१५६
यमिद्धो न दहत्यग्निरापो	मनु ८.११५
यमेन पूजिता यान्ति	वृ.गौ. ५.८५
यमेव तु शुचिं विद्यान्नियतं	मनु २.११५
यमेव विधा शुचिमप्रबलं	व १.२.१५
यमेव ह्यतिवर्तेरन्नेते	नारद १६.१२
यमैश्च नियमैश्चैव	बृह ९.३५
यमोपि महिषारूढो	शाता २.१८
यमोवैस्वतो देवो	मनु ८.९२
यया कया च विधया	आंपू ६५
यया कया संख्याया	आंपू ६९२
यया रामेश्वरी तारा	ब्र.या. १०.७७
ययिच्चेत्पीटकंशत्रो	बार ९.४४
यरैभ्युपायैरेनांसि	मनु ११.२११
यवगोधूमजाः सर्वे	शंख १७.३४
यव पिष्टेन निर्वाप्य	वृ परा ११.९८
यवस तावदूढव्यो	दा १००
यवसन्नाववोटव्यो	लघुशंख ५१
यव सिद्धार्थकाश्चैव	ब्र.या. ८.१९५
यवाग्वाः पयसो वापि	आंसू २८५
य वाद्य संस्कृतान्नेन	वृ परा ७.७४
यवान् विधि तोपनोपयुंजान	व १.२७.१५
यवासंगुड़मेधाज्यनार्द्रकं	व २.६.३०२
यवीयाञ्ज्येष्ठभार्यायां	मनु ९.१२०
यवैर न्ववकीर्याथ भाजने	या १.२३०
यवैरमन्त्रकं नित्यं	लोहि १७

र

राजधर्म वर्णनम्	विष्णु ३
राजधर्म वर्णनम्	विष्णु ४
राजधर्मविधाने दण्ड वर्णनम्	विष्णु ५
राजधर्मान्प्रवक्ष्यामि	मनु ७.१
राजधर्मोयमित्येवं	वृ हा ४.२६२
राजनि प्रहरेद् यस्तु	नारद १६.२८
राजनि स्थाप्यते योर्घः	या २.२५४
राजन्नयनयोर्मध्यं	वृ.गौ. १९.४
राजन्यग्रहभुक्तौ तु ब्राह्मणस्य	कपिल ३३८
राजन्यवेश्ययोश्चापि	लोहि १८
राजन्यवैश्यावप्येवं	औ ६.३६
राजन्यवैश्यो तु मद्य	वृ हा ६.२७३
राजन्यश्चेद् ब्राह्मणी	व १.२१.५
राजन्येन ब्राहाण्यामुत्पन्न	व १.१८.३
राजपत्नी महाभागा	ब्र. प्र. ८.२९६
राजपत्न्यो ग्रासाच्छादनं	व १.१९.२१
राजपुत्रो न राज्याप्त्या	वृ परा ११.७
राजप्रतिग्रहात्सर्वे	ब्रह्मचर्य ४.५८
राजप्रतिग्रहो मध्वा	अ ७४
राजभि कृत (धृत) दंडास्तु	मनु ८.३१८
राजभिर्धृतदण्डास्तु	नारद १८.१०६
राजभिर्धृतदण्डास्तु	व १.१९.३०
राजमंत्री सदः कार्याणि	व १.१६.२
राजमहिष्याः पितृव्य	व १.१९.२०
राजमाषान् सूरांश्च	शंख १४.२१
राजराजार्च्चितो विप्रः	वृ.गौ. १७.१०
राजर्त्विग्दीक्षितानाञ्च	दक्ष ६.५
राजवार्त्तादि तेषान्तु	दक्ष ९.३७
राजसं तामसं चैव तज्ज्ञेयं	शाण्डि १.६४
राजसूयफलं प्राप्य	वृ.गौ. ९.७३
राजहोमी सहस्रं	वृ ३.१४२
राजा-ऋत्विकादि	विष्णु ३२
राजा कृत्वा पुरे स्थानं	या २.१८८
राजा च जांगलं पशाव्यं	विष्णु ३
राजा च प्रजाभ्य सुकृत	विष्णु ३
राजा च श्रोत्रियश्चैव	मनु ३.१२०
राजा चेत्तादृशीश्रुत्वा	लोहि ६७८
राजा तु धर्मेणानुशासयत्	व १.१.४३
राजा तु धार्मिकान् सम्यान्	नारद १.६८
राजा त्ववहित सर्वान्	नारद १८.५
राजा दहति दंडेन	वृहस्पति ५२
राजाद्यैर्दशभि मासै	आंगरिस ६८
राजानः क्षत्रियाश्चैव	मनु १२.४६
राजानंच विशं शूद्र	वृ हा ६.३५७
राजानं वा तथा वैश्यं	व २.६.४५९
राजानाश्चेन्नाभविष्यन्	नारद १८.१६
राजा न स्तेन मर्द्दीत	औ ८.१८
राजानाम चरत्येयष	नारद १८.२०
राजानुमतभावेन	व १.२.५३
राजानेनकृनस्मृतः	[illegible]र १.८.१२३
राजानो राजभृत्याश्च	औ ६.५६
राजन्तेवाभ्यराज्येभ्यः	या १.१३०
राजान्नं तेज आदत्ते	आप ९.२७
राजान्नं तेज आदत्ते	मनु ४.२१८
राजान्नं तेज आदत्ते	वृ.गौ. ११.२१
राजान्नं हरते तेजः	अत्रिस ३०१
राजान्नं हरते तेजः	आंगिरस ७२
राजा पिता च माता राजा	शंखलि २६
राजा प्रभुर्भूमिदाने तत्सम्	कपिल ६४३
राजा भवत्यनेनाश्च	बौधा १.१०.३१
राजा भवत्यनेनास्तु	मनु ८.१९
राजार्थे ब्राह्मणार्थे	व १.२०.३६
राजालब्ध्वा निधिं	या २.३५
राजा वा राजपुत्रो वा	पराशर ९.५३
राजा व राजपुत्रो वा	लघुयम ५६
राजा वा राजपुत्रो वा	लघुशंख ५८
राजा वा राजमान्यो	दा १०९
राजाश्रयेण यो मर्त्यो	वाधू १७३
राजा सपुरुषः सभ्याः	मनु १.१५
राजा स्तेनेन गन्तव्यो	नारद १८.१०४

व

वस्तुतोत्र पुनर्वाच्मि	आंपू १०३९
वस्तुभोगतया विष्णो	वृ हा ८.१६४
वस्त्र अलंकार रत्नानि	व्यास २.२६
वस्त्रगोभूमिदानेन धन	शाण्डि १.९१
वस्त्र गोमिथुने दत्वा	नारद १३.४१
वस्त्र चतुर्गुणीकृत्य	वाधू ६१
वस्त्र तु मलिनं त्यक्त्वा	अत्रि ५.६९
वस्त्रञ्चैवोपवीतञ्च	वृ हा ४.८५
वस्त्रदाता सुवेशः स्याद्	संवर्त ५२
वस्त्रनिष्पीडनं तोयं	बृ.या. ७.४४
वस्त्रनिष्पीडनाम्भो	व्यास ३.२०
वस्त्र पुष्प मणि स्वर्ण	वृ हा ६.२६
वस्त्रभूषणयोर्दाने समनुच्चारणे	कपिल ८५
वस्त्र पत्रमलंकारं	मनु ९.२१९
वस्त्रयुग्मं ततोदद्यात्	व्या १५०
वस्त्र संस्पर्शेन तस्य	वृ परा ८.३१३
वस्त्रहारी भवेत कुष्ठी	शाता ४.२३
वस्त्रहीनेन यः	ब्र.या. ८.२५०
वस्त्रादीनि तथा अन्यत्र	आश्व ११.६
वस्त्राद्युत् त्रासते गौश्च	वृ परा ८.१५६
वस्त्रालङ्कारपुष्पादिधूप	व २.४.६९
वस्त्राङ्कारभूषाद्यैः	व २.४.१२४
वस्त्रालङ्कारयुक्तेन	व २.७.१०१
वस्त्रैराभरणैर्दिव्यैर	व २.७.८७
वहि कलाभ्यां दृक्पालं	भार ६.९४
वहिद्यासाद्धार्य परिस्तीर्या	व २.६.२८३
वहि प्रदक्षिणं कुर्यात्	ब्र.या. ३.६८
वहि प्रदक्षिणं कृत्वा	ब्र.या. ४.१४१
वहिर्मुखानि सर्व्वाणि	दक्ष ७.१९
वहिष्कृतश्च संत्यक्त	आंपू १०६४
वहि सन्ध्यामुपासीत	वृ परा ६.१४५
वहि सन्ध्याः शतगुणं	वृ हा ५.२८८
वहूनां तु प्रोक्षणम्	बौधा १.६.२६
वह्नि जिह्वा भगवतो	वृ हा ७.१४
वह्नि गार्हस्थ्यदं दिव्यं	लोहि १४०
वह्नि सीतामखंचापि	वृ परा १.५२
वह्नौ च स्थाण्डिले	वृ हा ३.१२६
वह्वच भोजयेच्छ्राद्धे	व्या १८४
वह्वचं तु परित्यज्य	व्या १८५
वह्वः तु न जानन्ति	वृ.गौ. ४.४१
वह्वर्चं भोजयेच्छ्राद्धे	व्या १८३
वह्वर्चेन विना श्राद्ध	व्या १८६
वह्वृचस्तर्पणं कुर्य्याज्जले	आश्व १.१०४
वह्वृचो ब्रह्मचारी	आश्व २४.८
वाके प्रेणी ततोजप्त्वा	ब्र.या. ८.३१९
वाकोवाक्यं पुराणञ्च	या १.४५
वाक्यापारुष्यं तथैवोक्तं	नारद १.१९
वाक्संबन्ध एतदेव	व १.२१.८
वागक्षीःकर्णनासादि सर्वा	कपिल ८०७
वागदंडोथ मनोदंड	मनु १२.१०
वाग्दण्डं प्रथमं कुर्याद्	मनु ८.१२९
वाग्दुष्टः बालदमकौ	वृ परा ७.१३
वाग्दुष्टात्तरस्कराच्चैव	मनु ८.३४५
वाग्दूषितामविज्ञातं	व्यास ३.६०
वाग्दैवत्यैश्च चरुभिः	मनु ८.१०५
वाग्भवं शक्तिबीजं च	विश्वा ६.४५
वाग्यतः परिस्तीर्य्य	ब्र.या. ८.२४९
वाग्यतः शेषमश्नीयाद्	बृह ९.१४२
वाग्यतः शेषमश्नीयाद	ब्र.या. २.१७८
वाग्यतो न्यस्तपात्रस्त्रीन्	वृ परा ६.१३३
वाङ्मआस्येनसोश्चक्षु	ब्र.या. ८.२११
वाङ्मनो जलशौचानि	वृ परा ६.२१६
वाङ्मयस्य तु सर्वस्य	बृ.या. २.१२५
वाचं वा को विजानाति	या ३.१५०
वाचं विसृजतेवाद्यः	ब्र.या. ८.४७
वाचयेज्जलमादाय	वृ परा १०.३३५
वाचयेत् परिपूर्णं	वृ परा ७.२०२
वाचा दत्ता मनोदत्ता	का ६
वाचाऽभिघुष्टं गणान्नं	व १.१४.४
वाचाऽभिशक्तो गोसेवा	व १.२२.२

विवाहे चोपनयने	व्या १८
विवाहे नियतं नान्दी	आश्व १८.३
विवाहे वितते तंत्रे	अत्रि ५.४७
विवाहे वितते यज्ञे	आप ७.९
विवाहोत्सवयज्ञेषु	आप १०.१५
विवाहोत्सवयज्ञेषु	आश्व १५.७२
विवाहोत्सवयज्ञेषु	पराशर ३.३४
विवाहोत्सव यज्ञेषु	वृ परा ८.४६
विवाहोत्सवऽयज्ञेषु	वृ परा ८.३०६
विवाहोत्सव यज्ञेष्वन्	अत्रिस ९८
विवाहो मंत्रतस्तस्या	व्यास १.१६
विविधंपरमं भूप	वृ.गौ. ६.३५
विविध वाग्वञ्चनार्थं	वृ परा १.३३
विवधाश्चैव संपीडा	मनु १२.७६
विवृणोति च मन्त्रार्थां	बृ.गौ. १४.६०
विवृद्धा यत्र पुरतः	प्रजा १६०
विशनात् सर्वभूतानां	बृह ९.८१
विशालवक्षसं रक्तहस्त	वृ हा ३.२५६
विशिराः पुरुषः कार्यो	नारद १८.१०३
विशिष्टकुलसंजातसंस्कारै	शाण्डि १.९४
विशिष्टभोज्यमायात्	शाण्डि ४.१३३
विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं	मनु ९.३४
विशिष्टं ज्ञान सम्पन्नं	व २.६.४५८
विशिष्टं वस्तु संपाद्य	शाण्डि ४.५१
विशिष्टं वैष्णवं नाम	वृ परा २.१०४
विशिष्टान् वैष्णवान्	वृ हा ६.७१
विशिष्टो वैष्ववोविप्रो	व २.६.१९५
विशीर्णानि सरंध्राणि	भार १४.१६
विशील कामवृत्तो वा	मनु ५४,१५४
विशुद्धकोष्ठवृद्धाग्नि	शाण्डि ४.१२५
विशुद्धतीरभूभागे	शाण्डि २.२२
विशुद्धदन्तवदनो	शाण्डि ३.६०
विशुद्धवदनो मन्त्री	शाण्डि ४.१६३
विशुद्धागमसंप्राप्त धरर्णी	कपिल ६४४
विशुद्धान्वयसंजातो	वृ परा ६.३१३
विशुद्धा विजितक्रोधा	व २.५.८०
विशुद्धैरिन्द्रियैरेव बोद्धुं	शाण्डि ५.२०
विशेषः कोऽपि भूपश्च	आंपू २९२
विशेषण तु विद्धांसः	कपिल ५११
विशेषतः क्रतुषु च निरोधे	कपिल ८३३
विशेषतीर्थ सर्वेषां	बृ.गौ. २०.७
विशेषपतनीयानि	वृ हा ६.१८८
विशेषपूज्यप्रतिपादनाय	वृ परा १०.३४२
विशेषं परिपप्रच्छुः	लोहि २
विशेषस्तु पुनर्ज्ञेयो	शाता ६.२८
विशेषात्कर्मकालेषु	कण्व ४७४
विशेषाद् वुधयुक्तेषु	वृ परा १०.३५२
विशेषानयनंकार्या पश्चात्	कपिल ५७८
विशेषेण प्रकर्तव्या	कण्व ६७२
विशेषेण प्रदत्ताश्चेत्	कपिल ४६५
विशेषेण ब्रह्ममेधा	कण्व ३९०
विशेषेण ब्रह्मविद्या	कण्व ४८२
विशेषेण श्राद्धदिने	कपिल ५२
विशेषेण समाख्यातः	कपिल ७३२
विशेषेणाधुना प्रोक्ता	आंपू ९३७
विश्रामयति यो विप्रं	वृ.दौ. ७.२६
विश्रामासनं संस्थाप्य	ब्र.या. ८.२४८
विश्वन्याप्यचिदात्मना	विश्वा ६.४९
विश्वरूपं नमस्कृत्य	आंउ १.१
विश्वरूपा विशेषेण	भार ६.५९
विश्वरूपो मणिर्यद्वत	वृ परा १२.३२२
विश्वस्तया धरादान्	कपिल ७५४
विश्वास्तया समासीत	कपिल ६२१
विश्वस्तया समासीनो	कपिल ६२०
विश्वस्ता प्राप्य भवति	कपिल ६३६
विश्वस्तायास्सनाथायाः	लोहि ४८५
विश्वस्थान प्रशस्तेति	भार १५.२५
विश्वस्य जगतो मित्रं	बृ.या. ४.५
विश्वाहंसाममित्रत्वात्	भार १८.४७
विश्वानभक्तिभाजांत्तु	भार १०.३

वेदाश्छन्दांसि सर्वाणि	कात्या १०.८
वेदाः सहांगैस्सपुराण	वृ परा ६.२०९
वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च	मनु २.९७
वेदाहमेतं पुरुषं	शंख ७.२२
वेदिका पादमूले तु	वृ परा ११.२१८
वेदी च कोटिहोमे स्यात्	वृ परा ११.२७९
वेदेनैव हरिं तस्माद्	वृ हा ७.६१
वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति	अत्रिस ३८२
वेदैः शास्त्रैः सविज्ञानैः	या ३.१७०
वेदैश्च ऋषिभिर्गीतं	अत्रिस ३५३
वेदोक्तमन्त्रतन्त्राणि	लोहि १४
वेदोक्तमन्त्रैरखिलैः	लोहि १५
वेदोक्तवायुर्मर्त्यानामाशिष	मनु १.८४
वेदोक्तविधिना विष्णु	वृ हा ८.१९१
वेदोक्तेनैव मार्गेण	कपिल ८९०
वेदोक्तेनैव मार्गेण	बृ.गौ. २१.२७
वेदोक्तै र्विविधैर्मन्त्रैः	वृ.गौ. १०.५६
वेदोऽखिलो धर्ममूलं	मनु २.६
वेदोच्चारणसामर्थ्य	आंपू ८३५
वेदोदितं स्वकं कर्म	औ ३.८७
वेदोदितं स्वकं कर्म	व १.२७.८
वेदोदितानां नित्यानां	मनु ११.२०४
वेदोद्धृतपवित्र मंत्र	विष्णु ५६
वेदोऽधीतो ददच्छुद्धिं	वृह ११.३०
वेदोपकण्ठनिलयं	ब्र.या. १.१
वेदोपकरणे चैव	मनु २.१०५
वेद्यर्थं पृथिवी सृष्टा	वृ.गौ. १५.६३
वेद्या दक्षिणतः कुण्डं	वृ हा ६.२०
वेद्याद्यैः ब्रह्मणस्पत्यै	वृ हा ५.५०८
वेद्याश्च दक्षिणे भागे	वृ हा ७.२४७
वेधसो वा राजा श्रेयान्	व १.१६.१९
वेधाद्वहि प्रतीकारी	वृ परा ५.६७
वेनो विनष्टोऽविनयान्	मनु ७.४१
वेशन्ने दीर्घिकायां	कण्व ५५८
वेश्मद्वारे निवासेषु	पराशर ९.४१
वेश्मन्यज्ञातचांडालो	वृ परा ८.२०६
वेश्याञ्च ब्राह्मणोगत्वा	संवर्त १६४
वेश्याभिगमने पापं	लघुयम ३८
वैकल्यं स्पष्टमैवैतत्	कपिल ३४७
वैकुण्ठतर्पणं कुर्यात्	वृ हा ६.१२२
वैकुण्ठतर्पणं कुर्य्याद्	वृ हा ५.१३४
वैकुण्ठपार्षदं हुत्वा	वृ हा ५.३५८
वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ५.४९६
वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ६.१२७
वैकुण्ठ पार्षदं हुत्वा	वृ हा ७.३०१
वैकुण्ठ पार्षदं होमं	वृ हा ५.१३२
वैकुण्ठं पार्षदञ्चैव	वृ हा ६.४२५
वैकुण्ठं पार्षदं हुत्वा	वृ हा ७.२५१
वैखानसा कथं ब्रू युः	वृ.गौ. ८.८५
वैखानसेन केचित्तु	औसं ४६
वैखानसेस्तु ये विप्रा	वृ हा ५.७४
वैश्नानसैकदेशापि	कण्व ४६०
वैणञ्च रोमशञ्चैव	वृ हा ७.२११
वैणवं दण्डं धारयेत	बौधा १.३.३
वैणवं दण्डं धारयेत्	बौधा २.३.३३
वैणवं दण्डं धारयेद्	व १.१२.३४
वैणवानां गोमयेन	बौधा १.५.३८
वैणवीं धारयेद्यष्टिं	मनु ४.३६
वैणाश्च वृद्धाश्च	वृ परा ६.२७७
वैतानिकं च जुहुयाद्	मनु ६.९
वैतानिकस्थलं त्यक्त्वा	कण्व ३००
वैदिकञ्चैव यद्धव्यं	वृ.गौ. ८.९९
वैदिकनै व विधिना	वृ हा७.२३८
वैदिकं च तथा सर्वं	बृ.य. ५.१५
वैदिकं तु जपं कुर्यात्	वृ परा ४.१०६
वैदिकं कर्मयोगश्च	वृ परा १२.२८५
वैदिकानामयोःस्याद	कपिल ११६
वैदिकानि च नित्यानि	औ ९.६७
वैदिकान्यपि कर्माणि	कपिल ३२
वैदिके आगमे वापि	ब्र.या. २.११४

शन्नो देवी रवे सूनुं	वृ परा ११.६३
शन्नो देवी समारभ्य	विश्वा ४.१४
शन्नो देवीस्त्वापो वा	नारा ६.६
शपत्येनं प्रदातरं	आंपू ७३८
शपथं नाचरेत्पादं संस्पृश्य	शाण्डि ५.४२
शपथानन्तरं कालान्	आंपू ३८९
शपथा ह्यृषिदेवानां	नारद २.२१८
शपथैरतुलैर्घोरै राज	लोहि ६५
शप्तो यदि भवेदेष राज्यं	नारा ७.१४
शबराश्च पुलिन्दाश्च	वृ परा ८.३२१
शब्दब्रह्मात् परं ब्रह्मं	बृ.या. २.४९
शब्दः स्पूर्शश्च रूपं	या ३.१८०
शब्दः स्पर्शश्च रूपं	मनु १२.९८
शब्दस्पर्शादिभिश्चैव	बृ.या. २.५६
शब्दादीनां च पञ्चानाम्	बृह ९.१३४
शब्दानजनयत्लेव	आंपू २४९
शब्दे छन्दसि कल्पे च	आंउ ५.४
शब्देनान्नरसं क्षीरं	वृ हा ५.२७१
शब्देनापोशनं पीत्वा	व्या २३९
शब्दो रूपं तथा स्पर्शो	शंख ७.२५
शं न आपस्तु वै मंत्र	वृ परा २.८६
शमलप्रसवे स्पृष्टौ	भार १८.८१
शमीपर्ण तिलै मिश्रितोयैः	व २.६.३२६
शमीपर्णैः तिलै स्तोयैः	व २.६.३३८
शमीपलाशशाखाभ्यां	कात्या २३.११
शमी पापोप शान्त्यर्थं	वृ परा ११.४८
शम्भवायमः पूर्वं	ब्र.या. १०.४८
शम्भवायेति जुहुयात्	वृ परा ११.१५१
शम्भुना लोकनाथेन	आंपू ५८९
सम्भुः पुण्यशिवश्री	कण्व ५६
शम्भुं रविमुमां चन्द्र	वृ परा ११.४३
शम्या वेधाद्वहि	वृ परा ५.७३
शयनं च यथाकाले	आश्व १.५
शयन विचार वर्णन	विष्णु ६९
शयनाद्यनेक विवेक वर्णन	विष्णु ७०
शयनासनयानानां	शंख १६.७
शयनासन संसर्ग	व्यास ३.४८
शयानः पादुकस्थश्चे	भार ४.१३
शयान प्रोष्ठपादौ वा	व २.३.१६८
शयानः प्रौढपादश्च	औ ३.६९
शयानः प्रौढपादश्च	मनु ४.११२
शयिते शयिता सुप्ते	लोहि ६६०
शयीत शुभशय्यायां	वृ हा ५.३००
शय्या च पादुके विद्यां	अ १४३
शय्या च भोजनञ्चैव	अ ३९
शय्या तप्तायसमयी	वृ हा ६.१६३
शय्याभार्या शिशुः वस्त्र	शंख १६.१५
शय्यां गृहान् कुशान्	मनु ४.२५०
शय्यासन दानाद्	व १.२९.१२
शय्यासनमलंकारं कामं	मनु ९.१७
शय्यासनेऽध्याचरिते	मनु २.११९
शय्यासूक्तान्तमाज्येन	वृ हा ८.२५७
शरः क्षत्रियया ग्राह्य	मनु ३.४४
शरच्छशाकं प्रभम् अश्वक्तं	वृहा ३.३८१
शरच्छ्रीको मङ्गलको	आंपू ५१४
शरणागतघाती च कूट	बृ.या. ८.३९
शरणागत बाल स्त्री	या ३.२९८
शरणागत परित्यज्य	मनु ११.१९९
शरणागतं स्वामिनं	वृ हा ६.१७१
शरण्यः पुरुषस्तीथमन्नं	बृ.गौ. २०.११
शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु	नारद १९.३३
शरद् वसन्तयो केचिन्	कात्या २६.९
शरावान् पंच निक्षिप्य	व २.३.२४
शरावैः द्रव्य सम्पूर्णे	वृ हा ५.११७
शरीरकर्षणात्प्राणा	मनु ७.११२
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य	या १.९८
शरीरजैः कर्मदोषैर्याति	मनु १२.९
शरीरपरितापेन	व १.२०.५२
शरीरं चैव वाचं च	मनु २.१९२
शरीरं चैव विश्वं च	बृ.या. २.११८

शृंगभृंगे त्वस्थिभंगे	अंगिरस ३०
शृंगभृंगेऽस्थिभंगे च	पराशर ९.१९
शृंगङ्कऽस्थिभङ्गे च	आंउ १०.११
शृंगभृंगेस्थिभंगे	आप १.२८
शृंङ्गमध्ये तथा ब्रह्मा	वृ.गौ. १०.४५
शृंगाग्रे कपिलायास्तु	वृ.गौ. ९.३४
शृंगाग्रे सर्वतीर्थानि	वृ परा ५.३५
शृंगि च हते दद्याद्	शाता ६.३५
शृंगिणा शंकरद्रोही	शाता ६.१२
शृंगिबेरं कुलुत्यं	शाण्डि ३.११५
शृंगे च कृष्णागरुदार	वृ परा १०.७६
शृंगे हेममये तस्य	वृ परा १०.१२६
शृणु गोकर्णमात्रस्य	वृ.गौ. ६.१११
शृणु देवि धरे धर्मा	विष्णु १.६५
शृणु धर्मविदां श्रेष्ठ	वृ.गौ. ७.५
शृणुध्वमृषम सर्वे	व २.६.२
शृणु पञ्च महायज्ञान्	वृ.गौ. ८.८
शृणु पाण्डव तत्वेन	वृ.गौ. ८.२०
शृणु पाण्डवः तत्त्वेन	वृ,गौ. ९.६
शृणु पाण्डव तत्तवेन	वृ.गौ. १६.२
शृणु पाण्डव तत्सर्व	वृ.गौ.८.८६
शृणु पाण्डव तत्सर्वं	बृ.गौ. २१.२
शृणु पाण्डव यत्नेन	वृ.गौ. २.२
शृणु पाण्डव सत्य मे	बृ.गौ. १८.२
शृणु पुत्र। प्रवक्ष्येऽहं	पराशक १.१९
शृणु मे विस्तरेणेह नारायण	नारा ५.३१
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा १.७
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा ३.२
शृणु राजन् यथा न्यायम्	वृ.गौ. ३.१०
शृणु राजन् यथातत्वम्	वृ.गौ. ४.६
शृणु राजन् प्रवक्ष्यामि	वृ हा ७.३
शृणु राजन् यथा तत्वम्	वृ.गौ. ५.१०
शृणु राजन् महत् पुण्य	बृ.गौ. १५.११
शृणु राजन् यथातथ्यं	बृ.गौ. १८.४७
शृणु राजन् यथापूर्वं	बृ.गौ. १८.१२
शृणुष्व राजन् विषुवे	बृ.गौ. १९.३
शृणु राजन् समासेन	वृ.गौ. १२.२
शृणु वर्णक्रमेण एवं	वृ.गौ. २.१५
शृणुष्व अवहिते राजन्	वृ. गौ.६.५
शृणुष्व भो इदं विप्र	आउं ३.१०
शृणुष्वावहितोराज	वृ.गौ. ८.७४
शृण्वन् शून्येषु	वृ परा ८.१५२
शृण्वन् श्रोत्रसुखं नादं	शाण्डि ५.५२
शृतिस्मत्युक्त कर्माणि	भार १८.४२
शेन्ति मुठहास तलं	व २.६.५२५
शेषक्रियायां लोकोऽनुरोध	बौधा १.१३१
शेषंज पद्मयोनिश्च	वृ हा ३.३६६
शेष भूतश्च जीवस्य	वृ हा ७.२२
शेषं दंपतीभुंजीयाताम्	व १.११.८
शेषमन्नं यथाकामं	औ ३.९२
शेषाहिफणरत्नांशु द	विष्णु १.४१
शेषेणैव भवेच्छुद्धिरहः	औ ६.२०
शैलांश्चैव स्थितान्	वृ.गौ. ८.५६
शैलूषशौण्डिकान्नद्धोन्	व्यास ३.४६
शैलूषान्नन्तु पापान्नं	वृ.गौ. ११.१६
शैल बौद्धस्कान्द शाक्त	वृ हा ८.१४२
शैव पाषाण्ड पतितै	वृ हा ८.१२८
शोकाक्रान्तोऽथवा श्रान्तः	अत्रिस ६४
शोचन्ति जामयो यत्र	मनु ३.५७
शोचं मंगल मायासा	अत्रिस ३३
शोणितशुक्रसंभवः	व १.१५.१
शोणितं यावतः पांसून्	मनु ४.१६८
शोणितं यावतः पांसून्	मनु ११.२०८
शोणितेन विना दुःखं	या २.२२१
शोधयित्वा तु पात्राणि	व्यास २.२३
शोभते दक्षिणां गत्वा	औ ५.१३
शोभनान् संभृतान्	वृ परा १०.१८
शोभितं पुष्पमालाभि	वृ परा १०.१६२
शोषयित्वार्कतापेन	पराशर ७.३१
शौचक्रमश्चाधतथा	भार ३.२

ष

षट्सहस्रं जपित्वा	व २.२.१३	षड्रात्रं वा त्रिरात्रं वा	लघुयम ३
षट्स्वेतेषु हरे सम्यग्	वृ परा ४.११८	षड्रात्रेणाथवा सप्त	औ ६.४३
षडक्षरविधानेन	वृ हा ७.९३	षड्वलामूर्धि विन्यस्य	ब्र.या. ८.२७८
षडक्षरेण जुहुयादाज्यं	वृ हा २.१६	षड्विंशत्यग्गुलैर्हस्तः	भार २.६०
षडक्षरेण मंत्रेण	व २.२.१२	षड्विधस्तस्य तु बुधैर्दाना	नारद ९.३
षडक्षरेण मंत्रेण	व २.२.२५	षड्विधा ह्याततायिन	व १.३.१७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृ हा ५.४८७	षड्विधे क्रमशस्त्रीणि	विश्वा ४.१७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृहा ५.४७७	षण्डस्य कुलटायाश्च	शंख १७.३७
षडक्षरेण मंत्रेण	वृ हा ५.४३४	षण्णां तु कर्मणामस्य	मनु १०.७६
षडक्षरेण साहस्रं तिलैर्वा	वृ हा ५.४३९	षण्णामेषां तु पूर्वेषां	मनु १२.८६
षडंग भवन्ति ऋत्विग्	व १.११.१	षण्णां षण्णां क्रमेणैव	अत्रिस ३२
षडंगन्यासमित्युक्तं	भार ६.९५	षण्मात्रिकं गोमूत्र	देवल ६५
षडंगन्यासमित्युक्तं	भार ६.९२	षण्मासमध्यप्राप्तेषु	कण्व ६८२
षडंगमपियोऽधीते	ब्र.या. १.३९	षण्मासाच्चाब्दिकं यच्च	अ ११
षडंगविच्चतुर्वेदी	वृ.गौ. ७.१०९	षण्मासानथयो भुङ्क्ते	आंउ ८.८
षडंगवित् त्रिसुपर्णो	शंख १४.५	षण्मासानिति मौदगल्य	बौधा २.२.६७
षडंग षट्पदं वर्णं	बृह ११.१४	षण्मासान् केचिदिच्छन्ति	वृ परा ८.२५०
षडंग सहितोवेद सर्व	ब्र.या. १.४०	षण्मासांनछागमांसेन	मनु ३.२६९
षडंगुलघटचापे मकरे	भार २.४१	षण्मासे तु गते कार्या	वृ परा ८.५४
षडंगेषु च विन्यस्य	वृ हा ३.३८८	षष्टिं वर्ष सहस्राणि	वृ हा ५.२२४
षडशीतिसहस्रणि	वृ.गौ. ५.११	षष्टिंवर्णात्मकं मन्त्र	विश्वा ३.५६
षडशीत्यां व्यतीतायां	आंपू ६४७	षष्टिवर्ष सहस्रं स	वृ हा ५.३६३
षडाधारेषु षट्कुक्षि	विश्वा १.४१	षष्टिवर्ष सहस्राणि	वृहस्पति २४
षडानुपूर्वा विप्रस्य	मनु ३.२३	षडशीति सहस्राणां	वृहस्पति ३२
षडाहुतिकमन्येन जुहुयाद्	कात्या १९.१५	षष्टिवर्ष सहस्राणि	वृ हा ५.४५०
षडेते पुरुषोजहाद्	ब्र.या. १२.१७	षष्टिवर्षात्परं तासामनाथानां	कपिल ९५७
षड्गवं तु त्रिपादोक्तं	अत्रिस २२२	षष्ठकाले तु योऽश्नाति	वृ.गौ. ७.९८
षड्दैवत्यस्तु दर्शः	आंपू ६६२	षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं	मनु ९.१६४
षड्दैवत्यानि कानि	आंपू ६६१	षष्ठान्नकालता मांस	मनु ११.२०१
षड्भागभृतो राजा	बौधा १.१०.१	षष्ठान्नकालमासं	औ ९.७१
षड्भागभृतो राजा	बौधा १.१२.४	,षष्ठिघ्न सोऽपि कालज्ञैः	वृ परा १२.३६३
षड्भागो द्वादशश्चैव	अत्रिस १६९	षष्ठिप्रस्थ तिलानां च	ब्र.या. ११.३७
षड्भिराधैर्हुनेदन्नं इति	विश्वा ८.४४	षष्ठे अन्न ग्रासनं	शंख २.५
षड्भ्योऽन्नमन्वहं	व्यास ३.३४	षष्ठे अष्टमे वा	शंख २.२
षड्रात्रं नवरात्रं च	वृ परा ८.२५	षष्ठे च सप्तमे चैव	दक्ष २.५

स सर्वपापान्निर्मुक्ताः	भार ६.१७१
स सर्वपापमुक्तःस्यात्	विश्वा २.३९
स सर्ववेदयज्ञौध	कण्व ३९८
ससहायस्सावकाशः	शाण्डि ५.४५
स साक्षान्मुनिभिः	वृ परा ६.३२७
स सात्त्विक शमयुत	वृ हा ६.१५८
स सुरां वै पिवेद् व्यक्तां	वृ हा ५.२७०
ससुवर्णगुहा तेन	व १.२८.२१
ससूत्रवस्त्रान् सच्छिद्रान्	नारा ६.२
स सूर्ये ज्योतिरित्युक्तं	बृह ९.१०७
स स्नातः सर्वतीर्थेषु	बृ.या. ७.१७
स स्नातः सर्वतीर्थेषु	वृ हा ५.१८२
सस्यभागः प्रदातव्यो	वृ परा ५.१५०
सस्यान्ते नवसस्येष्टया	मनु ४.२६
सस्योपरि न्यसेत	शाता ५.१७
स स्वर्गलोके ऋधित्वा	वृ.गौ. २.३१
स स्वीकार्यो हि निखिलैः	कपिल ५३४
स स्वीकृतः श्राद्धतिथि	आंपू १०४६
सह कमण्डलुनोत्पन्न	बौधा १.४.२१
सहगोत्रजा ब्राह्मणानां	व्या ७०
सहपिण्डक्रियायां तु	मनु ३.२४८
सह प्रतिष्ठायाभिपदे	भार १५.८४
सह वापऽपि व्रजेद्युक्तः	मनु ७.२०६
सह वै देहनाच्चेत्या	भार १५.६
सह सर्वाः समुत्पन्नाः	मनु ७.२१४
सहसा क्रियते कर्म	नारद १५.१
सहस्रकरपन्नेत्रः सूर्य	बृह ९.१९३
सहस्रकरपन्मूर्ति	बृह ९.८५
सहस्रकर वद् भ्राजन्	वृ परा ११.१३२
सहस्रकलशस्नानं	नारा ६.१
सहस्रकलशस्नानं	नारा ८.११
सहस्रकलशानां तु स्थापनं	नारा ५.३०
सहस्र किरणं शीशं	वृ हा ७.१५९
सहस्रकृत्वः सावित्री	वृ.गौ. ८.४५
सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य	मनु २.७९
सहस्रच्छिद्रसंकीर्ण	बृह ९.९५
सहस्रजप्ता कुंमांभ सेवन	भार ९.२८
सहस्रदलपङ्कजे सफला	विश्वा १.१
सहस्रदलमध्यस्था विश्वा	१.४२
सहस्रदः सहस्राद्यो ब्रह्म	लोहि ५५३
सहस्रनामपठनं कुर्याद्	व २.७.६९
सहस्रनामभि कृत्वा	वृ हा ५.३१७
सहस्रनामभि विष्णो	वृ हा ५.१५५
सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.१७३
सहस्रनामभिःस्तुत्वा	व २.३.३
सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.३७०
सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.४९१
सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ५.५२५
सहस्रनामभि स्तुत्वा	वृ हा ७.१४८
सहस्रन्तु जपेन् मंत्र	वृ हा ३.२८४
सहस्रपरमां देवी	अत्रि २.१२
सहस्रपरमां देवीं	कण्व २६७
सहस्रपरमां देवीं	ल व्यास १.३१
सहस्र परमां देवी	ल हा ४.४८
सहस्र परमां देवीं	व १.२६.१६
सहस्रपरमां देवीं	श्वा ७.३
सहस्रपरमां नित्यां	भार ७.१
सहस्रपोषं लभते	भार ९.२५
सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा	वृ हा १.१४
सहस्रं अभिषेकं च	वृ हा ६.४०८
सहस्रं जुहुयात् नित्यं	वृ हा ३.१४५
सहस्रं जुहुयाद् वह्नौ	वृ हा ७.२८०
सहस्रं दक्षिणा ऋषभे	व १.२४.८
सहस्रं परमां देवीम्	वृ.गौ. ४.३२
सहस्रं ब्राह्मणो दण्डं	मनु ८.३८३
सहस्रं ब्राह्मणो दंड्यो	मनु ८.३७८
सहस्रं मूलमंत्रेण	वृ हा ५.४२३
सहस्रं मूलमंत्रेण	वृ हा ५.५५४
सहस्रं विभवे कुर्याद्	कण्व ७२०
सहस्रं शतवारं वा	वृ हा ५.३१३

ह

